भास्कर 1/8/25 पेज 17

**पहल** • कृषि विज्ञान केंद्र लादा के कृषि वैज्ञानिक की ओर से यंत्र से किसानों की खेत में किया गया प्रत्यक्षण

# हरिपुर गांव में कृषि वैज्ञानिकों ने भिंडी तोड़ने वाले यंत्र के प्रयोग को लेकर किसानों को दिया प्रशिक्षण, अब समय की होगी बचत

भास्कर न्यूज, सिंघिय/ रोसड़ा

कृषि विज्ञान केंद्र लादा के कृषि वैज्ञानिक के तत्वाधान में रोसड़ा प्रखंड के हरिपुर गांव में किसानों की खेतों में गुरुवार को भिंडी को काटने की यंत्र से प्रत्यक्षण बचाव को लेकर किसानों को जानकारी दी गई। केंद्र के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ. सुनीता कुशवाहा ने बताया कि इस यंत्र द्वारा भिंडी की तुड़ाई के समय में हाथ में होने वाली खुजली एवं त्वचा को होने वाले नुकसान से किसानों को बचाया जा सकता है । जब भिंडी की तुड़ाई की जाती है, तो उसे तोड़ने के क्रम में हाथों में काफी खुजली होती है । जिससे हाथों को नुकसान पहुंचाता है। त्वचा संबंधी कई समस्याएं हो जाती हैं। साथ ही साथ उसमें काफी श्रम भी करना पड़ता है । इस यंत्र के द्वारा खड़े होकर आराम से भिंडी की कटाई की जा सकती है । जिससे की भिंडी का पत्ता या पेड़ सीधे हाथ के संपर्क में नहीं आएगा और हाथ की त्वचा एवं हाथ सुरक्षित रहेंगे। विशेष कर पोषण वाटिका में लगने वाली सब्जी जिसमें की महिलाएं तुड़ाई का कार्य करती हैं। उन महिलाओं को इन यंत्र से काफी सुविधा मिलेगी। इस दौरान पर डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा समस्तीपुर के कृषि अभियंत्रिक विभाग से इस कार्यक्रम में भाग लेने आई हुई डा. जया ने कृषि यंत्र के विषय में किसानों को विशेष तौर से जानकारी दी । उन्होंने बताया कि यह यंत्र इंजीनियर प्रणव कुमार के द्वारा तैयार किया गया है । और विश्वविद्यालय में किसानों हेतु उपलब्ध है। कृषि विज्ञान केंद्र लादा के तत्वाधान में किसानों के प्रक्षेत्र पर सीधे प्रत्यक्षण किया गया। इससे इसमें हरिपुर गांव के 15 सब्जीउत्पादक किसानों ने भाग लेकर जानकारी हासिल की। मौके पर कृषि विज्ञान केंद्र लादा के गृह वैज्ञानिक डॉ. कुमारी अमृता मौजूद थीं।

सिंघिया खेतों में प्रत्यक्षण कर किसानों को जानकारी देते वैज्ञानिक।

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 3 अगस्त तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के अनेक स्थानों पर हल्की या मध्यम वर्षा के साथ कहीं-कहीं गरज के साथ बिजली गिरने का अनुमान है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 33-35 डिग्री सजबकि न्यूनतम तापमान 27-28 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| **समस्तीपुर** | | |
| 1 अगस्त | 32.2 | 25.0 |
| 2 अगस्त | 33.8 | 25.0 |
| **मुजफ्फरपुर** | | |
| 1 अगस्त | 33.8 | 25.0 |
| 2 अगस्त | 33.8 | 26.0 |
| **पटना** | | |
| 1 अगस्त | 36.0 | 28.0 |
| 2 अगस्त | 36.0 | 28.0 |

डिग्री सेल्सियस में

**Dainik Jagran 01-08-2025**

दैनिक जागरण 2/8/25 पेज 5

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 3 अगस्त तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के अनेक स्थानों पर हल्की या मध्यम वर्षा के साथ कहीं-कहीं गरज के साथ बिजली गिरने का अनुमान है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 33-35 डिग्री सजबकि न्यूनतम तापमान 27-28 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहेगा।

हिन्दुस्तान 2/8/25 पेज 4

## कैंपस 30s

विदाई सह सम्मान समारोह में मौजूद वैज्ञानिक।

# विवि में विदाई सह सम्मान समारोह

पूसा। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कृषि अभियंत्रण एवं प्रौद्यौगिकी महाविद्यालय में विदाई सह सम्मान समारोह आयोजित की गई। अध्यक्षता डीन डॉ.राम सुरेश ने किया। मौके पर वरिष्ठ तकनीकी सहायक हरदेव महतो की सेवानिवृति पर उन्हें भाव-भीनी विदाई दी गई। इस दौरान वक्ताओं ने अंग-वस्त्र, बुके, माला आदि देकर सम्मानित करते हुए उनके कार्यो की सराहना की। मौके पर डॉ.मुकेश श्रीवास्तव, डॉ.एसके जैन, डॉ.देवेन्द्र सिंह, डॉ.विशाल कुमार, डॉ.दिनेश रजक, डॉ.रविशचन्द्र, डॉ.एसके पटेल, ई.मनोरंजन कुमार, डॉ.आरके साहू आदि मौजूद थे।

दैनिक जागरण 3/8/25 पृ5

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 5 अगस्त तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के अनेक स्थानों पर हल्की या मध्यम वर्षा के साथ कहीं-कहीं गरज के साथ बिजली गिरने का अनुमान है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 33-35 डिग्री सजबकि न्यूनतम तापमान 27-28 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 2 अगस्त | 32.2 | 25.0 |
| 3 अगस्त | 33.8 | 25.0 |
| | दरभंगा | |
| 2 अगस्त | 33.8 | 25.0 |
| 3 अगस्त | 33.8 | 26.0 |
| | पटना | |
| 2 अगस्त | 36.0 | 28.0 |
| 3 अगस्त | 36.0 | 28.0 |

डिग्री सेल्सियस में

भास्कर 31/8/25 पेज 18

कृषि • एक हेक्टेयर खेत से प्राप्त कर सकते हैं 20 से 25 क्विंटल मूंगफली की फलियां

# मूंगफली की खेती से सुधरेगी आर्थिक स्थिति: तिवारी

भास्कर न्यूज | पूसा

हाल के वर्षों पर गौर करें तो बिहार के किसानों का रुझान पारंपरिक फसलों को छोड़कर मूंगफली, सोयाबीन, सूर्यमुखी आदि जैसे तेलहनी फसलों की ओर हुआ हैं। मूंगफली तेलहनी फसलों में काफी महत्वपूर्ण फसल मानी जाती है। गुजरात, आंध्र प्रदेश, तामिलनाडू, कर्नाटक जैसे राज्यों के किसान लंबे समय से मूंगफली की खेती कर न सिर्फ बेहतर से बेहतर आमदनी प्राप्त कर रहे रहे है। बल्कि इन किसानों की देखा देखी आज मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, पंजाब और बिहार के किसान भी मूंगफली की खेती में काफी रुचि लेने लगे हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के हेड व वरीय वैज्ञानिक डॉ. आरके तिवारी ने दी।

मूंगफली की फसल।

उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार की ओर चलाएं जा रहे सामूहिक तेलहन प्रत्यक्षण योजना के अंतरगत बिहार के किसानों को केवीके बिरौली के परिसर में मूंगफली की खेती के बारे में विस्तार से जानकारी दी जा रही है। इसके अलावे केवीके के वैज्ञानिकों द्वारा खासकर समस्तीपुर जिले में मूंगफली की खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों का समूह बनाकर उनके खेतों में मूंगफली का प्रदर्शन भी कराया जा रहा हैं। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि मूंगफली की खेती के लिए अच्छी जल निकास वाली बलुई दोमट या भुरभुरी दोमट मिट्टी काफी उपयुवत होती हैं। मूंगफली की बूआई 15 जून से 15 जुलाई के बीच किया जा सकता हैं। उन्होंने बताया कि केवीके द्वारा मूंगफली की धरनी प्रजाति का बीज किसानों को निशुल्क उपलब्ध कराया जा रहा है। इसकी फसल 105 दिनों में तैयार हो जाती हैं। उन्होंने बताया कि खरीफ फसल होने के कारण मूंगफली में सिंचाई की आवश्यकता काफी कम पड़ती है। हालांकि पौधों में फूल आने के समय अगर खेतों की मिट्टी सुखी हुई दिखाई दे तो किसानों को इसमें हल्की सिंचाई निश्चित रूप से कर देनी चाहिए। उन्होंने बताया कि मूंगफली के फलियों का विकाश जमीन के अंदर होता है इसलिए किसानों को ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि वर्षा के दौरान खेतों में पानी न लगें।

## वैज्ञानिक सलाह: गुच्छ रोग का प्रकोप दिखने पर रासायनिक दवा का करें इस्तेमाल

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि मूंगफली की खेती में सामान्यत: गुच्छ रोग का प्रकोप अधिक देखने को मिलता है। इस रोग में पौधें बौने रह जाते है और पत्तियो में उत्तको का रंग पिला पड़ने लगता है। इस रोग के लक्षण दिखाई देने पर किसानों को तत्क्षण इमिडाक्लोरपीड नामक दवाई का एक एमएल मात्रा तीन लीटर पानी के साथ घोलकर फसलों पर छिड़काव करना चाहिए। उन्होंने बताया कि सामान्य रूप से जब पौधे पिले रंग के हो जाएं और नीचे की पत्तियां अधिकांशत: गिरने लगे तो किसानों अविलंब फसल की कटाई करा देनी चाहिए। इसके अलावे फलियों को तबतक सुखाना चाहिए जबतक फलों में नमी की मात्रा 10 प्रतिशत या उससे कम न हो जाएं। उन्होंने बताया कि किसान वैज्ञानिक तकनीक से मूंगफली की खेती कर 20 से 25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर के हिसाब से फलियों का उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि मूंगफली की बुआई के लिए 1 हेक्टेयर में 80 से 100 किलोग्राम बीज का प्रयोग किया जाता है।

दुकान भी गिरकर क्षतिग्रस्त हो गया। आवागमन चालू कराया गया।

# 24 घंटे में 104 मिमी वर्षा

पूसा, निज संवाददाता। लगातार हो रही वर्षा से आम जन जीवन अस्त व्यस्त हो गया। खेत, नाले, सड़क पानी से भर गया है।

इस दौरान सड़कों पर चलना लोगों के लिए परेशानी का सबब बना है। मौसम विभाग के अनुसार बीते 24 घंटे में करीब 104 मिमी वर्षा हुई। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मौसम वैज्ञानिक डॉ. ए. सत्तार ने बताया कि अगले दो दिनों तक वर्षा की स्थिति बनी रहेगी। उसके बाद थोड़ी कमी आ सकती है। इधर अच्छी वर्षा किसानों के लिए वरदान साबित हो रही है। धान की फसलों के लिए यह संजीवनी का कार्य किया है।

भास्कर 4/8/25 पेज 15

बिहार के... प्रगतिशील किसान

सीवान के किसान अशोक सिंह ने न किसी से ट्रेनिंग ली, न किसी कृषि वैज्ञानिक से सहायता, बागवानी में करते हैं कई तरह के नवाचार

# चार पौधों की क्रॉस ब्रीडिंग से तैयार की नई किस्म... एक ही पेड़ पर चार तरह के आम

संजय पांडेय|भास्कर नेटवर्क

अमूमन अलग-अलग प्रजाति के फलों का उत्पादन करना है तो अलग-अलग पौधे लगाने पड़ते हैं। जितनी प्रजातियां, उतने पौधे। पर सीवान जिले के किसान अशोक सिंह ने आम की एक ऐसी प्रजाति विकसित की है, जिसमें चार तरह के आम एक ही पेड़ में लगते हैं। खास यह कि इस प्रजाति को विकसित करने के लिए अशोक सिंह ने न तो ट्रेनिंग ली है, न ही किसी कृषि वैज्ञानिक की सहायता।

बसंतपुर प्रखंड के नगौली गांव के रहने वाले अशोक सिंह की बचपन से ही बागवानी में रुचि रही है। इस सिलसिले में कोलकाता आते जाते हैं। वहीं पर नर्सरी संचालक को देखकर पौधों की विभिन्न किस्मों की क्रॉस ब्रीडिंग कराकर नई प्रजाति विकसित करने का प्रयास किया। प्रयास सफल रहा। आम के पौधों पर उन्होंने प्रयोग किया।

उन्होंने आम्रपाली, ऑल टाइम, दशहरी और मल्लिका प्रजाति के पौधों की क्रॉस ब्रीडिंग कराई और नई प्रजाति को विकसित किया। इसके 10 पेड़ तैयार हो चुके हैं, जिनसे आम की वे फसल भी ले चुके हैं। हालांकि अब तक इस नई प्रजाति का उन्होंने कोई नाम नहीं रखा है। इस प्रजाति के पौधे उनसे अन्य किसान भी ले जाते हैं। इससे आम का उत्पादन दर बेहतर है।

उन्होंने बताया कि पौधे की क्रॉस ब्रीडिंग में दो अलग-अलग पौधों की किस्मों को मिलाकर नया पौधा बनाया जाता है। उन्होंने सोचा कि क्यों न चार पौधों की क्रॉस ब्रीडिंग कराई जाय। यह प्रयोग सफल रहा। चारों प्रजातियों के पौधों के बीच क्रॉस ब्रीडिंग कराने से उन चारों की खासियतें नए पौधे में आ गईं।

चार प्रकार का फल देने वाला आम का पेड़।

एक ही पेड़ पर चार तरह के आम के फल लगते हैं। हर फल का स्वाद, रंग और आकार भी अलग-अलग। क्रॉस ब्रीडिंग कर इस पेड़ को तैयार किया गया है। उन्होंने नई नस्ल को तैयार करने के लिए चार साल पहले प्रयोग शुरू किया था। इस नई प्रजाति के आम के पौधों की मांग बहुत ज्यादा है। उनकी नर्सरी से कई लोग इस प्रजाति के पौधे ले जा चुके हैं। यह दो साल में फल देने लगता है।

अशोक सिंह बताते हैं कि विपरीत जलवायु में खेती करना उनका शौक है। वे आधा एकड़ जमीन में पहाड़ी इलाकों में उगने वाले आड़ू (सतालू) और सेब की बागवानी भी कर रहे हैं। इसके अलावा थाईलैंड के मशहूर सफेद जामुन की प्रजाति ह्वाइट वाटर एपल का पौधा भी लगाया है। इसका स्वाद लोगों को चखाकर उन्होंने यह साबित किया है कि मेहनत और लगन से जलवायु की सीमाएं भी तोड़ी जा सकती हैं।

**घर और पुश्तैनी जमीन को बनाया हार्टिकल्चर जोन:** अशोक सिंह ने कहा कि घर के पास आठ एकड़ पुश्तैनी जमीन है। यहां हार्टिकल्चर जोन बनाकर नर्सरी तैयार किए हुए हैं। यहां नए-नए प्रयोग करते हैं। थाइलैंड का ह्वाइट वाटर एपल, मियां जाकी आम, मसाले के पौधे कोलकाता से लाकर लगाए हुए हैं। उनकी नर्सरी में मसाले, फूल और फलों की 500 से ज्यादा नस्लें मौजूद हैं। बागवानी को ही उन्होंने अपना कॅरियर और कारोबार बना लिया है। इससे उन्हें अच्छी कमाई भी हो रही है। उनकी मेहनत अब गांव के दूसरे किसानों के लिए प्रेरणा बन गई है। दुर्लभ फलों की खेती से उन्होंने न सिर्फ खुद को आगे बढ़ाया है, बल्कि गांव के कई किसानों को भी नई राह दिखाई है। वे लोग भी इनसे सीखकर उन्नत खेती करते हैं।

**बंगाल से पौधे लाकर नर्सरी में उगाते हैं:** अशोक सिंह ने बताया कि मैंने भूगोल से एमए तक पढ़ाई की है। मिट्टी और जलवायु पर काफी अध्ययन किया। बंगाल आना-जाना रहता है। वहां की उन्नत नर्सरियां आकर्षित करती हैं। बंगाल नम जलवायु वाला राज्य है। नर्सरी के मामले में वे लोग आगे हैं। वहीं से विपरीत जलवायु के पौधे लगाने का शौक जगा। थाइलैंड का ह्वाइट वाटर एपल, मियां जाकी आम, मसाले आदि के पौधे कोलकाता से लेकर आया।

इन प्रगतिशील किसान से और जानें
9431475479

यह खबर दूसरों से भी शेयर करें

यह खबर दूसरों से भी शेयर करें आप भी किसान हैं और कोई अनोखा नवाचार किया है तो पूरी जानकारी, फोटो-वीडियो अपने नाम-पते के साथ हमें 8770590566 पर वाट्सएप करें। ध्यान रहे, आपका किया काम किसी भी मीडिया या सोशल मीडिया में जारी नहुआ हो।

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 5 अगस्त तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के अनेक स्थानों पर हल्की या मध्यम वर्षा के साथ कहीं-कहीं गरज के साथ बिजली गिरने का अनुमान है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 33-35 डिग्री सजबकि न्यूनतम तापमान 27-28 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 4 अगस्त | 30.0 | 26.0 |
| 5 अगस्त | 30.5 | 26.0 |
| | दरभंगा | |
| 4 अगस्त | 30.5 | 26.0 |
| 5 अगस्त | 30.5 | 27.0 |
| | पटना | |
| 4 अगस्त | 32.0 | 28.0 |
| 5 अगस्त | 32.0 | 28.0 |

डिग्री सेल्सियस में

# जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने में मदद करता रुद्राभिषेक

प्रभात खबर - 4/8/25 P-7

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि परिसर स्थित महावीर मानस मंदिर में रविवार को रुद्राभिषेक यज्ञ का आयोजन किया गया. रुद्राभिषेक यज्ञ के मुख्य यजमान सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के वैज्ञानिक डा सुनीता कुमारी एवं सेवानिवृत डीईओ अवधेश प्रसाद सिंह ने बताया कि रुद्राभिषेक पूजा भगवान शिव को प्रसन्न करने और विभिन्न लाभ प्राप्त करने का एक शक्तिशाली अनुष्ठान है. यह पूजा नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने, स्वास्थ्य, धन, और समृद्धि को आकर्षित करने और आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देने में मदद करती है. रुद्राभिषेक पूजा से मानवीय जीवन में अनेकानेक लाभ है. मंदिर के मुख्य पंडित गौतम मिश्र के अनुसार रुद्राभिषेक नकारात्मक शक्तियों और शत्रुओं से रक्षा करता है. यह पूजा शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करने में मदद करती है. रुद्राभिषेक धन, संपत्ति और समृद्धि को आकर्षित करता है. घर में सुख, शांति और सद्भाव आती है. मौके पर डा शंभू शरण ठाकुर, डा रमण त्रिवेदी, मुकेश कुमार, नवल किशोर ठाकुर, महेश राय, डा बलवंत कुमार, सीएस राय, सुनील कुमार, डा सीके झा, सुधीर कुमार सिंह, शत्रुघ्न ठाकुर मौजूद थे.

कृषि • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के वरीय कृषि वैज्ञानिक ने बागवानी को लेकर दी जानकारी

# आम और लीची के पेड़ों में इस माह किसान डालें उर्वरक

5/8/25 भास्कर न्यूज़ | पूसा पेज 13

बिहार के आम और लीची उत्पादक किसान अपने-अपने बागों का प्रबंधन अगस्त के पूरे माह के दौरान या सितंबर के पहले सप्ताह तक हर हाल में कर लें। बागों में की जाने वाली जुताई, खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग, पौधों की कटाई-छटाई सहित कई अन्य तरह के बाग प्रबंधन से जुड़े कार्य को अगर किसान सितंबर के प्रथम सप्ताह बाद करते है तो उन्हें फायदे की जगह भारी नुकसान उठाना पर सकता हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार सिंह ने दी है। उन्होंने कहा कि मौजूदा समय आम और लीची के पौधों में खाद एवं उर्वरक डालने का सबसे सटीक और उपयुक्त समय हैं। बिहार के अधिकांश फल उत्पादक किसान अपने-अपने बागों में पौधों के उम्र के अनुसार खाद एवं उर्वरक डाल चुके होंगे। परंतु कुछ किसान ऐसे भी होंगे जो लगातार हो रही बारिश और जलजमाव के कारण अभी तक पौधों में खाद एवं उर्वरक नही दें पाएं होंगे। ऐसे सभी किसान सितंबर माह के प्रथम सप्ताह तक हर हाल में अपने-अपने बाग से जुड़े पौधों में खाद एवं उर्वरक निश्चित रूप से डाल दें। उन्होंने कहा कि बिहार के किसानों के लिए बागों में उर्वरक डालने का यह समय बिहार के कृषि जलवायु के अनुरूप है। जबकि अन्य प्रदेशों में यह समय वहां के जलवायु के अनुसार भिन्न हो सकता है।

आम के पेड़ों में उर्वरक डालता किसान।

## कृषि वैज्ञानिक की सलाह के अनुसान करें मात्रा का प्रयोग

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि वैसे किसान जो अबतक अपने बाग में खाद एवं उर्वरक का प्रयोग नहीं कर पाएं हैं वे निश्चित रूप से सितंबर के पहले सप्ताह तक बागों में खाद एवं उर्वरक डाल दें। उन्होंने खाद एवं उर्वरक की निर्धारित मात्रा के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि वैसे किसान जिनके आम और लीची के बागों के पेड़ दस वर्ष या दस वर्ष से अधिक पुराने हो गए है वे प्रति पेड़ 550 ग्राम डाई अमोनियम फास्फेट (डीएपी), 850 ग्राम यूरिया और 750 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश को आपस में मिलाकर पेड़ के जड़ो से करीब डेढ़ से 2 मीटर की दूरी पर रिंग आकार का 9 इंच चौरा और 9 इंच गहरा गड्ढा खोदकर उसमें डाल दें। इन सभी खाद और उर्वरकों के प्रयोग से पेड़ो को जरूरत के अनुसार सभी पोषक तत्व मिल जाता हैं। उन्होंने बताया कि किसान खाद और उर्वरक के साथ-साथ सभी पेड़ो में 20 से 25 किलो प्रति पेड़ के अनुसार डालें।

## पेड़ों में बीमारी नियंत्रण के लिए करें दवा का इस्तेमाल

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि फल उत्पादक किसानों के लिए आम और लीची के पौधों में खाद एवं उर्वरक देने का सबसे अच्छा समय फलो की तुड़ाई के तत्काल बाद का होता हैं। चूंकि उस समय पेड़ खासकर वानस्पतिक वृद्धि की अवस्था में होते है। उन्होंने कहा कि यह नियम उन बागों में लागू नही होते है जिन बागों के पेड़ रोगग्रस्त है। क्योंकि रोगग्रस्त पेड़ वाले बागों में हमारा प्रथम उद्देश्य पहले पेड़ को बचाना होता है न की उससे उपज प्राप्त करना। इसलिए ऐसे बागों में सबसे पहले पेड़ में लगे बीमारियों के अनुसार उसका उपचार करना आवश्यक होता है।

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 5 अगस्त तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के अनेक स्थानों पर हल्की या मध्यम वर्षा के साथ कहीं-कहीं गरज के साथ बिजली गिरने का अनुमान है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 33-35 डिग्री सजबकि न्यूनतम तापमान 27-28 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 5 अगस्त | 28.0 | 25.0 |
| 6 अगस्त | 28.5 | 25.0 |
| | दरभंगा | |
| 5 अगस्त | 28.5 | 25.0 |
| 6 अगस्त | 28.5 | 26.0 |
| | पटना | |
| 5 अगस्त | 30.0 | 27.0 |
| 6 अगस्त | 30.0 | 27.0 |

डिग्री सेल्सियस में

दैनिक जागरण 5/8/25 पेज 3

# आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 10 अगस्त तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में बादल छाए रहेंगे। इस अवधि में कुछ जिलों में कहीं-कहीं हल्की वर्षा हो सकती है, एक-दो स्थानों पर मध्यम वर्षा हो सकती है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा . ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 34-36 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| **समस्तीपुर** | | |
| 6 अगस्त | 33.2 | 25.5 |
| 7 अगस्त | 34.0 | 25.5 |
| **दरभंगा** | | |
| 6 अगस्त | 34.0 | 25.5 |
| 7 अगस्त | 34.0 | 26.0 |
| **पटना** | | |
| 6 अगस्त | 36.0 | 27.0 |
| 7 अगस्त | 36.0 | 27.0 |

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 06-08-2025

# एक दो जगहों पर मध्यम वर्षा की संभावना, कहीं कहीं होगी हल्की बारिश

**समस्तीपुर** । जिले के डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा स्थित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, एवं भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से विश्वविद्यालय के जलवायू परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र द्वारा जारी अगामी 06-10 अगस्त, 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के से मध्यम बादल छाये रह सकते हैं। इस अवधि में उत्तर बिहार जिलों में कही कही हलकी वर्षा हो सकती है. एक दो स्थानों पर मध्यम वर्षा हो सकती है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 34 से 36 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। जबकि न्यूनतम तापमान 25-27 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। सापेक्ष आर्दता सुबह में 85 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 40 से 45 प्रतिशत सहने की संभावना है। पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 12 से 15 किला मीटर प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने का अनुमान है।

**Rashtriya Sahara 06-08-2025**

# संगीतांजलि का आयोजन 10 को

**पूसा .** डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित विद्यापति सभागार में आगामी 10 अगस्त को संगीतांजली कार्यक्रम होने जा रहा है. इसमें मुख्यरूप से उत्तर भारतीय संगीत/स्वरलिपि पद्धति के जनक एवं संगीत को रोजगार परक शिक्षा के रूप मे स्थापित व प्रतिष्ठित करने वाले पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे की 165 वीं जयंती पर राष्ट्रीय संगीत समारोह संगीतांजली आयोजित है. उद्घाटन सूचना एवं प्रसारण मंत्री महेश्वर हजारी करेंगे. इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि मशहूर सरोद वादिका, विभागाध्यक्ष संगीत विभाग, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय पटना डॉ रीता दास, पश्चिम बंगाल की युवा भरतनाट्यम नृत्यांगना सोमा मंडल, दिल्ली से युवा शास्त्रीय गायक केशव कुमार धीरज मुख्य आकर्षण होंगे. समस्तीपुर संगीत जगत की धरोहर भास्कर त्रय पं. आरएस ठाकुर मतवाला को संगीत के प्रचार-प्रसार में अप्रतिम योगदान के लिए सम्मानित किया जाना है.बीकेपीजी संगीत सदन हसनपुर, युवा कलाश्रम समस्तीपुर, स्वरांजलि गढिया चौक, नवोदय विद्यालय बिरौली के प्रशिक्षुओं की संक्षिप्त प्रस्तुतियों के अलावा खगड़िया से गणेश पॉल, बेगूसराय से अभिषेक कुमार भी कार्यक्रम के आकर्षण होंगे. विशिष्ट अतिथि के रूप में जिला कला एवं संस्कृति पदाधिकारी जूही कुमारी एवं आईरा (इंटरनेशनल) प्रदेश अध्यक्ष डॉ सुमन कुमार मिश्रा शामिल होंगे.

प्रभात खबर
Thursday, August 7, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com

# आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 10 अगस्त तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में बादल छाए रहेंगे। इस अवधि में कुछ जिलों में कहीं-कहीं हल्की वर्षा हो सकती है, एक-दो स्थानों पर मध्यम वर्षा हो सकती है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा . ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 34-36 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| **समस्तीपुर** | | |
| 7 अगस्त | 33.2 | 25.5 |
| 8 अगस्त | 34.0 | 25.5 |
| **दरभंगा** | | |
| 7 अगस्त | 34.0 | 25.5 |
| 8 अगस्त | 34.0 | 26.0 |
| **पटना** | | |
| 7 अगस्त | 36.0 | 27.0 |
| 8 अगस्त | 36.0 | 27.0 |

डिग्री सेल्सियस में

**Dainik Jagran 07-08-2025**

# खेती को सरल बनाने की दी जानकारी

**कार्यशाला**

- यांत्रिकीकरण योजना से मजदूरों की बचत होगी
- शरदकालीन गन्ने की रोपाई करने की अपील

**हसनपुर निज संवाददाता।** हसनपुर चीनी मिल परिसर में गन्ना कृषक कार्यशाला संपन्न हुआ। संयुक्त निदेशक, ईख विकास पटना महेंद्र प्रसाद सिंह ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि गन्ना की खेती में सरकार किसानों को काफी सहुलियत दे रही है।जिसका लाभ उठाने का समय है।कृषि यंत्रों पर अनुदान, आधार गन्ना बीज पर अनुदान, प्रमाणित गन्ना बीज पर अनुदान, कीट नाशक दवा पर अनुदान,आधार बीज पौधशाला पर अनुदान आदि की व्यवस्था है।

चीनी मिल के कार्यपालक अध्यक्ष अशोक कुमार मित्तल ने कहा मजदूरों की समस्या को देखते हुए गन्ना की खेती में यंत्रीकरण तकनीक अपनाने की जरूरत है। उन्होंने किसानों से अपील करते हुए कहा कि अधिक से अधिक रकवा में शरदकालीन गन्ने की रोपाई करें। उपाध्यक्ष गन्ना सुरेंद्र पाल सिंह ने चीनी मिल और किसानों के बीच बेहतर समन्वय की बात कही।उप महाप्रबंधक गन्ना रामाशंकर प्रसाद ने कहा कि गन्ना रोपाई के लिए खेतों की तैयारी का समय आ गया है।योजनाओं का लाभ उठायें। यंत्रीकरण योजना से मजदूरों का बचत होगा। ईख पदाधिकारी समस्तीपुर शिवांगी पांडे ने ईख अनुसंधान केंद्र, पूसा के द्वारा शुरू किए गए 'मास ऐप' के उपयोग की सलाह दी।

Hindustan 07-08-2025

# डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
## पूसा, समस्तीपुर, बिहार-848125

## आवेदन की अंतिम तिथि 25 अगस्त, 2025 तक विस्तारित

## नामांकन सूचना

**शैक्षणिक वर्ष 2024-25 में निम्नलिखित पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा कोर्स में प्रवेश हेतु आवेदन प्राप्त करने की अंतिम तिथि दिनांक 25/08/2025 तक बढ़ाई जाती है।**

| S. No. | Name of Courses | Eligibility |
|---|---|---|
| 1. | Agri-Warehouse Management | Bachelor's Degree in Agriculture and allied Science |
| 2. | Agri-Tourism Management | B.Sc. in Agriculture or allied Science /BA/B.Com & BBA/ Bachelor degree in Biological Science |
| 3. | Agricultural Journalism and Mass Communication | B.Sc. in Agriculture or allied Science, BBA/Bachelor in Mass Communication & Journalism/ BA (Psychology/ Sociology/ Economics/ Hindi/English). |

विस्तृत जानकारी, दिशा-निर्देश एवं आवेदन प्रपत्र विश्वविद्यालय की वेबसाईट www.rpcau.ac.in पर उपलब्ध है।

ह०/- कुलसचिव
रा. प्र. के. कृ. वि., पूसा

Hindustan 07-08-2025

# लीची के पेड़ों में लगने वाला लीची बग कीट और बार्क इटिंग कैटरपिलर कीट दोनों काफी घातक : कृषि वैज्ञानिक

**समस्तीपुर कार्यालय (एसएनबी)।** लीची के पेड़ों में लगने वाला लीची बग कीट और बार्क इटिंग कैटरपिलर कीट यानी (लीची के पेड़ों का छिलका खाने वाले पिल्लू) दोनों ही रोग अत्यंत ही विनाशकारी और घातक है। इन दोनों रोगों का संक्रमण खासकर लीची तुड़ाई के उपरांत पेड़ो में देखने को मिलता है। बिहार के लीची उत्पादक किसान ससमय इन दोनों रोगों की पहचान कर तथा वैज्ञानिक तरीके से इसका प्रबंधन करते हुए लीची के पेड़ों को इन रोगों से बचा सकते है। इन रोगों का ससमय प्रबंधन करने से अगले वर्ष लीची का फलन काफी बेहतर होगा। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पुसा के वरीय कृषि वैज्ञानिक सह अखिल भारतीय फल अनुसंधान परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ. संजय कुमार सिंह ने दी है। कृषि वैज्ञानिक ने बताया की बिहार में लीची बग कीट का प्रकोप खासकर मार्च-अप्रैल एवं जुलाई-अगस्त के महीने में ज्यादा देखने को मिलता है। इसके नवजात और वयस्क दोनों ही तरह के कीट पेड़ के नरम टहनियों, पत्तियों एवं फलों से रस को चूसकर उन्हें कमजोर कर देते है। इससे जब पेड़ो पर फल लगे रहते है तो फलों की बढ़वार रुक जाती है। किसान जब पेड़ो के पास जाते है तो उन्हें एक विशेष प्रकार की दुर्गंध महसूस होती है। इस दुर्गंध से ही किसान इस कीट का पता आसानी से लगा सकते है। किसान इस रोग से बचाव के लिए नवजात कीटों के दिखाई देते ही फौसफामिडान नामक कीटनाशक की 1.5 एमएल मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर दो छिड़काव 10 से 15 दिनों के अंतराल पर करें। ऐसा करने से यह कीट समाप्त हो जाएगा। कृषि वैज्ञानिक ने बताया की इस कीट के कैटरपिलर यानी (पिल्लू ) बड़े आकार के होते है जो पेड़ों के छिलके को खाकर जिंदा रहते है एवं छिलकों के पीछे ही छुपकर बैठे रहते है। ये कीट तनों में छेद कर अपने बचाव के लिए टहनियों के ऊपर अपनी विष्टा की सहायता से ऊपर से एक जाला बना देते है। इस कीट से ग्रसित टहनियां कमजोर हो जाती है और पेड़ो से टूटकर गिर जाती है। किसान इस कीट के प्रबंधन के लिए कीट से प्रभावित शाखाओं को इक(ा कर उसे बाग से बाहर ले जाकर उसे अच्छे से जला दें। कीट के द्वारा किए गए छेद में लोहे के तार को डालकर कैटरपिलर कीट को मारने का काम करें। इसके अलावे प्रभावित टहनियों और उसके हिस्से को पेट्रोल या मिट्टी के तेल में भिंगोयें गए रुई के फाहे से साफ करें। किसान सितंबर-अक्टूबर माह के दौरान एक सिरिंज के माध्यम से कीट के द्वारा किये गए छिद्र में 5 एमएल डाइक्लोरवोस दवाई को इंजेक्ट कर दें और छेद को मिट्टी से बंद कर दें। इसके अलावे कार्बोफुरन 3 जी ग्रेन्यूल्स दवाई की 5 ग्राम मात्रा को प्रति छिद्र की हिसाब से छिद्र में रख दें तथा इसके बाद फिर से इस छिद्र को मिट्टी से भर दें। उन्होंने बताया की इन कीड़ों से बचाव के लिए बगीचे को साफ सुथरा रखना काफी श्रेयस्कर पाया गया है।

**Rashtriya Sahara 07-08-2025**

पर भी विद्यालय के दो कमरों में वर्षा … बस … का … उससे सप्लाई … सकारात्मक पहल नहीं हुई।

दैनिक जागरण 8/8/25 पेज 4

# पांच हेक्टेयर में लगाए गए बांस के पौधे

संस, जागरण • पूसा: डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के वानिकी विभाग और स्नातकोत्तर कृषि महाविद्यालय (पीजीसीए) ने गोराई घाट ढाब क्षेत्र में बांस के पौधों का बड़े पैमाने पर रोपण कर वन महोत्सव का आयोजन किया। इस अभियान का उद्घाटन कुलपति डा. पी एस पांडेय ने किया। उन्होंने कहा कि यह पहल पारिस्थितिक पुनर्स्थापन और सतत भूमि प्रबंधन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। बांस के वृक्ष न केवल पारिस्थितिकी के लिए लाभकारी हैं, बल्कि ये बाढ़ और जल कटाव को नियंत्रित करने में भी सहायक होते हैं।

कुलपति ने इकोटूरिज्म, भूमि पुनर्स्थापन, कार्बन पृथक्करण और ग्रामीण आजीविका में बांस की भूमिका पर भी चर्चा की। इस अभियान के दौरान लगभग 400 बांस के गुच्छे राइजोम के साथ 5 हेक्टेयर

बांस का पौधा लगाते कुलपति • जागरण

क्षेत्र में लगाए गए। इसमें पारिस्थितिक और आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बांस प्रजातियां जैसे बम्बुसा बालकोआ, बम्बुसा बम्बोस, बम्बुसा टुल्डा और बम्बुसा नुटान्स शामिल हैं, जिन्हें उनके अनुकूलन क्षमता के अनुसार चुना गया। इस अवसर पर निदेशक अनुसंधान एवं डीन पीजीसीए डा. मयंक राय ने विश्वविद्यालय की पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों और स्थानीय समुदाय को जलवायु अनुकूल वानिकी प्रथाओं के महत्व के बारे में जागरूक करना था। इस कार्यक्रम में कालेज आफ फिशरीज, ढोली के डीन डा. पीपी श्रीवास्तव और छात्र कल्याण निदेशक डा. रमन त्रिवेदी भी उपस्थित रहे।

हिन्दुस्तान 8/8/25 पेज 2

**फायदा** | वन महोत्सव समारोह मनाया गया, इस दौरान विवि परिसर के गोराई घाट ढाब क्षेत्र में लगाए गए बांस

# पानी के कटाव को नियंत्रित करता है बांस

पूसा, निज संवाददाता। राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि, पूसा के वानिकी विभाग, (पीजीसीए) के तत्वाधान में गुरुवार को वन महोत्सव समारोह मनाया गया। इस दौरान विवि परिसर के गोराई घाट ढाब क्षेत्र में बड़े पैमाने पर बांस के पौधे कि रोपाई की गई। समारोह की शुरुआत कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने बांस के पौधे लगाकर की। कुलपति ने कहा कि पारिस्थितिक पुनस्थापन और सतत् भूमि प्रबंधन की दिशा में यह अभियान एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने कहा कि बांस के वृक्ष पारिस्थिति को अनुकूल करने के साथ बाढ़ के समय पानी के कटाव को नियंत्रित करने में भी मददगार साबित होते हैं। कुलपति ने इको टूरिज्म, भूमि पुनस्थापन, कार्बन पृथक्करण और ग्रामीण आजीविका में बांस की भूमिका के बारे में भी विस्तार से चर्चा की। इस दौरान करीब 400 बांस के गुच्छे राइजोम के साथ (करीब 5 हेक्टेयर) लगाए गए। आयोजकों ने बताया कि इस अभियान के तहत पारिस्थितिक और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण बम्बुसा बालकोआ, बम्बुसा बम्बोस, बम्बुसा टुल्डा और बम्बुसा नुटान्स आदि बांस की प्रजातियों के पौधे लगाए गए हैं। डीन (पीजीसीए) डॉ मयंक राय ने विश्वविद्यालय के पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम से छात्रों और स्थानीय समुदाय को जलवायु अनुकूल वानिकी प्रथाओं और पारिस्थितिकी तंत्र पुनस्थापन के महत्व के बारे में भी जागरूक करने का प्रयास किया गया है।

पूसा कृषि विवि परिसर स्थित गोराई घाट ढाब में बांस की रोपाई करते कुलपति व अन्य

जिला के सभी शिक्षकों में रोष व्याप्त है. प्रभात खबर 8/8/25 पेज 7

# राइजोम के साथ ढाब क्षेत्र में किया गया बांसरोपण

**पूसा .** डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के वानिकी विभाग स्नातकोत्तर कृषि महाविद्यालय (पीजीसीए) ने गोराई घाट ढाब क्षेत्र में बांसरोपण के साथ वन महोत्सव मनाया. उद्घाटन कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने किया. उन्होंने कहा कि पारिस्थितिक पुनर्स्थापन और सतत भूमि प्रबंधन की दिशा में यह अभियान एक महत्वपूर्ण कदम है. उन्होंने कहा कि बांस के वृक्ष न सिर्फ पारिस्थितिकी के लिए अनुकूल है बल्कि यह बाढ के समय पानी के कटाव को नियंत्रित करने में भी मददगार साबित होते हैं. कुलपति ने इकोटूरिज़्म, भूमि पुनर्स्थापन, कार्बन पृथक्कीरण और ग्रामीण आजीविका में बांस की भूमिका के बारे में भी विस्तार से चर्चा की. इस दौरान लगभग 400 बांस के गुच्छे राइजोम के साथ लगभग 5 हेक्टेयर ढाब क्षेत्र में लगाया गया. इसमें बम्बुसा बालकोआ, बम्बुसा बम्बोस, बम्बुसा टुल्डा और बम्बुसा नुटान्स प्रजातियां शामिल थी. निदेशक अनुसंधान एवं डीन पीजीसीए डॉ मयंक राय ने विश्वविद्यालय के पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता पर विस्तार से जानकारी दी. छात्रों और स्थानीय समुदाय को जलवायु अनुकूल वानिकी प्रथाओं और पारिस्थितिकी तंत्र पुनर्स्थापन के महत्व के बारे में भी जागरूक करने का प्रयास किया गया. कॉलेज ऑफ फिशरीज ढोली के डीन डॉ. पीपी श्रीवास्तव, अभियंत्रण महाविद्यालय के डीन डॉ. रामसुरेश वर्मा और छात्र कल्याण निदेशक डॉ. रमन त्रिवेदी मौजूद थे.

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 10 अगस्त तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में बादल छाए रहेंगे। इस अवधि में कुछ जिलों में कहीं-कहीं हल्की वर्षा हो सकती है, एक-दो स्थानों पर मध्यम वर्षा हो सकती है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 34-36 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 8 अगस्त | 33.2 | 25.5 |
| 9 अगस्त | 34.0 | 25.5 |
| | दरभंगा | |
| 8 अगस्त | 34.0 | 25.5 |
| 9 अगस्त | 34.0 | 26.0 |
| | पटना | |
| 8 अगस्त | 36.0 | 27.0 |
| 9 अगस्त | 36.0 | 27.0 |

डिग्री सेल्सियस में

प्रभात खबर 8/8/25 पेज 7

# कृषि ज्ञान वाहन ने डिजिटल जड़ों को किया सशक्त : डॉ सतपथी

**पूसा** . डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय से संचालित कृषि ज्ञान वाहन ने वैशाली जिले के देसरी एवं जंदाहा प्रखंड के चार गांवों में आयोजित जागरूकता कार्यक्रमों में भाग लेकर ग्रामीण कृषि समुदाय को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने के कार्य में जुटा है. विभागीय वैज्ञानिक डा बिनीता सतपथी ने बताया कि इस अभिनव पहल के अंतर्गत कृषि ज्ञान वाहन ने किसानों को डिजिटल वीडियो फिल्मों, तकनीकी पुस्तिकाओं एवं जीवंत प्रदर्शन के माध्यम से जलवायु अनुकूल खेती, कीट एवं रोग प्रबंधन जैसे विविध विषयों पर जानकारी दे रही है. कार्यक्रमों में 250 से अधिक किसानों की सक्रिय भागीदारी देखी गई जो विभिन्न पंचायतों से आये थे.

दैनिक जागरण 9.8.2025 P-05

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 14 अगस्त तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया है कि पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। इस अवधि में कुछ जिलों में वर्षा हो सकती है। पूर्वी व पश्चिम चंपारण जिलों में थोड़ी अधिक वर्षा होगी। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार ने कहा कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 32-34 डिग्री और न्यूनतम 25-27 डिग्री सेल्सियस रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 9 अगस्त | 31.8 | 25.6 |
| 10 अगस्त | 32.0 | 25.6 |
| | दरभंगा | |
| 9 अगस्त | 32.0 | 25.6 |
| 10 अगस्त | 32.0 | 26.0 |
| | पटना | |
| 9 अगस्त | 34.0 | 27.0 |
| 10 अगस्त | 34.0 | 27.0 |

डिग्री सेल्सियस में

भास्कर 10/8/25 पेज 22

खेती-किसानी • वैज्ञानिक तकनीक से अमरूद उत्पादक इस रोग का कर सकते प्रबंधन

# अमरूद के पौधों में लगने वाला विल्ट रोग घातक

भास्कर न्यूज़ | पूसा

अमरूद के पौधें में लगने वाला विल्ट रोग अमरूद के बड़े बड़े बागानों के लिए काफी घातक और विनाशकारी है। यह रोग अमरूद में लगने वाले विभिन्न रोगों में से सबसे बड़ा रोग और अमरूद उत्पादक किसानों के लिए एक गंभीर समस्या है। बिहार के अमरूद उत्पादक किसान वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाकर अमरूद में लगने वाले इस विल्ट रोग को नियंत्रित कर सकते हैं। ये जानकारी डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड सह अखिल भारतीय फल अनुसंधान परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ. एसके सिंह ने दी है। उन्होंने कहा कि अमरूद में लगने वाले इस रोग का सबसे पहला लक्षण मानसून के शुरुआत के साथ ही शुरू हो जाता है। इस रोग के लगने के बाद अमरूद की पत्तियां हल्के पीले रंग की दिखाई देने लगती है। वहीं पत्तियां जल्द से जल्द सूखकर मुरझा भी जाती है। उन्होंने बताया कि इस अवस्था में अमरूद के पेड़ों की टहनियां नंगी हो जाती हैं और टहनियों में नए पत्ते व फूल भी निकलने बंद हो जाते हैं जिससे पौधा धीरे धीरे सूख जाता है। उन्होंने बताया अगर प्रभावित शाखाओं पर फल किसी तरह से निकल भी जाते हैं तो फल अविकसित, कठोर और पथरीले हो जाते हैं। इस रोग के लगने के बाद अमरूद की जड़ें भी जमीन की सतह में सड़ती हुई दिखाई देती है। अमरूद का छाल भी आसानी से तने से अलग हो जाता है।

विल्ट रोग से ग्रसित सूखे हुए अमरूद के पौधें।

## नए की तुलना में पुराने पेड़ों में ज्यादा खतरा

उन्होंने बताया कि अमरूद के नए पेड़ों की तुलना में पुराने पेड़ों में इस बीमारी का खतरा बहुत अधिक होता है। वैज्ञानिकों के अनुसंधान में यह देखने को मिला है कि 10 से 15 साल होते होते अमरूद में विल्ट की बीमारी लग जाती है जिस वजह से अमरूद के बड़े बड़े बाग उजड़ जाते हैं। उन्होंने बताया कि इस रोग का प्रसार खासकर रोग रहित क्षेत्रों एवं बीमार मिट्टी वाले पौधों की आवाजाही, बागों में पौधों की दूरी का कम होना, बागों में निरंतर जलजमाव आदि से होता है। इसके अलावे नर्सरी से पेड़ो को उखाड़ने के दौरान जब अमरूद के जड़ों पर चोट पहुंचती है तो इससे भी विल्ट रोग के होने की संभावना अधिक हो जाती है। उन्होंने बताया कि र अगस्त और सितंबर माह के दौरान जब अधिक वर्षा होती है तब यह रोग फैलता है।

## अमरूद के बगीचे में स्वच्छता की उचित व्यवस्था करनी होगी

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि किसान अमरूद के बगीचे में स्वच्छता की उचित व्यवस्था कर इस रोग को नियंत्रित कर सकते हैं। किसान इस रोग से ग्रसित और मुरझाए पेड़ों को अविलंब उखाड़कर जला दें। इसके अलावे किसान समय-समय पर पेड़ के तने के चारों तरफ गड्ढा खोदकर उसमें निर्धारित मात्रा में खाद और इंटरकल्चर देने के साथ-साथ पौधों में हल्की हल्की सिंचाई भी करते रहें। इससे पौधें की शक्ति बढ़ती है तथा वह संक्रमण का सामना करने में सक्षम हो जाता है। किसान अगर अमरूद के बागों में हल्दी या गेंदा फूल की खेती अक्सर करते रहते है तो इससे भी अमरूद का मुरझाना बंद हो जाता है। उन्होंने बताया कि किसान मानसन के दौरान और उसके बाद दिसंबर तक बागों की जुताई न करें तो अच्छा रहेगा। इसके अलावे किसान अमरूद लगाने वक्त रोग प्रतिरोधक प्रजातियों वाले अमरूद के पौधों का चयन निश्चित रूप से करें। इस रोग को कम करने के लिए किसान रोको एम नामक फफुंदनाशक दवा का 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर सभी पेडों पर छिडकाव करें।

दैनिक जागरण 10/8/25 पेज 2

# किसान मचान पर उगाएं सब्जियां, पाएं 50 प्रतिशत उद्यान विभाग से अनुदान

**जागरण विशेष**

प्रकाश कुमार • जागरण

**समस्तीपुर:** किसानों को मचान पर सब्जियां उगाने के लिए उद्यान विभाग ने नई योजना की शुरुआत की है। प्रधानमंत्री राष्ट्रीय कृषि विकास योजना अंतर्गत सब्जियों के लिए मचान प्रबंधन योजना की स्वीकृति दी गई है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य मचान पर गुणवत्तायुक्त सब्जियों का उत्पादन कर किसानों की आय बढ़ाना है। ऐसे किसानों को 50 प्रतिशत तक अनुदान मिलेगा। योजना का लाभ वैसे किसानों को मिलेगा जो डीबीटी पोर्टल पर पंजीकृत हैं। आनलाइन आवेदन करने वाले किसानों को पहले आओ-पहले पाओ के तहत योजना का लाभ मिलेगा। जिले को 700 इकाई का लक्ष्य दिया गया है, जबकि राज्य में 20 हजार इकाई निर्धारित है। उत्तर बिहार में 4300 इकाई में मचान पर सब्जी उत्पादन का लक्ष्य दिया गया है। समस्तीपुर के अलावा पूर्वी

- पीएम राष्ट्रीय कृषि विकास योजना अंतर्गत सब्जियों के लिए मचान प्रबंधन योजना की स्वीकृति
- डीबीटी पोर्टल पर पंजीकृत किसानों को मिलेगा लाभ, जिले को 700 इकाई का लक्ष्य

किसानों को आलान पर सब्जियां लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। आलान पर सब्जियां उगाने से अच्छी पैदावार होगी और कीमत भी अच्छी मिलेगी। किसान आनलाइन आवेदन कर योजना का लाभ ले सकते हैं।

**-तारिक असलम**, जिला उद्यान पदाधिकारी, कृषि विभाग, समस्तीपुर।

चंपारण व पश्चिम चंपारण जिला में 700-700, मुजफ्फरपुर व सीतामढ़ी में 500-500, दरभंगा, मधुबनी व शिवहर में 400-400 इकाई निर्धारित है। केंद्रीय स्कीम मद से वित्तीय वर्ष 2025-26 में सब्जियों के लिए योजना की स्वीकृति का आदेश जारी किया गया है। इस योजना के तहत मचान प्रबंधन के लिए बांस, लोहा तार, प्लास्टिक सुतली व पाट सुतली के क्रय पर व्यय होने वाली राशि का आकलन 4500 रुपये प्रति 125 वर्गमीटर निर्धारित है। एक किसान न्यूनतम एक और अधिकतम 16

**125 वर्ग मीटर के आलान पर आने वाला खर्च**

| अवयव | संख्या या मात्रा | दर | कुल |
|---|---|---|---|
| राशि बांस | 12 पीस | 250 प्रति बांस | 3000 |
| लोहा तार | 6 किलोग्राम | 125 रुपये किलोग्राम | 750 |
| पाट सुतली | 3 किलोग्राम | 150 रुपये किलोग्राम | 450 |
| प्लास्टिक सुतली | 2 किलोग्राम | 150 रुपये किलोग्राम | 300 |

इकाई के लिए आवेदन दे सकते हैं।

**बटाई की जमीन पर खेती से होगा अधिक मुनाफा :** मचान प्रबंधन मुख्य रूप से लघु एवं सीमांत कृषकों के साथ-साथ वैसे कृषक जिनके पास जमीन नहीं है और पट्टे व बटाई की जमीन पर सब्जी की खेती करने वाले कृषकों को एकरारनामा के आधार पर योजना का लाभ दिया जाएगा। इस योजना से छोटे किसानों को काफी लाभ होगा। जिनके पास खेती योग्य भूमि नहीं है, वे अपने आवासीय परिसर में आलान विधि से सब्जी की खेती कर सकेंगे।

दैनिक जागरण 10/8/25 पेज 3

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 14 अगस्त तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया है कि पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। इस अवधि में कुछ जिलों में वर्षा हो सकती है। पूर्वी व पश्चिम चंपारण जिलों में थोड़ी अधिक वर्षा होगी। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार ने कहा कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 32-34 डिग्री और न्यूनतम 25-27 डिग्री सेल्सियस रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 10 अगस्त | 31.8 | 25.6 |
| 11 अगस्त | 32.0 | 25.6 |
| | दरभंगा | |
| 10 अगस्त | 32.0 | 25.6 |
| 11 अगस्त | 32.0 | 26.0 |
| | पटना | |
| 10 अगस्त | 34.0 | 27.0 |
| 11 अगस्त | 34.0 | 27.0 |

डिग्री सेल्सियस में

खेती-किसान • मुंह पर डबल मास्क, हाथों में ग्लव्स, आंखों में चश्मा जरूर लगाएं, इंफेक्शन से होगा बचाव

# फसलों पर रासायन का छिड़काव करते समय सावधानी बरतने की होती जरूरत

भास्कर न्यूज|पूसा

फसलों पर रासायनों का छिड़काव करते समय किसानों को कई तरह की सावधानियां बरतने की आवश्यकता होती है। विभिन्न रासायनों का फसलों में उपयोग और उसकी मात्रा, छिड़काव या भुरकाव के दौरान अपने आप की सुरक्षा आदि ऐसे कई महत्वपूर्ण बिंदु है जिनकी जानकारी रखकर किसान अपने फसलों के साथ अपनी भी सुरक्षा कर सकते हैं। ये जानकारी डा. राजेंद्र प्रसाद केंदीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड एवं अखिल भारतीय फल अनुसंधान परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ. एसके सिंह ने दी। उन्होंने कहा कि भारत के कृषि क्रांति में सबसे महत्वपूर्ण योगदान रासायनिक दवाओं द्वारा पौध संरक्षण का है। रासायनिक दवा पौधों को कीट व्याधि से बचाने के लिए प्रचलित कई उपायों में से एक महत्वपूर्ण उपाय हैं। उन्होंने कहा कि बीते कुछ दशकों में कृषि वैज्ञानिकों के अथक प्रयास के बदौलत कृषि रक्षा को लेकर विभिन्न तरीके के दवाओं का विकास एवं प्रसार हुआ। इससे आज किसान पौधों को संरक्षित कर फसल से बेहतर पैदावार प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने कहा की जहां एक तरफ रासायनिक दवाओं का प्रयोग कर किसान ज्यादा और बेहतर फसल उत्पादन प्राप्त कर रहे हैं। वहीं एक करवा सच यह भी है कि ये सभी कृषि रक्षक दवाएं एक तरह का रासायनिक विष है और इसका प्रयोग अगर सही ढंग से नही किया गया तो इसके परिणाम भी बेहद खतरनाक हो सकते हैं।

तमाम तरह की सावधानियों को अपनाकर खेतों में स्प्रे करता किसान।

## दवाओं के प्रयोग के बाद हाथ पैर एवं मुंह को अच्छे से धो लें

दवाओं के प्रयोग के बाद किसान अपने हाथ पैर एवं मुंह को अच्छी तरह से साबुन से धो लें तथा संभव हो तो स्नान कर कपड़े भी बदल लें। उन्होंने बताया कि किसान दवा के छिड़काव या भुरकाव के काम को प्रातः अथवा शांयकाल में ही करें खासकर तब जब तेज हवा नहीं चल रही हो। दवा छिड़कने या भुरकने के बाद यंत्र को अच्छी तरह से धोकर सुखाना भी बेहद जरूरी होता है। प्रयोग के बाद भी अगर डब्बे में दवा बची हो तो किसान उसे बंद आलमारी में ताला लगाकर रखें ताकि वहां तक बच्चें और पशु न पहुंच सके। दवा समाप्त होने की स्थिति में किसान खाली टिन या डब्बे को तोड़कर नष्ट करते हुए जमीन के अन्दर गाड़ दें।

## दवाओं के प्रयोग के बाद किसान साबुन से सफाई करें, किसी तरह की लापरवाही से बचें

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि किसान फसलों पर छिड़काव और भुरकाव के दौरान अपने मुंह पर डबल मास्क, हाथों में ग्लव्स, आंखों में चश्मा आदि जरूर लगाएं। ऐसी महत्वपूर्ण सावधानियों को अपनाकर किसान अपने आप को रासायनिक दवाओं के इन्फेक्शन से बचा सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान रासायनिक दवा खरीदने से पहले उसके टीन या डब्बों के शील को अच्छी तरह से देख ले कि कही दवा बाहर तो नहीं निकल रही है। सभी किसान कीटनाशक दवाओं की बोतलों, डिब्बों या लिफाफों पर उनके इस्तेमाल को लेकर लिखे गए आवश्यक निर्देशो का पालन जरूर करें। उन्होंने बताया कि किसान दवा के टिन या डब्बों को खोलने के लिए घर में रखे गए फल या सब्जी काटने वाले चाकू का प्रयोग कदापि न करें। साथ ही बिना ग्लब्स के डब्बों को खोलने की चेष्टा भी न करें। उन्होंने बताया कि खेत में दवा का प्रयोग करते समय किसान किसी भी तरह की खाद्य सामग्री अथवा बीड़ी, सिगरेट, पान आदि का सेवन कदापि न करें।

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 14 अगस्त तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया है कि पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। इस अवधि में कुछ जिलों में वर्षा हो सकती है। पूर्वी व पश्चिम चंपारण जिलों में थोड़ी अधिक वर्षा होगी। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार ने कहा कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 32-34 डिग्री और न्यूनतम 25-27 डिग्री सेल्सियस रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| **दरभंगा** | | |
| 11 अगस्त | 31.8 | 25.6 |
| 12 अगस्त | 32.0 | 25.6 |
| **समस्तीपुर** | | |
| 11 अगस्त | 32.0 | 25.6 |
| 12 अगस्त | 32.0 | 26.0 |
| **पटना** | | |
| 11 अगस्त | 34.0 | 27.0 |
| 12 अगस्त | 34.0 | 27.0 |

डिग्री सेल्सियस में

**Dainik Jagran 11-08-2025**

# केले के बागों के प्रबंधन पर विशेष ध्यान देने की जरूरत : कृषि वैज्ञानिक

समस्तीपुर कार्यालय। पिछले वर्ष जून-जुलाई के महीने में राज्य के हजारों किसानों ने उत्तक संवर्धन तकनीक से अपने खेतों में केले के पौधों को लगाया था। उन सभी किसानों का केला का पौधा इस समय करीब 12 महीने का हो गया है। किसानों को अब ऐसे सभी केले के बागों के प्रबंधन पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ.एसके सिंह ने दी है। उन्होंने कहा कि भारतवर्ष में क्षेत्रफल के दृष्टिकोण से केले की खेती में बिहार 9वें नंबर तथा उत्पादन एवं उत्पादकता के दृष्टिकोण से 7वें नंबर पर आता है। उन्होंने बताया कि बिहार के अंदर केला के क्षेत्रफल, उत्पादन एवं उत्पादकता को बढ़ाने की दिशा में असीम संभावनाएं मौजूद है। किसान केले की खेती में पौधों की अच्छी प्रजाति का चयन, विकास के विभिन्न अवस्थाओं के दौरान केले के बागों में किए जाने वाले वैज्ञानिक प्रबंधन आदि महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान देकर कम लागत में केले की खेती से अच्छी उपज और आय दोनों प्राप्त कर सकते है। उन्होंने बताया कि पिछले साल लगाएं गए केले के बागों में अभी किसान हल्की जुताई-गुड़ाई करने के बाद प्रति केले के पौधे 200 ग्राम यूरिया, 200 ग्राम म्यूरेट आफ पोटाश एवं 100 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट देकर पौधों पर मिट्टी चढ़ा दें। उन्होंने बताया कि अभी केले के पौधों में फूल के आने का समय है इसलिए बागों में उर्वरक देना अत्यंत जरूरी है। किसान इसके अलावे केले के पौधों से सूखे एवं रोगग्रस्त पत्तियों को तेज चाकू से समय-समय पर काटते भी रहें। ऐसा करने से जहां पौधों में विभिन्न रोगों के लगने की संभावना काफी कम हो जाती है। वहीं बाग में अगर रोग लग भी जाएं तो रोग का फैलाव काफी कम होता है। इससे बाग में हवा एवं प्रकाश भी नीचे तक आसानी से पहुंच पाता है। उन्होंने बताया कि केले से अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए किसान एक केले के पेड़ पर 13-15 स्वस्थ पत्तियां ही रखें। वर्तमान मौसम में बागों में आवश्यकतानुसार हल्की- हल्की सिंचाई करना भी काफी बेहतर रहेगा। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि वर्तमान समय में केले के बागों में आभासी तना (स्यूडोस्टेम) विविल कीट का प्रकोप भी काफी होता है। इस कीट के प्रबंधन के लिए किसान रोगग्रस्त केले के पौधे पर 100 मिलीलीटर बेवेरिया बेसियाना नामक दवाई का 3 एमएल हिस्सा प्रति लीटर पानी के साथ या क्लोरपाइरीफोस नामक दवाई का 2.5 एमएल हिस्सा प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर बागों में छिड़काव करें।

# खेतों में आम का पौधा लगाने के लिए समय अनुकूल

**खेती किसानी**

**प्रतिनिधि,समस्तीपुर**

डॉ. राजेन्द्र केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के द्वारा किसानों के लिये जारी समसमायिक सुझाव में कहा गया कि फलदार एवं यानिकी पौधों को लगाने का यह समय अनुकूल चल रहा है. किसान अपने इच्छा के अनुसार अलग-अलग समय में पकने वाली आम की किस्मों का चयन कर सकते हैं. मई के अन्त से जून में पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून में पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन, दशहरी, जुलाई में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, तमूरिया, अगस्त में पकने वाली किस्में समरबहिष्त, पीसा, कतिकी है. आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाशंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगडा राजेंद्र आग-1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अको, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है. कलमी आम के लिये पौधा से पौधा की दूरी 10 मीटर, बीजू के लिए 12 मीटर रखें. आम्रपाली किस्म की सधन बागवानी के लिये पौधों को 2.5 गुणा 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं.

**गड्ढा खोदकर कुछ दिन छोड़ दें:** आम का पौधा लगाने के लिये सबसे पहले 10 से 12 मीटर की दूरी पर 50 सेंटीमीटर चौड़ा और एक मीटर गहरा गड्ढा खोदें. गड्ढे को कुछ दिनों के लिये खुला छोड़ देना चाहिये. उसके बाद उसमें अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर की खाद और नीम की खली मिलायें. 100 ग्राम क्लोरोपाईरीफॉस पाउडर भी प्रति गड्ढा मिलायें. उसके बाद आम का पौधे को गड्ढे में सीधा डालकर चारों तरफ से मिट्टी से ढक दें. मिट्टी को अच्छी तरह दबाना है ताकि उसमें हवा नहीं रहे.पौधा लगाकर उसमें तुरंत बाद अच्छी तरह पानी डालना है.समय-समय पर गोबर की खाद, नमी की खली, डीएपी, यूरिया तथा म्यूरेट ऑफ पोटाश का उपयोग करें. सूक्ष्म पोषक तत्व जिंक, कॉपर तथा बोरॉन का उपयोग करें. इस बात का ध्यान रखना है कि आम के पौधे को पर्याप्त धूप की जरूरत होती है. कीट और बीमारियों से बचाने के लिये नीम का तेल व अन्य जैविक कीटनाशक का उपयोग करना चाहिये. पौधे को मवेशियों से बचाने के लिये गैबियन का उपयोग किया जा सकता है.

प्रभात खबर
Tuesday, August 12, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/689a3bd5d9a757d40f528915

# संगीत ऐसी विधा जिसमें आज भी गुरु भक्ति जीवंत

## चतुरा पंडित नाम से विख्यात पंडित विष्णु नारायण भातखंडे की 165वीं जयंती धूमधाम से मनाई

भास्कर न्यूज़ | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के विद्यापति सभागार में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी रविवार शाम को उत्तर भारतीय संगीत पद्धति एवं स्वरलिपी पद्धति के जनक चतुरा पंडित नाम से विख्यात पंडित विष्णु नारायण भातखंडे की 165वीं जयंती धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर विद्यापति सभागार में जगमोहन विद्यापति कॉलेज ऑफ आर्ट एण्ड टेक्नोलॉजी ओईनी के तत्वावधान में दूसरे राष्ट्रीय शास्त्रीय संगीत समारोह संगीतांजली का आयोजन भी किया गया। शुरुआत कार्यक्रम के संयोजक जगमोहन विद्यापति कॉलेज ऑफ आर्ट एंड टेक्नोलॉजी ओईनी के सचिव संजय कुमार राजा द्वारा स्वागत संबोधन एवं विषय प्रवेश से हुई। उद्घाटन विशिष्ट अतिथि के रूप में बिहार सरकार के सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के मंत्री महेश्वर हजारी ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में पाटलीपुत्र विश्वविद्यालय के संगीत विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. रीता दास मौजूद थी। मुख्य अतिथि व विशिष्ट अतिथि के अलावे प्राचीन कला केंद्र के क्षेत्रीय समन्वयक अभिषेक कुमार एवं सह संयोजक पंडित रामनरेश राय सहित अन्य अतिथियों ने सर्वप्रथम पंडित विष्णु नारायण भातखंडे एवं पंडित जगमोहन झा के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर दीप प्रज्वलित करते हुए समारोह का उद्घाटन किया। समारोह में लक्ष्मण कुमार ने शानदार कथक की प्रस्तुति दी। संतोष कुमार की तबला संगती में साक्षी, ऋतु एवं उनकी सहेलियों ने वंदना प्रस्तुत किया। बांसुरी वादक डॉ. वेद प्रकाश के शिष्य दिल्ली से पधारे केशव कुमार धीरज के गायन, कोलकाता के मेदनीपुर से आई सोमा मंडल के भरत नाट्यम, खगड़िया से पधारे सुप्रसिद्ध शास्त्रीय गायक पंडित गणेश पाल, पंडित रामनरेश राय आदि के अलावे राम बालक निराला ने अपनी प्रस्तुति से ऐसा समां बांधा कि गुजरते वक्त का एहसास नहीं हुआ। मुख्य अतिथि डॉ. रीता दास ने कहा कि संगीत एक मात्र ऐसी विधा है जिसमें आज भी गुरु भक्ति और गुरु-शिष्य परंपरा के मूल स्वरूप का जीवंत दर्शन होता है। मौके भाजपा जिलाध्यक्ष नीलम सहनी, उमेश ठाकुर, डॉ.गणेश ठाकुर, पप्पु कुमार, ध्रुव कुमार पाठक, गुरू कृष्ण मोहन, नंदगोपाल ठाकुर, अतुल राज, अमित कुमार वर्मा, देव कुमार, ब्रज किशोर कुमार, संजय कुमार सिंह, कुमार रंजन, मिथिलेश कुमार आदि को चादर, पाग एवं स्मृति चिह्न से सम्मानित भी किया गया।

कार्यक्रम में शामिल कलाकार व अन्य।

# हरे चारे के लिए लगाएं हाइब्रिड नेपियर घास

प्रिय अन्नदाता  दैनिक भास्कर - 12/8/15 P-15

प्रिय अन्नदाता व किसान भाई हम सभी जानते हैं कि अभी बरसात का सीजन चल रहा है। ऐसे में यदि हम अपने पशुओं के हरे चारे की व्यवस्था के बारे में सोचें तो उसके लिए हाइब्रिड नेपियर का स्लिप या रूट अपने घर के आस-पास या खेतों में लगाकर पशुओं के लिए हरे चारे का उचित प्रबंध सालों भर आसानी से कर सकते हैं। बिहार में हाइब्रिड नेपियर के लिए जो प्रजातियां विकसित की गई है उसमें सी ओ 3 और सी ओ 5 मुख्य प्रजाति है। इसके अलावे बी एन एच 10 को भी पशुपालक लगा सकते हैं। अभी बरसात के समय में लगाने के लिए पशुपालकों को सिर्फ एक छोटा सा गड्ढा बनाकर उसमें स्लिप्स को लगा देना हैं और 1 साल में एक स्लिप के माध्यम से एक पशु के लिए हरा चारा पर्याप्त रूप में मिलने लगेगा। केवीके के हेड डॉ. तिवारी ने बताया कि पशुपालकों को यह ध्यान रखना चाहिए कि यदि हम हाइब्रिड नेपियर का प्रयोग पशु चारे के रूप में करते हैं तो उसके साथ-साथ खनिज लवण भी पशुओं को पर्याप्त मात्रा में भोजन में खिलाना चाहिए। उन्होंने बताया कि एक वयस्क पशु को एक दिन में 10 से 12 किलो हाइब्रिड नेपियर चारा खिलाना चाहिए। इसके साथ-साथ दाना जो बाजार से लिया गया हो या अपने घर में बनाया गया हो उसे भी प्रति पशु 3 किलो के अनुसार खिलाना चाहिए। हाइब्रिड नेपियर चारे को हम एक बार लगाकर अगले 5 से 7 साल तक लगातार अपने पशुओं के लिए हरे चारे की उपलब्धता सुनिश्चित कर सकते हैं। केवल अधिक ठंड की अवस्था को छोड़कर पशुपालक नेपियर लगाकर उससे सालों भर हरा चारा प्राप्त कर सकते हैं। आप खेती किसानी व पशुपालन से जुड़े किसी विषय पर जानकारी चाहते हैं तो व्हाट्सएप नंबर 7295046855 पर सिर्फ मैसेज करें।

डॉ. आरके तिवारी

## खेती के तौर-तरीके

- पशुपालकों को सिर्फ एक छोटा सा गड्ढा बनाकर उसमें स्लिप्स को लगा देना है।
- 1 साल में एक स्लिप के माध्यम से एक पशु के लिए हरा चारा पर्याप्त रूप में मिलने लगेगा।
- हाइब्रिड नेपियर चारे को हम एक बार लगाकर अगले 5 से 7 साल तक लगातार अपने पशुओं के लिए हरे चारे की उपलब्धता सुनिश्चित कर सकते हैं।
- बिहार में हाइब्रिड नेपियर के लिए जो प्रजातियां विकसित की गई है उसमें सी ओ 3 और सी ओ 5 मुख्य प्रजाति है।

**आप खेती किसानी व पशुपालन से जुड़े किसी विषय पर जानकारी चाहते हैं तो व्हाट्सएप नंबर 7295046855 पर सिर्फ मैसेज करें।**

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 14 अगस्त तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया है कि पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। इस अवधि में कुछ जिलों में वर्षा हो सकती है। पूर्वी व पश्चिम चंपारण जिलों में थोड़ी अधिक वर्षा होगी। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार ने कहा कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 32-34 डिग्री और न्यूनतम 25-27 डिग्री सेल्सियस रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| **समस्तीपुर** | | |
| 12 अगस्त | 31.8 | 25.6 |
| 13 अगस्त | 32.0 | 25.6 |
| **दरभंगा** | | |
| 12 अगस्त | 32.0 | 25.6 |
| 13 अगस्त | 32.0 | 26.0 |
| **पटना** | | |
| 12 अगस्त | 34.0 | 27.0 |
| 13 अगस्त | 34.0 | 27.0 |

डिग्री सेल्सियस में

**Dainik Jagran 12-08-2025**

# संगीत में गुरू भक्ति और गुरू शिष्य परंपरा का जीवन्त दर्शन होता है : डॉ रीता दास

**समस्तीपुर (एसएनबी)।** हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 10 अगस्त ट्ठगुरुवार) को उत्तर भारतीय संगीत पद्धति एवं स्वरलिपी पद्धति के जनक चतुरा पंडित नाम से विख्यात पंडित विष्णु नारायण भातखंडे की 164 वी जयंती के अवसर पर डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय .षि विश्वविद्यालय परिसर स्थित विद्यापति सभागार में जगमोहन विद्यापति कॉलेज ऑफ आर्ट एण्ड टेक्नोलॉजी ओईनी के तत्वावधान में दूसरे राष्ट्रीय शास्त्रीय संगीत समारोह संगीतांजली का आयोजन किया गया। इस समारोह में सर्वप्रथम दीप प्रज्वलन एवं तमाम आगत अतिथियों को सह संयोजक आशा सेवा संस्थान के सचिव अमित कुमार वर्मा, औसेफा निदेशक देव कुमार, ईडेन प्रमुख ब्रज किशोर कुमार, राजम इंडेन के प्रबंध निदेशक अतुल कुमार, संजय कुमार सिंह, कुमार रंजन, शिक्षाविद मिथिलेश कुमार, आदि ने चादर, पट्टा, पाग एवं स्मृति चिन्ह से स्वागत किया। तदुपरांत कार्यक्रम के संयोजक जगमोहन विद्यापति कॉलेज ऑफ आर्ट एंड टेक्नोलॉजी ओईनी के सचिव डॉ संजय कुमार राजा ने स्वागत संबोधन एवं विषय प्रवेश कराया। तदुपरांत उत्तर भारतीय संगीत पद्धति के जनक पंडित विष्णु नारायण भातखंडे एवं पंडित जगमोहन झा के चित्र पर माल्यार्पण व पुष्पांजलि कर सादर नमन के उपरांत समारोह के उद्घाटनकर्ता सूचना एवं प्रसारण मंत्री महेश्वर हजारी, मुख्य अतिथि पाटलीपुत्र विश्वविद्यालय के संगीत विभागाध्यक्ष डॉ रीता दास, प्राचीन कला केन्द्र के क्षेत्रीय समन्वयक

कार्यक्रम में शामिल कलाकार व अन्य।

अभिषेक कुमार, सहित तमाम अतिथियों व सह संयोजक पंडित रामनरेश राय, सहित संयोजक मंडल के सदस्यों ने दीप प्रज्वलितं कर समारोह का उद्घाटन किया। तदूपरोज लक्ष्मण कुमार एवं शिष्यों की कथक प्रस्तुति, एवं संतोष कुमार की तबला संगती में साक्षी ऋतु एवं सहेलियों द्वारा प्रस्तुत वंदना और के साथ समारोह आगे बढा। सह संयोजक विश्व प्रसिद्ध ग्रंथ ताल दर्शन मंजरी के रचयिता ताल मर्मज्ञ पंडित राम नरेश राय की अध्यक्षता में आयोजित इस समारोह में दरभंगा घराने के राष्ट्रीय स्तर पर ख्यातिलब्ध बांसुरी वादक डॉ वेद प्रकाश के शिष्य दिल्ली से पधारे केशव कुमार धीरज के गायन, कोलकाता के मेदिनीपुर से पधारी सोमा मंडल के भरत नाट्यम, खगडिया से पधारे सुप्रसिद्ध शास्त्रीय गायक पंडित गणेश पाल, पंडित रामनरेश राय, मुख्य अतिथि डॉ दास, के अलावा राम बालक निराला, आदि ने अपनी प्रस्तुति से ऐसा समां बांधा कि गुजरते वक्त का एहसास भी नहीं हुआ। इसी दरम्यान रामबालक निराला की संगती में सुविख्यात पंडित रामनरेश राय के शिष्यों यथा चन्द्रकान्त चौधरी, प्रभात कुमार, अमन कुमार, सत्यम कुमार, नीतेश कुमार आदि द्वारा प्रस्तुत तबला तरंग कचहरी के अलावा, रामचन्द्र ठाकुर, रंजन कुमार, तबला संगति से सजी मनोहारी प्रस्तुति ने देर तक श्रोताओं को बांधे रखा। इसी क्रम में मुख्य अतिथि बिहार की प्रथम सरोद वादिका डॉ दास ने आयोजन को अनुपम बताते हुए आयोजक टीम को बधाई दी।

Rashtriya Sahara 12-08-2025

भास्कर 13/8/25 पेज 24

खेती-किसानी • केला उत्पादक किसान वैज्ञानिक तकनीक को अपना कर इस विकार से आसानी से पा सकते हैं निजात

# थ्रोट चॉकिंग केला में लगने वाला घातक व प्रमुख विकार

भास्कर न्यूज़ | पूसा

केले के पौधें में लगने वाला थ्रोट चॉकिंग विकार एक प्रमुख विकार है जो केले की फसल और उसके उत्पादन को बुरी तरह से प्रभावित कर सकता है। केला उत्पादक किसान वैज्ञानिक तकनीक को अपनाकर इस विकार का प्रबंधन करते हुए केले से बेहतर उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। ये जानकारी डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड सह अखिल भारतीय फल अनुसंधान परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ.संजय कुमार सिंह ने दी है। उन्होंने कहा कि केले में जब बंच सामान्य तरीके से न निकलकर आभासी तने को फाड़ते हुए असामान्य तरीके से निकल जाएं

थ्रोट चॉकिंग विकार से ग्रसित केले के घौद।

उसे ही थ्रोट चॉकिंग यानी (गला घोंटना) कहते हैं। केले का यह विकार एक शारीरिक विकार है और काफी हद तक केले में यह अजैविक (एबायोटिक) कारणों से होता है। उन्होंने कहा कि गला घोंटना तब देखा जाता है जब केले का गुच्छा स्यूडोस्टेम के ऊपर से निकलने वाला होता है। परंतु निकलने के दौरान वह विभिन्न चरणों में फंस जाता है और गुच्छा (बंच) आभासी तने (स्यूडोस्टेम ) के ऊपर से निकलने के बजाय पौधे के आभासी तने के किनारे को फाड़कर निकल जाता है। उन्होंने कहा कि भारत के दक्षिणी भाग की तुलना में भारत के उत्तरी भाग में यह विकार केला उत्पादकों के लिए एक बड़ी समस्या है। यह विकार भयावह रूप तब धारण कर लेता है जब केला की रोपाई बिहार एवं उत्तर प्रदेश में सितंबर महीने या उसके बाद की जाती है। यह विकार बौनी प्रजाति के केले की फसल के बजाय लंबी प्रजाति के केले की फसल में अधिक होता है। अत्यधिक ठंड के समय जब केले में बंच निकलता है तब यह समस्या बागों में ज्यादा देखने को मिलती है। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि थ्रोट चॉकिंग विकार प्रकृति के अनुसार एक मौसमी विकार है। ठंढ में या ठंढ के मौसम के तत्काल बाद या शुरुआती वसंत में यह विकार केले में सबसे ज्यादा होता है। भारत का उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्र केले की इस समस्या से सबसे ज्यादा प्रभावित क्षेत्र है।

## जलभराव के प्रभाव को कम करने के लिए खेत में उचित जलनिकासी का प्रबंध करें, लापरवाही से बचें

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि इस विकार से केले की फसल को बचाने के लिए केला उत्पादक किसान केले की लंबी प्रजाति वाले किस्मों का चयन करें जो इस विकार के प्रति काफी कम संवेदनशील होती हैं जैसे अल्पान, चंपा, चीनीया, मालभोग, कोठिया, बतीसा आदि। उन्होंने बताया कि किसान केला की रोपाई सही समय पर करें। खासकर किसान केले की रोपाई ऐसे समय को ध्यान में रखकर करें कि जब केले में फूल अत्यधिक ठंडक के समय न निकले। किसान केला की खेती के लिए सस्तुत खाद एवं उर्वरकों का ही प्रयोग करें। केले के बागानों से जलभराव के प्रभाव को कम करने के लिए किसान केले के खेत में उचित जल निकास का प्रबंध करें। इसके अलावे विशेष रूप से गर्म-शुष्क मौसम में पानी की कमी से बचने के लिए किसान नियमित रूप से बागों में सिंचाई भी करें। उन्होंने बताया कि केले के फसल में नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों का अधिक प्रयोग लाभकारी माना जाता है। किसान थ्रोट चॉकिंग विकार की समस्या का मुकाबला करने के लिए केले में वृद्धि को बढ़ावा देने वाले रसायनों का प्रयोग निश्चित रूप से करें। उन्होंने बताया ऐसे महत्वपूर्ण तकनीकों को अपनाकर किसान इस बीमारी से केले की फसल को बचा सकते हैं।

दैनिक जागरण 13/8/25 पेज 3

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 17 अगस्त तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी कर बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में आसमान में बादल छाए रहेंगे। अगले 48 घंटे तक अनेक स्थानों व तराई के कुछ क्षेत्रों में वर्षा हो सकती है। हालांकि 16 अगस्त के बाद वर्षा की संभावना में कमी आएगी। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 32 से 34 व न्यूनतम 27 से 29 डिग्री तक रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 13 अगस्त | 34.0 | 26.5 |
| 14 अगस्त | 34.0 | 27.0 |
| | दरभंगा | |
| 13 अगस्त | 34.0 | 27.0 |
| 14 अगस्त | 35.0 | 27.0 |
| | पटना | |
| 13 अगस्त | 36.0 | 28.0 |
| 14 अगस्त | 36.0 | 28.0 |

डिग्री सेल्सियस में

प्रभात खबर 13/8/25 पेज 5

# तराई के कुछ क्षेत्रों में मध्यम से भारी बारिश के आसार

मौसम पूर्वानुमान

प्रतिनिधि, समस्तीपुर

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा केन्द्र व भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से 13 से 17 अगस्त 2025 तक के लिये मौसम पूर्वानुमान जारी किया गया है. पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में एक दो दिनों तक मध्यम बादल छाये रह सकते हैं. अगले 24 से 48 घंटों तक अनेक स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है. तराई के कुछ क्षेत्रों में मध्यम से भारी वर्षा हो सकती है. 14 अगस्त के बाद वर्षा की संभावना में कमी आ सकती है. इस अवधि में अधिकतम तापमान 32 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है. न्यूनतम तापमान 27 से 29 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है. सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 प्रतिशत के आसपास तथा दोपहर में 45 से 50 प्रतिशत रहने की संभावना है. पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 05 से 15 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से मुख्य रूप से पूर्वा हवा चलने की संभावना है. 13 अगस्त को पछुया हवा चलने का अनुमान है. आज का अधिकतम तापमान 34.0 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 1.3 डिग्री सेल्सियस अधिक रहा. न्यूनतम तापमान 26.5 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 0.1 डिग्री सेल्सियस कम रहा.

राष्ट्रीय सहारा 13/8/25 पेज 5

# बरसात में अमरूद पर कहर बनकर टूटता है एन्थ्रक्नोज रोग, इस रोग ने बढ़ाई बिहार के अमरूद उत्पादक किसानों की चिंता

**समस्तीपुर कार्यालय (एसएनबी)।** बरसात के मौसम यानी जुलाई, अगस्त व सितंबर के महीने में अमरूद में एन्थ्रक्नोज जैसे खतरनाक रोग के लगने की संभावना काफी अधिक रहती है। पिछले कुछ वर्षो से अमरूद में लगने वाला यह रोग खासकर बिहार के अमरूद उत्पादक किसानों को काफी नुकसान पहुँचा रहा है। अमरूद उत्पादक किसान वैज्ञानिक तकनीक से इस रोग का प्रबंधन कर अमरूद से स्वस्थ्य फल प्राप्त कर अच्छा मुनाफा कमा सकते है। ये बातें डॉ. राजेंद्र प्रसाद सेंट्रल एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी पुसा के पोस्ट ग्रेजुएट डिपार्टमेंट ऑफ प्लांट पैथोलॉजी एवं नेमेटोलॉजी के प्रोफेसर सह विभागाध्यक्ष एवं अखिल भारतीय फल अनुसंधान परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ. संजय कुमार सिंह ने कही। उन्होंने कहा कि जुलाई व अगस्त के महीने में अमरुद के फल में एन्थ्रक्नोज रोग का प्रकोप दिखाई देने लगता है। इस रोग के कारण अमरूद के पेड़ की डालियों के अंत में जो छोटी और कोमल नवजात पत्तियां होती है। उस पर काले या चॉकलेट रंग के अनियमित आकार के धब्बे बन जाते है साथ ही पत्तियां भी पीली हो जाती है। बाद में पत्तियां कमजोर होकर गिर जाती है। पत्तियों पर धब्बें बनने से आस पास की पत्तिया भी काली भूरे रंग की हो जाती है और ऊपर की टहनियां काली पड़ जाती है। इस वजह से नई कलियां फूल बनने से पहले ही कमजोर होकर गिर जाती है। अगर इनका समय पर इलाज न करे तो यह सूख कर गिर जाती है और धीरे धीरे पहले पूरी डाली सूख जाती है। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि इतना

रोग से संक्रमित फल।

ही नही इस रोग के कारण फलों के ऊपर छोटे छोटे काले धब्बें दिखाई पड़ते है जो धसे होते है और फल अंदर से सड़ जाते है। छोटी बिना खिली कलियाँ और फूल भी इस रोग के कारण समय से पहले ही सूख कर गिर जाती है। यह एक फफूंदजनित रोग है जो कोलेटोट्राईकम नामक फफूंद की वजह से होता है। इस रोग का फफूंद वसंत ऋतु में जब मौसम ठंडा और नमीयुक्त होता है। मुख्य रूप से पौधों की पत्तियों और टहनियों पर सर्वप्रथम उसी दौरान हमला करता है। बारिश के मौसम ट्ठजुलाई व अगस्त-सितंबर) में इसका प्रकोप सर्वाधिक होता है। इस मौसम में लगातार नमी बने रहने के कारण रोग की उग्रता में भारी वृद्धि हो जाती है। एन्थ्रेक्नोज रोग का अगर समय पर इलाज न किया गया तो अमरूद की मोटी टहनियां भी सूखने लगती। .षि वैज्ञानिक ने बताया कि जब यह रोग अमरूद के पत्तियों पर ही दिखाई देने लगे ठीक उसी अवस्था में इसका इलाज करने से अमरूद उत्पादकों को आशातीत लाभ मिलता है। जब यह रोग फलों को भी प्रभावित करने लगे तो इसका मतलब की इस रोग का समय से रोकथाम नही किया गया। एक बार यह रोग अमरूद के फलों पर लग जाने के बाद बागवान को भारी नुकसान पहुँचाता है। इस रोग से संक्रमित फल बुरी तरह सड़कर खराब हो जाते है तथा इस कारण वह बाजार में बिकने लायक ही नही रहते है। .षि वैज्ञानिक ने बताया की अमरूद एन्थेक्नोज के प्रबंधन में निवारक उपायों और उपचार रणनीतियों का संयोजन शामिल है। एन्थ्रेक्नोज एक कवक रोग है जो कोलेटोट्राइकम ग्लियोस्पोरियोइड्स के कारण होता है। यह रोग पत्तियों, तनों और फलों सहित अमरूद के पेड़ के विभिन्न हिस्सों को प्रभावित कर सकता है। अमरूद एन्थ्रेक्नोज को प्रबंधित करने के लिए अमरूद उत्पादकों को अमरूद के पेड़ के आसपास के क्षेत्र को साफ सुथरा रखना चाहिए। कवक के प्रसार को कम करने के लिए प्रत्येक गिरे हुए पत्तियों, फलों या संक्रमित पौधे के सामग्री को जमीन से हटाकर दूर मिट्टी में डंप कर देना चाहिए। वायु परिसंचरण और सूर्य के प्रकाश के प्रवेश को बेहतर बनाने के लिए अमरूद के पेड़ की नियमित रूप से छंटाई करें। जरूरत के अनुसार पेड़ के आधार के आसपास की मिट्टी को सिंचने के उद्देश्य से पानी दें। पेड़ की उम्र के अनुसार समय समय पर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। मिट्टी की नमी को संरक्षित करने, तापमान को नियंत्रित करने और बारिश के दौरान मिट्टी से पैदा होने वाले बीजाणुओं को पेड़ पर गिरने से रोकने के लिए पेड़ के आधार के चारों ओर जैविक गीली घास लगाएं। किसान अगर अमरूद का नया बाग लगाना चाहते है तो वे अमरूद के एन्थ्रेक्नोज रोग प्रतिरोधी किस्मों का चयन करें। एन्थ्रेक्नोज संक्रमण के लक्षणों को पहचानने के लिए नियमित रूप से अपने अमरूद के पेड़ का निरीक्षण करें।

13/8/25 पेज 5

# खबरें एक नजर में

## तराई के क्षेत्रों में भारी बारिश की संभावना, शेष इलाकों में हल्की से मध्यम वर्षा के आसार बरकरार

**समस्तीपुर।** अगले 48 घंटों में तराई के इलाकों मे भारी वर्षा और शेष भागों में हल्की से मध्यम वर्षा हो सकती है। इस संबंध में जिले के डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि वि वविद्यालय पूसा स्थित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र द्वारा जारी आगामी 16 अगस्त तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में एक-दो दिनों तक मध्यम बादल छाये रह सकते है। अगले 24 से 48 घंटो में अनेक स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की सम्भावना है। तराई के कुछ क्षेत्रों में मध्यम से भारी वर्षा हो सकती है। 14 अगस्त के बाद वर्षा की संभावना में कमी आ सकती है। इरा अवधि में अधिकतम तापमान 32-34 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 27-29 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है। सापेक्ष आर्द्रता दोपहर में 45 से 50 प्रतिशत रहने की संभावना है। पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 05 से 15 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से मुख्य रूप से पुरवा हवा चलने की संभावना है। 12 अगस्त को पंछिया हवा चलने का अनुमान है।

राष्ट्रीय सहारा 13/8/25 पेज 5

## फसलों पर रसायनों का छिड़काव करते समय किसानों को सावधानी बरतने की होती है जरूरत : कृषि वैज्ञानिक

**समस्तीपुर कार्यालय।** फसलों पर रासायनों का छिड़काव करते समय किसानों को कई तरह की सावधानियां बरतने की आवश्यकता होती है। विभिन्न रसायनों का फसलों में उपयोग और उसकी मात्रा, छिड़काव या भुरकाव के दौरान अपने आप की सुरक्षा आदि ऐसे कई महत्वपूर्ण बिंदु है जिनकी जानकारी रखकर किसान अपने फसलों के साथ अपनी भी सुरक्षा कर सकते है। ये बातें डा. राजेंद्र प्रसाद केंदीय .षि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड एवं अखिल भारतीय फल अनुसंधान परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ. एसके सिंह ने कही। उन्होंने कहा कि भारत के .षि क्रांति में सबसे महत्वपूर्ण योगदान रासायनिक दवाओं द्वारा पौध संरक्षण का है। रासायनिक दवा पौधों को कीट व्याधि से बचाने के लिए प्रचलित कई उपायों में से एक महत्वपूर्ण उपाय है। उन्होंने कहा कि बीते कुछ दशकों में .षि वैज्ञानिकों के अथक प्रयास के बदौलत .षि रक्षा को लेकर विभिन्न तरीके के दवाओं का विकास एवं प्रसार हुआ। इससे आज किसान पौधों को संरक्षित कर फसल से बेहतर पैदावार प्राप्त कर रहे है। उन्होंने कहा की जहां एक तरफ रासायनिक दवाओं का प्रयोग कर किसान ज्यादा और बेहतर फसल उत्पादन प्राप्त कर रहे है। वही एक करवा सच यह भी है कि ये सभी .षि रक्षक दवाएं एक तरह का रासायनिक विष है और इसका प्रयोग अगर सही ढंग से नही किया गया तो इसके परिणाम भी बेहद खतरनाक हो सकते है। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि किसान फसलों पर छिड़काव और भुरकाव के दौरान अपने मुँह पर डबल मास्क, हाथों में ग्लब्स, आंखों में चश्मा आदि जरूर लगाए। ऐसी महत्वपूर्ण सावधानियों को अपनाकर किसान अपने आप को रासायनिक दवाओं के इन्फेक्शन से बचा सकते है।

दैनिक जागरण 14/8/12 पेज 5

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 17 अगस्त तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी कर बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में आसमान में बादल छाए रहेंगे। अगले 48 घंटे तक अनेक स्थानों व तराई के कुछ क्षेत्रों में वर्षा हो सकती है। हालांकि 16 अगस्त के बाद वर्षा की संभावना में कमी आएगी। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 32 से 34 व न्यूनतम 27 से 29 डिग्री तक रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 14 अगस्त | 29.0 | 25.0 |
| 15 अगस्त | 29.0 | 25.5 |
| | दरभंगा | |
| 14 अगस्त | 29.0 | 25.5 |
| 15 अगस्त | 30.0 | 25.5 |
| | पटना | |
| 14 अगस्त | 31.5 | 26.5 |
| 15 अगस्त | 31.5 | 26.5 |

डिग्री सेल्सियस में

दैनिक जागरण 14/8/25 पेज 2

# विश्वविद्यालय ने एनीमिया मुक्त भारत के लिए किया समझौता

हस्ताक्षर करते दोनों संस्थान के अधिकारी एमओयू पर • जागरण

**संस, जागरण, पूसा :** डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थान के बीच बुधवार को महत्वपूर्ण समझौता के तहत एमओयू पर हस्ताक्षर हुआ। इस संदर्भ में संस्थान के द्वारा विश्वविद्यालय परिसर में टेक्निकल सपोर्ट यूनिट स्थापित की जाएगी। भारत सरकार के एनीमिया मुक्त भारत अभियान को तकनीकी सहयोग प्रशिक्षण और मार्गदर्शन उपलब्ध कराएगी। इस समझौता अभियान में विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा. मृत्युंजय कुमार ने कहा कि यह पहल न केवल पोषण, शिक्षा एवं तकनीकी सहयोग को सुदृढ़ करेगी। बल्कि एनीमिया मुक्त भारत के सपनों को साकार करने में भी

**विश्वविद्यालय परिसर में खुलेंगे टेक्निकल सपोर्ट यूनिट, अंतराष्ट्रीय संस्थान के बीच एमओयू पर हुआ हस्ताक्षर**

मिल का पत्थर साबित होगा। उन्होंने विश्वास जताया कि उक्त संस्थान के द्वारा ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में पोषण संबंधी संदेश घर-घर पहुंचे और स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार होगी। मौके पर पीएटीएच संस्थान के फोर्टिफिकेशन सलाहकार डा. सचिन गुप्ता ने कहा कि यह साझेदारी भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य को नई दिशा देने का कार्य करेगी। मौके पर कुमार सौरव, डा. उषा सिंह, डा. यूके बेहरा, डा. अमरेश चंद्र आदि उपस्थित रहे।

हिन्दुस्तान 14/8/25 पेज 2

# विश्वविद्यालय में स्थापित होगी टेक्निकल सपोर्ट यूनिट

- एनीमिया के निदान को ले विवि ने पाथ से किया एमओयू
- अभियान को प्रशिक्षण, मार्गदर्शन व तकनीकी सहयोग देगी

**पूसा, निज संवाददाता।** महिलाओं, बच्चों और किशोरियों में एनीमिया की समस्या से निपटने को लेकर राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि, पूसा प्रबंधन सजग है। इसको लेकर विवि ने अंतरराष्ट्रीय गैर-लाभकारी संस्था पाथ (पीएटीएच) के साथ एक महत्वपूर्ण समझौता पत्र (एमओयू) पर हस्ताक्षर किया है। इस साझेदारी के तहत विवि परिसर में टेक्निकल सपोर्ट यूनिट (टीएसयू) स्थापित की जाएगी। जो भारत सरकार के एनीमिया मुक्त भारत अभियान को प्रशिक्षण, मार्गदर्शन व तकनीकी सहयोग उपलब्ध कराएगी। एमओयू पर विवि की ओर से कुलसचिव डॉ.मृत्युंजय कुमार एवं पाथ की ओर से फूड फोर्टिफिकेशन सलाहकार डॉ. सचिन गुप्ते ने हस्ताक्षर

बुधवार को डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि में समझौता पत्र दिखाते कुलसचिव व पाथ के अधिकारी

किया। मौके पर डॉ.सचिन गुप्ते ने कहा कि यह साझेदारी भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य को नई दिशा देने का कार्य करेगी। बिहार के स्टेट लीड (फूड फोर्टिफिकेशन) कुमार सौरभ ने कहा कि टीएसयू की स्थापना से एनीमिया के प्रति जागरूकता और उपचार को गति मिलेगी। मौके पर सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की डीन डॉ.उषा सिंह, डॉ.अमरेश चन्द्रा, निदेशक शिक्षा डॉ.उमाकांत बेहरा, निदेशक योजना डॉ.एसके समीर, डॉ.गीतांजली चौधरी, डॉ.संगीता देव, डॉ.वीणा शाही, डॉ.सुभाष चन्द्रा, डॉ.आरती सिन्हा, डॉ.शिशिर कला अमित कुमार व अन्य वैज्ञानिक मौजूद थे। एमओयू पर कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने प्रसंनता व्यक्त करते हुए कहा यह शोध एवं तकनीकी सहयोग को सुदृढ़ करने के साथ एनीमिया मुक्त भारत के सपने को साकार करने में मील का पत्थर साबित होगा। उन्होंने कहा कि टीएसयू की स्थापना से ग्रामीण व शहरी क्षेत्रो में पोषण संबंधी जागरूकता को बल मिलेगा।

प्रभात खबर 14/8/25 पेज 4

# आरपीसीएयू और पीएटीएच के बीच हुआ एमओयू

प्रतिनिधि, पूसा

महिलाओं, बच्चों व किशोरियों में एनीमिया की समस्या से निपटने के उद्देश्य से डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा और अंतरराष्ट्रीय संस्था (पाथ) के बीच बुधवार को महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुआ. इस साझेदारी के तहत विश्वविद्यालय परिसर में टेक्निकल सपोर्ट यूनिट (टीएसयू) स्थापित की जायेगी. यह भारत सरकार के एनीमिया मुक्त भारत अभियान को तकनीकी सहयोग, प्रशिक्षण और मार्गदर्शन उपलब्ध करायेगा. कुलसचिव डा मृत्युंजय कुमार ने कहा कि यह पहल न केवल पोषण शिक्षा एवं तकनीकी सहयोग को सुदृढ़ करेगा, बल्कि एनीमिया मुक्त भारत के सपने को साकार करने में भी मील का पत्थर साबित होगा. पाथ के फूड फोर्टिफिकेशन सलाहकार डॉ. सचिन गुप्ते ने कहा कि यह साझेदारी भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य को नई दिशा देने का कार्य करेगा. बिहार के स्टेट लीड के कुमार सौरभ ने उम्मीद जताई कि टीएसयू की स्थापना से एनीमिया के प्रति जागरूकता और उपचार दोनों को गति मिलेगी. एमओयू हस्ताक्षर समारोह में विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. मृत्युंजय कुमार, कॉलेज ऑफ कम्युनिटी साइंस की डीन डॉ. उषा सिंह, निदेशक शिक्षा डॉ. यूके बेहरा, कॉलेज ऑफ बेसिक साइंस एंड ह्यूमैनिटीज के डीन डॉ. अमरेश चंद्र आदि मौजूद थे.

समझौता पत्र का आदान-प्रदान करते पदाधिकारी.

14/8/25
पेज 11

राष्ट्रीय सहारा

# खबरें एक नजर में

## डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय ने एनीमिया मुक्त भारत के लिए किया एमओयू पर हस्ताक्षर

एमओयू हस्तानांतरित करते पदाधिकारी।

**पूसा (एसएनबी)।** डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थान (पी ए टी एच) के बीच बुधवार को महत्वपूर्ण समझौता के तहत एम ओ यू पर हस्ताक्षर हुआ है। इस संदर्भ में संस्थान के द्वारा विश्वविद्यालय परिसर में टेक्निकल सपोर्ट यूनिट स्थापित की जाएगी जो भारत सरकार के एनीमिया मुक्त भारत अभियान को तकनीकी सहयोग प्रशिक्षण और मार्गदर्शन उपलब्ध कराएगी। विश्वविद्यालय के कुल सचिव डॉ मृत्युंजय कुमार ने कहा कि यह पहल न केवल पोषण शिक्षा एवं तकनीकी सहयोग को सु.ढ़ करेगी बल्कि एनीमिया मुक्त भारत के सपनों को साकार करने में भी मिल का पत्थर साबित होगा। उन्होंने विश्वास जताया कि उक्त संस्थान के द्वारा ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में पोषण संबंधी संदेश घर-घर पहुंचेगी वही स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार होगा। मौके पर पी ए टी एच संस्थान के डॉ सचिन गुप्ता ने कहा कि यह साझेदारी भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य को नई दिशा देने का कार्य करेगी। मौके पर कुमार सौरव, अधिष्ठाता डॉ उषा सिंह निदेशक शिक्षा डॉ यूके बेहरा डॉ अमरेश चंद्र एवं विश्वविद्यालय के फूड साइंस एंड न्यूट्रिशन विभाग के सदस्य थे।

बताया जाता है

दैनिक जागरण 17/08/25

# अब अत्याधुनिक सुविधा से लैस इनक्यूबेशन सेंटर होगा स्थापित

डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय में स्वतंत्रता दिवस पर संबोधन करते कुलपति वैज्ञानिक एवं मौजूद विभिन्न विद्यालय की छात्र-छात्राएं • जागरण

संस, जागरण, पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय में कुलपति डा. पीएस पांडेय ने ध्वजारोहण किया। स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को याद करते हुए नमन किया। उन्होंने विविकी उपलब्धियों का भी बखान किया। कहा कि 68 स्टार्ट-अप आन बोर्डेड हैं। इसे व्यवसायिक रूप देने के लिए विवि मेंटरिंग का कार्य कर रहा है। आने वाले दिनों में अत्याधुनिक सुविधा से युक्त इनक्यूबेशन सेंटर की स्थापना होगी। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय की ओर से 2.58 करोड़ की राशि को स्वीकृत किया गया है। इससे सब्जी, मशरूम एवं शहद प्रसंस्करण व बनाना कूकीज से जुड़े उद्यमियों को आवश्यक मार्गदर्शन व सहायता मिलेगा। बताया कि राजेन्द्र गेहूं-4, राजेन्द्र मडुआ, शकर कंद 07, राजेन्द्र मिश्रीकंद-03 एवं राजेन्द्र अरबी-02 के किस्मों को विमोचन समिति से अनुमोदन मिला है। बताया कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय परिसर में काफी, दालचीनी व काजू जैसे व्यावसायिक वानिकी के पौधों को लगाया गया है इससे शोध के अलावा छात्र और किसानों को व्यावहारिक ज्ञान मिलेगा। मौके पर कुलसचिव डा. मृत्युंजय कुमार सहित निदेशक, अधिष्ठाता, शिक्षक सहित छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

**68 स्टार्ट-अप को व्यवसायिक रूप देने के लिए मेंटरिंग कार्य कर रहा विवि, छात्र और किसानों को व्यावहारिक ज्ञान मिलेगा**

दैनिक जागरण 17/08/25

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 19 अगस्त तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी कर बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में आसमान में बादल छाए रहेंगे। अगले 48 घंटे तक अनेक स्थानों व तराई के कुछ क्षेत्रों में वर्षा हो सकती है। हालांकि पूर्वानुमान के दौरान वर्षा की संभावना में कमी आएगी। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 32 से 34 व न्यूनतम 27 से 29 डिग्री तक रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| समस्तीपुर | | |
| 17 अगस्त | 29.0 | 25.0 |
| 18 अगस्त | 29.0 | 25.5 |
| दरभंगा | | |
| 17 अगस्त | 29.0 | 25.5 |
| 18 अगस्त | 30.0 | 25.5 |
| पटना | | |
| 17 अगस्त | 31.5 | 26.5 |
| 18 अगस्त | 31.5 | 26.5 |

डिग्री सेल्सियस में

# परेड में केवी तो नृत्य में राजेन्द्र शिशु को प्रथम स्थान

कृषि विवि में प्रतिभागियों को पुरस्कृत करते कुलपति

पूसा। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि में कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय ने शुक्रवार को ध्वजरोहण किया। इस दौरान उन्होंने अपने संबोधन में विवि की उपलब्धियों की विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा विवि का चहुंमुखी विकास तेजी से हो रहा है। इस दौरान स्कूली छात्र छात्राओं ने मार्च पास्ट व रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इसमें चयनित स्कूलों को कुलपति ने पुरस्कृत किया। मिली जानकारी के अनुसार नृत्य में राजेन्द्र शिशु सदन के बच्चों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान पाया। दूसरे स्थान पर कैंपस पब्लिक स्कूल एवं तीसरे स्थान पर पीएमश्री केन्द्रीय विद्यालय, पूसा रहा।

हिन्दुस्तान 17/8/25 पृ 2

प्रभात खबर 17/8/25 पेज 4

# जीविकोपार्जन का साधन बनी विवि की नवीनतम तकनीक : कुलपति

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित प्रशासनिक भवन के सामने कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने झंडोतोलन कर वैज्ञानिकों तथा किसानों को संबोधित किया. साथ ही कहा राष्ट्रीय गोकुल मिशन के अंतर्गत विश्वविद्यालय की पिपराकोठी इकाई में अत्याधुनिक ओवम पिक-अप और इन विट्रो फर्टिलाइजेशन लैब की स्थापना की गई है. जिसका उद्घाटन 24 फरवरी, 2025 को प्रधानमंत्री के द्वारा किया गया. इसके अंतर्गत अब तक 9 जीवित बछड़ों का जन्म, जो देसी नस्लों के संरक्षण और संवर्धन की दिशा में एक मील का पत्थर है.

यह प्रयास न केवल साहीवाल और गिर जैसी देशी नस्लों को संरक्षित करता है, बल्कि हमारे किसानों को वैज्ञानिक तकनीकों से जोड़ने का माध्यम भी बनता है. यह विश्वविद्यालय की इस प्रतिबद्धता का स्पष्ट द्योतक है कि हम केवल प्रयोगशालाओं और शोध पत्रों तक सीमित न रहकर, कृषि आधारित समस्याओं के व्यावहारिक, स्थायी और जमीनी समाधान विकसित करने के लिए सतत प्रयासरत हैं,ताकि अनुसंधान का वास्तविक लाभ हमारे किसानों तक पहुंचे और ग्रामीण भारत की आर्थिक उन्नति सुनिश्चित हो सके. केले की दो किस्में कावेरी कंचन एवं कावेरी वामन को बिहार में खेती के लिए अनुशंसित किया गया है. चतुर्थ कृषि रोड मैप के अंतर्गत अबतक 11 जिलों के 65 प्रखंडों के 300 से अधिक गांवों तक कृषि ज्ञान वाहन 19 हजार से अधिक किसानों को अपनी सेवाएं प्रदान कर चुका है. अपनी यात्रा के दौरान 100 से अधिक जागरूकता कार्यक्रम, कृषि विज्ञान केन्द्र के द्वारा 50 से ज्यादा प्रशिक्षण सत्र में भाग लिया है, जिससे किसानों को उन्नत कृषि तकनीकों, जैविक खेती, मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, कीट व रोग नियंत्रण और जलवायु अनुकूल खेती आदि की जानकारी मिली. भविष्य में इस पहल के साथ मोबाइल एप्स के जरिए रीयल-टाइम कृषि सलाह और मौसम संबंधित जानकारी प्रदान करने की भी योजना है. विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों ने अनुसूचित जनजाति उपयोजना के अंतर्गत मुर्गीपालन, मधुमक्खी पालन, सब्जियों, मशरुम आदि के क्षेत्र में के स्वावलंबन एवं जीविकोपार्जन के लिए उपकरण एवं सामग्री दिए हैं. कृषि विज्ञान केन्द्र, तुर्की द्वारा आईसीएआर कृषि विज्ञान केन्द्र पोर्टल पर प्रथम स्थान अर्जित किया गया. मौके पर विवि के रजिस्ट्रार सहित सभी डीन डायरेक्टर एवं वैज्ञानिक मौजूद थे.

संबोधित करते कुलपति डॉ . पीएस पांडेय .

राष्ट्रीय सहारा · 17.8.25 P-05

# 2.58 करोड़ की लागत से होगी अत्याधुनिक सुविधा से युक्त इनक्यूबेशन सेंटर की स्थापना : कुलपति

**पूसा (एसएनबी)।** डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय .षि विश्वविद्यालय पूसा समस्तीपुर के प्रांगण में 79 वां स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर विवि के कुलपति डॉ पी एस पांडेय ने झंडोत्तोलन किया। इस अवसर पर उन्होंने ने शिक्षको, वैज्ञानिकों, श्रमिकों, पदाधिकारीयों व छात्र छात्राओं को शुभकामना दिया। वहीं उन्होंने देश के स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदानों को याद करते हुए नमन किया। उन्होंने ने कहा कि 68 स्टार्ट-अप ऑन बोर्डेड है, जिसे व्यवासायिक के रूप देने के लिए विश्वविद्यालय मेंटरिंग का कार्य कर रहा है। वहीं आने वाले दिनों में अत्याधुनिक सुविधा से युक्त इनक्यूबेशन सेंटर कि स्थापना किया जाएगा। जिसको लेकर भारत सरकार के खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय की ओर से 2.58 करोड़ की राशि को स्वी.त किया गया है। जिससे सब्जी, मशरूम एवं शहद प्रसंस्करण व बनाना कूकीज से जुड़े

समारोह को संबोधित करते कुलपति व अन्य।

उद्यमियों आवश्यक मार्ग दर्शन व सहायता मिल सकेगा। उन्होंने ने कहा कि विश्वविद्यालय के .षि वैज्ञानिकों के अथक मेहनत से राजेन्द्र गेहूं-4, राजेन्द्र मडुआ, शकरकंद 07, राजेन्द्र मिश्रीकंद-03 एवं राजेन्द्र अरबी-02 के किस्मों को विमोचन समिति से अनुमोदन मिला है।

उन्होंने ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय परिसर में कॉफी, दालचीनी व काजू जैसे व्यावसायिक वानिकी के पौधों को लगाया गया है। जिससे शोध के अलावा छात्र और किसानों को व्यावहारिक ज्ञान मिलेगा। इस अवसर पर कैम्पस पब्लिक स्कूल, केन्द्रीय विद्यालय सहित अन्य विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने सांस्.तिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दिया। वहीं इसमें उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यालय के छत्राओं को पुरस्कृत किया गया इस अवसर पर कुलसचिव डॉ मृत्युंजय कुमार सहित निदेशक, अधिष्ठाता, शिक्षक सहित छात्र छात्राएं उपस्थित थे।

भास्कर 18/8/25 पेज 21

कृषि • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के पादप रोग विभाग के हेड ने दी जानकारी

# केले के फल में लगने वाला सिगार व रॉट रोग फसल के लिए है काफी घातक, वैज्ञानिक तकनीक से करें प्रबंधन : कृषि वैज्ञानिक

भास्कर न्यूज|पूसा

केले के फल में लगने वाला सिगार एंड रॉट रोग केले की फसल के लिए काफी घातक और विनाशकारी है। यह रोग खासकर पिछले कुछ सालों से बिहार के केला उत्पादक किसानों को काफी परेशान कर रहा है। बिहार के केला उत्पादक किसान वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाकर इस रोग का प्रबंधन कर इससे निजात पा सकते हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के पादप रोग विभाग के हेड सह अखिल भारतीय फल अनुसंधान परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ. संजय कुमार सिंह ने कही। उन्होंने बताया कि सिगार एंड रॉट रोग को कुछ वर्ष पूर्व तक केला का काफी कम महत्वपूर्ण रोग माना जाता था लेकिन अब ऐसा बिल्कुल भी नहीं हैं। यह रोग अब एक महत्वपूर्ण रोग के तौर पर उभरकर सामने आने लगा है जिसका मुख्य कारण वातावरण में अत्यधिक नमी का होना है। उन्होंने बताया कि इस रोग के लक्षणों में केले के फलों का सिरा नीचे से सूखने लगता हैं तथा वह भूरे से काले रंग का एवं सरा हुआ दिखाई देता है। इस रोग के कवक की वृद्धि केले में फूल आने की अवस्था से ही शुरू हो जाती है और फलों के परिपक्व होने के समय में या उससे पहले जोर शोर से दिखाई देने लगती है। इस रोग से संक्रमित एवं प्रभावित क्षेत्र भूरे रंग के कवक विकास से ढके होते हैं जो सिगार के जले हुए सिरे पर राख की तरह दिखाई देते हैं। उन्होंने बताया कि यह रोग मुख्य रूप से कवक ट्रेकिस्फेरा फ्रुक्टीजेना द्वारा एवं कभी-कभी एक और कवक वर्टिसिलियम थियोब्रोमे द्वारा भी फैलता है। इस रोग का अन्य केले के पौधों पर फैलाव हवा या बारिश के माध्यम से होता है। इस रोग का हमला खासकर बरसात के दौरान केले में फूल आने की अवस्था में होता है।

सिगार एंड रॉट रोग से संक्रमित केले के फल।

## ऐसे करें जैविक नियंत्रण

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि इस रोग के फंगस को नियंत्रित करने के लिए बेकिंग सोडा पर आधारित स्प्रे का इस्तेमाल किया जा सकता है। इस स्प्रे को बनाने के लिए प्रति लीटर पानी में 25 मिलीलीटर तरल साबुन के साथ-साथ 50 ग्राम बेकिंग सोडा को पानी में घोलकर घोल तैयार किया जाता है। संक्रमण से बचाव के लिए इस मिश्रण को संक्रमित शाखाओं और आस-पास की शाखाओं पर स्प्रे करना होता है। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि इस रोग का रासायनिक नियंत्रण भी किया जा सकता हैं। किसान इस रोग से प्रभावित गुच्छों पर एक बार मैन्कोजेब, ट्रायोफेनेट मिथाइल या मेटलैक्सिल दवाई का 1 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी वव साथ घोलकर छिडकाव कर सकते हैं।

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 19 अगस्त तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी कर बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में आसमान में बादल छाए रहेंगे। अगले 48 घंटे तक अनेक स्थानों व तराई के कुछ क्षेत्रों में वर्षा हो सकती है। हालांकि पूर्वानुमान के दौरान वर्षा की संभावना में कमी आएगी। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 32 से 34 व न्यूनतम 27 से 29 डिग्री तक रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 18 अगस्त | 29.0 | 25.0 |
| 19 अगस्त | 29.0 | 25.5 |
| | दरभंगा | |
| 18 अगस्त | 29.0 | 25.5 |
| 19 अगस्त | 30.0 | 25.5 |
| | पटना | |
| 18 अगस्त | 31.5 | 26.5 |
| 19 अगस्त | 31.5 | 26.5 |

डिग्री सेल्सियस में

प्रभात खबर 17/8/25 पेज 4

# जीविकोपार्जन का साधन बनी विवि की नवीनतम तकनीक : कुलपति

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित प्रशासनिक भवन के सामने कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने झंडोतोलन कर वैज्ञानिकों तथा किसानों को संबोधित किया. साथ ही कहा राष्ट्रीय गोकुल मिशन के अंतर्गत विश्वविद्यालय की पिपराकोठी इकाई में अत्याधुनिक ओवम पिक-अप और इन विट्रो फर्टिलाइजेशन लैब की स्थापना की गई है. जिसका उद्घाटन 24 फरवरी, 2025 को प्रधानमंत्री के द्वारा किया गया. इसके अंतर्गत अब तक 9 जीवित बछड़ों का जन्म, जो देसी नस्लों के संरक्षण और संवर्धन की दिशा में एक मील का पत्थर है.

यह प्रयास न केवल साहीवाल और गिर जैसी देशी नस्लों को संरक्षित

संबोधित करते कुलपति डॉ . पीएस पांडेय .

करता है, बल्कि हमारे किसानों को वैज्ञानिक तकनीकों से जोड़ने का माध्यम भी बनता है. यह विश्वविद्यालय की इस प्रतिबद्धता का स्पष्ट द्योतक है कि हम केवल प्रयोगशालाओं और शोध पत्रों तक सीमित न रहकर, कृषि आधारित समस्याओं के व्यावहारिक, स्थायी और जमीनी समाधान विकसित करने के लिए सतत प्रयासरत हैं,ताकि अनुसंधान का वास्तविक लाभ हमारे किसानों तक पहुंचे और ग्रामीण भारत की आर्थिक उन्नति सुनिश्चित हो सके. केले की दो किस्में कावेरी कंचन एवं कावेरी वामन को बिहार में खेती के लिए अनुशंसित किया गया है. चतुर्थ कृषि रोड मैप के अंतर्गत अबतक 11 जिलों के 65 प्रखंडों के 300 से अधिक गांवों तक कृषि ज्ञान वाहन 19 हजार से अधिक किसानों को अपनी सेवाएं प्रदान कर चुका है. अपनी यात्रा के दौरान 100 से अधिक जागरूकता कार्यक्रम, कृषि विज्ञान केन्द्रं के द्वारा 50 से ज्यादा प्रशिक्षण सत्र में भाग लिया हैं, जिससे किसानों को उन्नत कृषि तकनीकों, जैविक खेती, मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, कीट व रोग नियंत्रण और जलवायु अनुकूल खेती आदि की जानकारी मिली. भविष्य में इस पहल के साथ मोबाइल एप्स के जरिए रीयल-टाइम कृषिं सलाह और मौसम संबंधित जानकारी प्रदान करने की भी योजना हैं. विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों ने अनुसूचित जनजाति उपयोजना के अंतर्गत मुर्गीपालन, मधुमक्खी पालन, सब्जियों, मशरुम आदि के क्षेत्र में के स्वावलंबन एवं जीविकोपार्जन के लिए उपकरण एवं सामग्री दिए हैं. कृषि विज्ञान केन्द्र, तुर्की द्वारा आईसीएआर कृषि विज्ञान केन्द्र पोर्टल पर प्रथम स्थान अर्जित किया गया. मौके पर विवि के रजिस्ट्रार सहित सभी डीन डायरेक्टर एवं वैज्ञानिक मौज थे.

# मछली पालन के लिए वैज्ञानिक पद्धति को अपनाने की जरूरत, तभी होगा किसानों को लाभ : डॉ. शिवेंद्र

प्रतिनिधि,पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में सोमवार को बेहतर उत्पादन के लिए समेकित मत्स्य पालन विषय पर छह दिवसीय प्रशिक्षण की शुरुआत हुई. अध्यक्षता करते हुए मत्स्यिकी महाविद्यालय ढोली के वैज्ञानिक डॉ. शिवेंद्र कुमार ने कहा कि किसानों को मछली पालन व्यवसाय को बढ़ावा देने के लिए वैज्ञानिकी पद्धति एवं नवीनतम तकनीकों को अपनाने की जरूरत है. अरवल जिला छोटा होने के बावजूद बिहार सरकार के मत्स्य निदेशालय के निर्देशानुसार 40 किसानों को संबोधित करते हुए वैज्ञानिक डॉ. कुमार ने कहा कि अरवल जिला के किसान काफी उद्धमी होते हैं. अरवल

वैज्ञानिक के साथ अरवल के किसान.

में छोटे जिला के बाद भी कृषि के क्षेत्र में अपार संभावनाएं है. बढ़ती हुई आबादी घटता हुई रकवा की दौर में छोटे भूमि से अधिक मुनाफा लेने के लिए खासकर मत्स्यपालकों को डिजिटल फॉर्मिंग की दिशा में तकनीकी रूप से कदम उठाना ही होगा. इसी कड़ी में बायोफ्लॉक विधि ज्यादा लाभकारी होता है. इसमें सभी तकनीकों का कमांड मोबाइल एप्लिकेशन पर आधारित संचालित होता है. बिहार सरकार की ओर से सब्सिडी के आधार पर स्मार्ट एक्वाकल्चर योजना धरातल पर संचालित की जा रही है. मछली पालकों को अब स्मार्ट एक्वा कल्चर विधि की तरफ मुखातिब होना होगा. तभी ही कम लागत में मत्स्य पालन से किसान बेहतर लाभ प्राप्त कर सकते हैं. संचालन करते हुए प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण डॉ. बिनीता सतपथी ने कहा कि इस प्रशिक्षण में पाठ्यक्रम को बहुत ही बारिकी के साथ सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक सत्रों का समावेश किया गया है. बिहार में मछली का उत्पादन पहले से चार गुना अधिक बढ़ा है. किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण में मिलने वाले तकनीकी ज्ञान को मत्स्यपालन में उपयोग करने की आवश्यकता है. मौके पर टेक्निकल सेल के सुरेश कुमार, सूरज कुमार, विक्की कुमार सहित अरवल जिले के मत्स्य प्रखंड पदाधिकारी संतोष कुमार आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Tuesday, August 19, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68a3774270403e8b516ac31a

दैनिक भास्कर 19/8/25 P. 15

खेती-किसानी • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड ने दी जानकारी

# स्वस्थ व आकर्षक फल प्राप्त करने को केले के घौद का करें वैज्ञानिक प्रबंधन

भास्कर न्यूज़ | पूसा

बिहार के वैसे केला उत्पादक किसान जिन्होंने पिछले साल जुलाई के बाद केले के पौधे लगाए होंगे उसमें घौद निकल चुके होंगे। केले के घौद का वजन अच्छा हो एवं उसमे लगे फल स्वस्थ व आकर्षक हो इसके लिए केला उत्पादक किसानों को केले के घौद का वैज्ञानिक प्रबंधन निश्चित रूप से करना चाहिए। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड एवं अखिल भारतीय फल अनुसंधान परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ. संजय कुमार सिंह ने दी है। उन्होंने कहा कि गत वर्ष केला लगाने वाले किसानों ने रोपाई के 7वें महीने बाद केला के मुख्य पौधे से 75 सेंटीमीटर की दूरी पर रिंग बनाकर 150 से 200 ग्राम यूरिया एवं 200 से 250 ग्राम म्यूरेट आफ पोटाश का प्रयोग निश्चित रूप से किया होगा। इससे उन्हें अधिकतम वजन वाले घौद की प्राप्ति होगी। उन्होंने कहा कि केला उत्पादक किसानों को केले के पौधे में हर समय कम से कम 13 से 14 स्वस्थ पत्तियां रखनी चाहिए। पौधे के सूखे एवं रोगग्रस्त पत्तियों को समय-समय पर किसानों को काटकर हटाते भी रहना चाहिए। उन्होंने बताया कि जब केले के पौधे में फूल निकल आएं तभी किसानों को पौधे के बगल में दूसरा पौधा उगने देना चाहिए। उन्होंने कहा कि किसानों को घौद में अंतिम हत्था के निकलने के लगभग एक हफ्ते बाद घौद से निकले नर फूल को 20 से 25 सेमी लंबी डंठल छोड़कर काट देना चाहिए। इस प्रक्रिया के बाद किसानों को 2 प्रतिशत पोटेशियम सल्फेट यानि 20 ग्राम पोटेशियम सल्फेट को प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर इसमें स्टीकर मिलाते हुए घौद पर छिड़काव करना चाहिए। इससे घौद के सभी हत्थों और फलों में बेहतर विकास होता है। इस छिड़काव को किसान 20 से 25 दिनों बाद पुनः दोहराकर और अच्छा रिजल्ट' हासिल कर सकते हैं।

घौद प्रबंधन की दिशा में कवर किया गया फल।

## घौद को ढ़कने से केले के फल का वजन बढ़ता है

उन्होंने कहा कि बिहार के जलवायु में पॉलीथीन कवर से केला के घौद को ढ़कने पर केले के फल का वजन बढ़ता है और घौद एवं हत्था भी काफी आकर्षक बनता है। इतना ही नहीं इस प्रक्रिया को अपनाने के बाद सामान्य से 7 से 8 दिन पहले ही केला के फल परिपक्व हो जाते है। उन्होंने बताया कि केले के घौद को पॉलीथिन से ढकने पर जंगली जानवर नीलगाय से भी काफी बचाव होता है। उन्होंने कहा कि बरसात के समय में निकल रहे घौद को खराब होने से बचाने के लिए छिद्रयुक्त पॉलीथिन से ढकना एक अच्छा विकल्प है। क्योंकि इस समय कीटो की संख्या बहुत अधिक बढ़ जाती है। इस अवस्था में कीटनाशकों का घौद के ऊपर छिड़काव नहीं करें।

## समय- समय पर दवाओं का छिड़काव करें किसान

उन्होंने कहा इन सभी प्रक्रियाओं को पूरा कर तथा समय समय पर दवाओं का छिड़काव कर किसान घौद में फलों के आकार और गुणवत्ता में व्यापक सुधार ला सकते है। उन्होंने बताया की केले का घौद जब तैयार होने की अवस्था में आ जाएं तो किसानों को उसे कवर से ढ़क देना चाहिए। घौद को कवर कर किसान कई तरह के कीट खासकर स्कारिंग बीटल के हमले या किसी भी तरह का चोट लगने से घौद को निश्चित रूप से बचा सकते है। उन्होंने बताया कि केले के घौद को कवर करने वाला पॉलीथिन आसानी से मार्केट में मिल जाता हैं। 100 गेज मोटी सफेद या नीला रंग का पॉलिथीन थैला जिसमे 6 प्रतिशत छेद हो का प्रयोग केले के घौद को कवर कर सुरक्षित रखने में काफी प्रभावी पाया गया है। मुख्य समय घौद में आखिरी हत्था निकलने तथा फूल को काटकर हटाने के 5 से 7 दिन बाद होता हैं।

दैनिक भास्कर - 19/4/24 P-15

# मत्स्यपालन के क्षेत्र में बायोफ्लॉक विधि ज्यादा लाभकारी : डॉ. शिवेंद्र

**पूसा** | डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पुसा के संचार केंद्र भवन में किसानों के लिए मत्स्यपालन में समेकित कृषि प्रणाली को बढ़ावा देने के विषय पर 6 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मत्स्य वैज्ञानिक डॉ. शिवेंद्र कुमार ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर मौजूद प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए मत्स्य वैज्ञानिक डॉ.शिवेंद्र कुमार ने कहा कि अरवल जिला के किसान काफी उद्धमी होते है तथा ये सभी लगनशीलता के साथ मेहनती किसान के परिचायक है। छोटा जिला होने के बाद भी अरवल में कृषि के क्षेत्र में अपार संभावनाएं है। बढ़ती हुई आबादी और घटते हुए रकवा के दौर में छोटे भूमि से अधिक मुनाफा लेने के लिए खासकर मत्स्यपालकों को डिजिटल फॉर्मिंग की दिशा में तकनीकी रूप से कदम उठाना होगा। उन्होंने कहा कि इसी कड़ी में मत्स्यपालन का बायोफ्लॉक विधि ज्यादा लाभकारी है। इसमें सभी तकनीकों का कमांड मोबाइल एप्लिकेशन पर आधारित और संचालित होता है। बिहार सरकार की ओर से सब्सिडी के आधार पर स्मार्ट एक्वा कल्चर योजना धरातल पर संचालित की जा रही है। मछली पालकों को अब स्मार्ट एक्वा कल्चर विधि की तरफ मुखातिब होना होगा जिससे कम लागत में मत्स्य पालन से किसान बेहतर लाभ प्राप्त कर सकेंगे। संचालन करते हुए प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण डॉ. बिनीता सतपथी ने कहा कि इस प्रशिक्षण में पाठ्यक्रम को बहुत ही बारीकी के साथ सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक सत्रों का समावेश किया गया है।

# कृषि विवि पूसा का पुस्तकालय हुआ स्वचालित और डिजिटल

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा का केंद्रीय पुस्तकालय अब पूर्णतया स्वचालित और डिजिटल हो गया है। देश भर में ऐसे कुछ ही विश्वविद्यालय हैं जिनके पुस्तकालय में इस तरह की तकनीक है। बिहार में डिजिटल स्वचालित तकनीक से लैस यह पहला विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.पी एस पांडेय ने कहा कि पुस्तकालय में आरएफआईडी तथा माइलाफ्ट तकनीक लागू कर दी गई है। आरएफआईडी एक वायरलेस पहचान तकनीक है जो रेडियो तरंगों के माध्यम से पुस्तकों की पहचान और ट्रैकिंग करती है। उन्होंने कहा कि इसके उपयोग से पुस्तकालय से पुस्तकों को निर्गत करने और वापस लेने में काफी सहुलयित होगी। पुस्तकों के लेन देन में यह तकनीक एक तेज सटीक और स्वचालित तकनीक है। उन्होंने कहा कि छात्रों को अब पुस्तक लेने के लिए पुस्तकालय सहायक के पास जाने की आवश्यकता नहीं है। वे सीधे सेल्फ से पुस्तकों को सेल्फ चेक इन और चेक आउट मशीन की सहायता से ले सकते हैं और वापस कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय अब छात्रों को हर समय हर जगह उपलब्ध हो इसके लिए माइलाफ्ट तकनीक को भी शुरू कर दिया गया है। माइलाफ्ट तकनीक को माइ लाईब्रेरी आन फिंगरटिप्स भी कहते हैं। इसके शुरू हो जाने से छात्र विश्वविद्यालय की सभी पुस्तकों को डिजिटल फार्म में अपने मोबाइल के माध्यम से भी पढ सकते हैं।

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 19 अगस्त तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी कर बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में आसमान में बादल छाए रहेंगे। अगले 48 घंटे तक अनेक स्थानों व तराई के कुछ क्षेत्रों में वर्षा हो सकती है। हालांकि पूर्वानुमान के दौरान वर्षा की संभावना में कमी आएगी। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 32 से 34 व न्यूनतम 27 से 29 डिग्री तक रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| **समस्तीपुर** | | |
| 19 अगस्त | 29.0 | 25.0 |
| 20 अगस्त | 29.0 | 25.5 |
| **दरभंगा** | | |
| 19 अगस्त | 29.0 | 25.5 |
| 20 अगस्त | 30.0 | 25.5 |
| **पटना** | | |
| 19 अगस्त | 31.5 | 26.5 |
| 20 अगस्त | 31.5 | 26.5 |

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 19-08-02025

# समेकित मछली पालन को बढ़ाना समय की मांग

**पूसा** । डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि से जुड़े मत्सयकी महाविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. शिवेन्द्र कुमार ने कहा कि बदलते समय व छोटे रकबे वाले क्षेत्रों में समेकित मछली पालन को बढ़ाना समय की मांग है। इसके तहत मछली पालन के साथ मुर्गी पालन, बतख पालन जैसे कार्यों को शामिल करने की जरूरत है। इसके विस्तार के लिए मछली पालन की वैज्ञानिक तकनीक को अपनाने की जरूरत है। वे सोमवार को विवि के पंचतंत्र सभागार में अरवल से आये प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। मौका था बेहतर उत्पादन के लिए समेकित मत्स्य पालन विषय पर छह दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र का।

Hindustan 19-08-2025

# पूर्ण स्वचालित व डिजिटल हुआ विवि का पुस्तकालय

**पूसा, निज संवाददाता।** डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि,पूसा का पुस्तकालय अब पूर्णतया स्वचालित और डिजिटल हो गया है। इसके साथ ही विवि का पुस्तकालय देश के चुनिन्दा लाईब्रेरी की श्रेणी में शामिल हो गया है। जहां इस तरह की तकनीक उपलब्ध है। विवि का दावा है कि बिहार में डिजिटल स्वचालित तकनीक से लैस यह पहला विवि है।

कुलपति डॉ.पीएस पांडेय ने बताया कि पुस्तकालय में आरएफआईडी एवं माई लाफ्ट तकनीक लागू कर दी गई है। आरएफआईडी एक वायरलेस पहचान तकनीक है जो रेडियो तरंगों

- **बिहार में डिजिटल स्वचालित तकनीक से लैस बना पहला विवि**

के माध्यम से पुस्तकों की पहचान व ट्रैकिंग करती है। यह एक तेज, सटीक और स्वचालित तकनीक है। इसके उपयोग से पुस्तकालय से पुस्तकों को निर्गत और वापस करना आसान होगा। छात्रों को अब पुस्तकालय सहायक के पास जाने की आवश्यकता नहीं है। वे सेल्फ चेक इन और चेक आउट मशीन की सहायता से पुस्तक ले और वापस कर सकते हैं।

**Hindustan 19-08-2025**

राष्ट्रीय सहारा - 13/11/2021 - 5

# डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय का पुस्तकालय बना स्वचालित व डिजीटल

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के केंद्रीय पुस्तकालय अब पूर्णतया स्वचालित एवं डिजिटल बन गया है। देश भर में ऐसे कुछ ही विश्वविद्यालय है जिसमें यह तकनीक है। बिहार में डिजिटल स्वचालित तकनीक से लैस यह पहला विश्वविद्यालय है। इसको लेकर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने कहा कि पुस्तकालय में आरएफआईडी तथा माइलाफ्ट तकनीक लागू कर दी गई है। आरएफआईडी एक वायरलेस पहचान तकनीक है जो रेडियो तरंगों के माध्यम से पुस्तकों की पहचान और ट्रैकिंग करती है। उन्होंने कहा कि इस तकनीक के कारण छात्रों को अब पुस्तक निर्गत कराने या वापस करने केलिए पुस्तकालय सहायक के पास जाने की आवश्यकता नहीं है। वे सीधे पुस्तकों को सेल्फ चेक इन और चेक आउट मशीन की सहायता से पुस्तक ले सकते है और वापस कर सकते है। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय अब छात्रों को हर समय हर जगह उपलब्ध हो इसके लिए माइलाफ्ट तकनीक को भी शुरू कर दिया गया है। माइलाफ्ट तकनीक को माइ लाईब्रेरी आन फिंगरटिप्स भी कहते है। इसके शुरू हो जाने से छात्र विश्वविद्यालय की सभी पुस्तकों को डिजिटल फार्म में अपने मोबाइल के माध्यम से भी पढ सकते है। विश्वविद्यालय के पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ राकेश मणि शर्मा ने कहा कि इस तरह की अत्याधुनिक तकनीक ज्यादातर विदेशी विश्वविद्यालयों में ही मिलते है। उन्होंने कहा कि इस तकनीक से पुस्तकालय के रखरखाव के खर्च में भी कमी आयेगी और छात्रों को समय की बचत सहित कई अन्य फायदे होंगे। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय में सहायकों की आवश्यकता भी कम हो जायेगी। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में इस वक्त पांच लाख से अधिक पुस्तक उपलब्ध है तथा दुनिया के सबसे बेहतरीन पत्रिका का आनलाइन डाटाबेस मौजूद है। उन्होंने कहा कि राज्य में ऐसी सुविधा और ऐसे शोध जर्नल कही भी उपलब्ध नहीं है। कुलसचिव डॉ मृत्युजय कुमार ने विश्वविद्यालय के लाइब्रेरी को डिजिटल और अत्याधुनिक बनाने को लेकर कुलपति डॉ पांडेय और पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ शर्मा को बधाई दी।

पुस्तकालय भवन।

Times of India - 19/8/24 - P2

# Central library at RPCAU becomes fully automated

B K Mishra | TNN

**Patna:** Rajendra Prasad Central Agricultural University (RPCAU) on Monday launched 'My-Lib@FT' or My Library on Finger Tips App and implemented the Radio Frequency Identification (RFID) technology, making its central library fully digital and automated. This technology enhances efficiency and security for various tasks like tracking library materials, managing inventory, and streamlining check-in/check-out processes, while the app allows readers to access the library remotely.

Addressing university teachers and students on the occasion, RPCAU's vice-chancellor P S Pandey said that the RFID technology would

TOI

The library has a collection of over five lakh books

now enable wireless identification and tracking of books in the library. "This technology will help execute faster, accurate, and automated process of issuing and returning books in the library. Library users can now borrow and return books using self-checkout and return machines, eliminating the need to visit the library assistant," he said.

RPCAU's librarian Rakesh Mani Sharma said that with the technological advancement of the library, the student or faculty members of the university would now be able to have an easy access to the world's best online research journals and databases besides university's own impressive collection of over five lakh books and journals.

# कृषि विवि का पुस्तकालय हुआ स्वचालित व डिजिटल : कुलपति

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में केंद्रीय पुस्तकालय अब पूर्णतया स्वचालित और डिजिटल हो गया है. बिहार में यह इकलौता विश्वविद्यालय है. कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने कहा कि पुस्तकालय में आरएफआईडी व माइलाफ्ट तकनीक लागू कर दी गई है. आरएफआईडी एक वायरलेस पहचान तकनीक है. यह रेडियो तरंगों के माध्यम से पुस्तकों की पहचान और ट्रैकिंग करती है.

उन्होंने कहा कि इसके उपयोग से पुस्तकालय से पुस्तकों को निर्गत कराना और वापस करना एक तेज सटीक और स्वचालित तकनीक से होता है. छात्रों को अब पुस्तकालय सहायक के पास जाने की आवश्यकता नहीं है. वे सीधे सेल्फ से पुस्तकों को सेल्फ चेक इन और चेक आउट मशीन की सहायता से ले सकते हैं. वापस कर सकते हैं. इसके अतिरिक्त पुस्तकालय अब छात्रों को हर समय हर जगह उपलब्ध हो इसके लिए माइलाफ्ट तकनीक को भी शुरू कर दिया गया है. माइलाफ्ट तकनीक को माई लाइब्रेरी आन फिंगरटिप्स भी कहते हैं. इसके शुरू हो जाने से छात्र विश्वविद्यालय की सभी पुस्तकों को डिजिटल फार्म में अपने मोबाइल के माध्यम से भी पढ सकते हैं. पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ राकेश मणि शर्मा ने कहा कि इस तरह की अत्याधुनिक तकनीक ज्यादातर विदेशी विश्वविद्यालयों में ही है.

उन्होंने कहा कि इस तकनीक से पुस्तकालय के रखरखाव के खर्च में भी कमी आयेगी. कुलसचिव डॉ मृत्युंजय कुमार ने विश्वविद्यालय के लाइब्रेरी को डिजिटल और अत्याधुनिक बनाने को लेकर कुलपति और विश्वविद्यालय पुस्तकालय अध्यक्ष को बधाई दिया है. कहा कि विश्वविद्यालय हर क्षेत्र में तरक्की कर है. आने वाले समय में इसकी पहचान दुनिया भर में स्थापित होगी.

प्रभात खबर
Wednesday, August 20, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68a4ca6c2e87a600d9af4f5d

# उत्तर बिहार में दो दिन बाद अच्छी वर्षा की बन रही है संभावना

संस, जागरण, पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार के अनुसार उत्तर बिहार के जिलों में 24 घंटे के अंदर कई स्थानों पर हल्की वर्षा की संभावना है। 22-23 अगस्त को अधिकांश स्थानों पर मध्यम से भारी वर्षा हो सकती है। कुछ स्थानों पर बिजली और गरज के साथ वर्षा होगी। इस दौरान अधिकतम तापमान 33-35 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा। न्यूनतम तापमान 27-29 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है। मंगलवार को अधिकतम तापमान 33 डिग्री एवं न्यूनतम तापमान 26 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। दिन में धूप खिली रही। इस बीच कभी-कभार बादल ने सूर्य की रोशनी को ढक दिया। डा. सत्तार ने बताया कि 20 अगस्त को औसतन 10 से 15 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पुरबा हवा चल सकती है। अन्य दिनों में पछिया हवा चलने की संभावना है।

**किसानों के लिए सुझाव:** विज्ञानी ने सलाह दी है कि धान की 30-35 दिनों की फसल में प्रति हेक्टेयर 30 किलोग्राम नेत्रजन का उपरिवेशन करें। अगात धान की फसल में खैरा बीमारी दिखाई पड़ने पर खेतों में जिंक सल्फेट 5.0 किलोग्राम तथा 2.5 किलोग्राम बुझा चूना का 500 लीटर पानी में घोल बना कर एक हेक्टेयर में

आसमान में छाए बादल • जागरण

छिड़काव आसमान साफ रहने पर करें।

मक्का की खड़ी फसल में तना छेदक कीट की निगरानी करें। यह कीट फसल को काफी नुकसान करता है। इस कीट की सूंडियां पहले कोमल पत्तियों को खाती है तथा मध्य कलिका की पत्तियों के बीच घुसकर उन्हीं से होते हुए तने में पहुच जाती है एवं तने के गूदे को खाती हुई जड़ की तरफ बढ़ती हुई सुरंग बनाती है। इससे बचने के लिए कार्बोफ्यूरान (3 जी) का 7 किलोग्राम/हेक्टेयर की दर से पौधें के गाभा में डालें।

खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेतों को समतल कर प्रत्येक दो क्यारियों के बीच जल निकासी के लिए नालियां बनावें। पंक्ति से पंक्ति की दूरी 15 सेमी एवं पौधे से पौधे की दूरी 10 सेमी पर रोपाई करें। सब्जियों की नर्सरी में लाही, सफेद मक्खी व चूसक कीड़ों की निगरानी करें। ये कीट विषाणु जनित रोग के लिए वाहक का काम करते है।

**Dainik Jagran 20-08-2025**

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 21 अगस्त तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी कर बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में आसमान में बादल छाए रहेंगे। अगले 48 घंटे तक अनेक स्थानों व तराई के कुछ क्षेत्रों में वर्षा हो सकती है। हालांकि पूर्वानुमान के दौरान वर्षा की संभावना में कमी आएगी। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 32 से 34 व न्यूनतम 27 से 29 डिग्री तक रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| समस्तीपुर | | |
| 20 अगस्त | 29.0 | 25.0 |
| 21 अगस्त | 29.0 | 25.5 |
| दरभंगा | | |
| 20 अगस्त | 29.0 | 25.5 |
| 21 अगस्त | 30.0 | 25.5 |
| पटना | | |
| 20 अगस्त | 31.5 | 26.5 |
| 21 अगस्त | 31.5 | 26.5 |

डिग्री सेल्सियस में

**Dainik Jagran 20-08-2025**

# किसानों को दिये गये मिलेट्स की खेती करने के अहम टिप्स

कार्यक्रम में मौजूद लोग .

**प्रतिनिधि, समस्तीपुर**

बाजार समिति, मथुरापुर स्थित संयुक्त कृषि भवन में दो दिवसीय कृषक वैज्ञानिक वार्तालाप कार्यक्रम का आयोजन किया गया. परिचर्चा का विषय समसामायिक, जलवायु अनुकूल एवं मिलेट्स की खेती रखा गया है. इस कार्यक्रम में सभी प्रखंडों से आये 30 किसानों ने भाग लिया. उद्घाटन जिला कृषि पदाधिकारी डॉ. सुमीत सौरभ, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के वरीय वैज्ञानिक डॉ. कौशल किशोर, आत्मा के उपपरियोजना निदेशक गंगेश कुमार चौधरी ने संयुक्त रूप से किया. वैज्ञानिक ने किसानों को मिलेट्स की खेती से होने वाले फायदों के बारे में विस्तार से बताया. कहा कि जलवायु परिवर्तन को को देखते हुये किसान अधिक से अधिक मिलेट्स की खेती करें. उन्होंने मिलेट्स के फायदे और उसकी बढ़ती मांग के बारे में भी बताया. कार्यक्रम का संचालन ताजपुर एटीएम मारूत नंदन शुक्ला कर रहे थे.

प्रभात खबर
Thursday, August 21, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68a61c73d1aa1dbdd8de4403

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 21 अगस्त तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी कर बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में आसमान में बादल छाए रहेंगे। अगले 48 घंटे तक अनेक स्थानों व तराई के कुछ क्षेत्रों में वर्षा हो सकती है। हालांकि पूर्वानुमान के दौरान वर्षा की संभावना में कमी आएगी। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 32 से 34 व न्यूनतम 27 से 29 डिग्री तक रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| **समस्तीपुर** | | |
| 21 अगस्त | 29.0 | 25.0 |
| 22 अगस्त | 29.0 | 25.5 |
| **दरभंगा** | | |
| 21 अगस्त | 29.0 | 25.5 |
| 22 अगस्त | 30.0 | 25.5 |
| **पटना** | | |
| 21 अगस्त | 31.5 | 26.5 |
| 22 अगस्त | 31.5 | 26.5 |

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 21-08-2025

# पशुधन भी प्रगति का आधार

**भारत में बड़ी जनसंख्या पशुपालन और पशु आधारित उद्योगों पर निर्भर है। इस क्षेत्र में प्रयासों का नतीजा है कि आज भारत दुग्ध उत्पादन में पहले पायदान पर है। चुनौतियां हैं, लेकिन पशु नस्ल विकास, पशु रोग जैसे मुद्दों पर बहुत प्रगति हुई है। स्वतंत्रता विशेष शृंखला में भारत के पशुधन क्षेत्र पर आज डालते हैं एक दृष्टि...**

डॉ. पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय
कुलपति, डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर

भारत में पशुधन ग्रामीण आजीविका और पोषण का महत्वपूर्ण साधन है। वर्ष 2019 की पशुधन गणना के अनुसार भारत में पशुओं की कुल संख्या 53.578 करोड़ है। दुग्ध उत्पादनमें भारत पहले स्थान पर है, जो वैश्विक उत्पादन का लगभग 24.76 प्रतिशत है। भारत अंडा उत्पादन में चीन के बाद दूसरे स्थान पर है, जबकि मांस उत्पादन में पांचवें स्थान पर है। पशुधन क्षेत्र में 2014-15 से 2022-23 तक 12.99 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर्ज की गई है। भारत के सकल मूल्यवर्धन में पशुपालन का योगदान वर्ष 2022-23 में लगभग 5.50 प्रतिशत रहा है। यह भारत की लगभग 8.8 प्रतिशत जनसंख्या को रोजगार प्रदान करता है।

## पशुधन विकास के गंभीर प्रयास

वर्तमान सरकार पशुधन विकास को लेकर योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ रही है। पिछले दस वर्षों में दूध उत्पादन में 5.62 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक बढ़त हुई है, जो वर्ष 2014-15 के दौरान 146.31 मिलियन टन से बढ़कर वर्ष 2023-24 में 239.30 मिलियन टन हो गया है। अंडा उत्पादन पिछले दस वर्षों में 6.87 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक दर से बढ़ा है। अंडे की उपलब्धता 2014-15 में प्रति व्यक्ति 62 से बढ़कर 103 अंडे प्रतिवर्ष हो गई है। मांस उत्पादन में भी 5 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि है।

## महत्वपूर्ण योजनाएं

पशुधन विकास को लेकर भारत सरकार की कई महत्वपूर्ण योजनाएं चल रही हैं, इनमें से प्रमुख हैं- राष्ट्रीय गोकुल मिशन, राष्ट्रीय पशुधन मिशन, पशुपालन अवसंरचना विकास निधि, पशुधन स्वास्थ्य और रोग नियंत्रण कार्यक्रम तथा पशु चिकित्सा शिक्षा के लिये महाविद्यालयों का विकास।

**राष्ट्रीय गोकुल मिशन :** इसके तहत देशी नस्लों के विकास और संरक्षण, दुग्ध उत्पादन में वृद्धि तथा उनके आनुवंशिक उन्नयन के कार्य किए जा रहे हैं। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा में इस मिशन के तहत आईवीएफ तकनीक का उपयोग कर उन्नत शाहीवाल नस्ल के बछड़ों को पैदा किया गया है।

**राष्ट्रीय पशुधन विकास योजना :** इस योजना में रोजगार सृजन, उद्यमिता विकास, प्रति पशु उत्पादकता में वृद्धि और मांस, बकरी के दूध, अंडे तथा उनके उत्पादन में वृद्धि को लेकर योजनाबद्ध तरीके से काम किया जा रहा है।

**पशुधन अवसंरचना विकास निधि :** इसकी परिकल्पना व्यक्तिगत उद्यमियों, निजी कंपनियों, एमएसएमई, किसान उत्पाद संगठनों के माध्यम से अवसंरचना विकास पर ध्यान केंद्रित करती है।

**राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम :** पशुओं में रोगों की रोकथाम के लिए राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम वर्ष 2019 में शुरू किया गया है। देश में योग्य पशु-चिकित्सकों की संख्या बढ़ाने के लिए नए पशु-चिकित्सा महाविद्यालयों की स्थापना हुई है।

**पशुधन बीमा योजना :** केंद्र सरकार द्वारा प्रायोजित पशुधन बीमा योजना पशुपालकों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करने में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो रहा है। इस योजना के तहत पशुपालकों को उनके पशुओं की मत्यु एवं नुकसान की स्थिति में प्रति डेयरी मवेशी 60 हजार रुपए तक का बीमा कवरेज प्रदान किया जाता है, जिसमें सरकार प्रीमियम राशि पर लगभग दो तिहाई सब्सिडी प्रदान करती है।

## कुछ चुनौतियां

भारत में पशुधन का विकास तेजी से हुआ है, लेकिन पशुधन उत्पादकता विशेष रूप से डेयरी, मांस और मुर्गी पालन वैश्विक मानकों की तुलना में कम है। उदाहरण के लिए वर्ष 2019-20 में भारत की औसत वार्षिक मवेशी दूध उत्पादकता 1,777 किलो ग्राम प्रति पशु थी, जो वैश्विक औसत 2,699 किलोग्राम (एफएओ, 2019) से काफी कम है। पशुओं की संख्या में वृद्धि के अनुपात में अगले पांच वर्षों में प्रतिवर्ष 2,500 अतिरिक्त पशुचिकित्सक स्नातक तैयार करने की आवश्यकता है।

जलवायु परिवर्तन, अनियमित मौसम और तापमान में वृद्धि एवं चारे की कमी के कारण पशुओं में उत्पादकता प्रभावित हो रही है। पशु स्वयं भी मिथेन उत्सर्जन में योगदान करते हैं, इसलिए आवश्यक है कि जलवायु परिवर्तन एवं पशुओं पर उसके प्रभाव के अध्ययन एवं अनुसंधान पर अधिक निवेश किया जाए। पशुधन अनुवांशिकी, पोषण एवं रोग नियंत्रण के साथ-साथ चारा प्रबंधन में भी अनुसंधान कार्य किए जाने की आवश्यकता है।

पशु चिकित्सा सेवाओं और बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ करते हुए, टीकाकरण कार्यक्रमों एवं नियमित स्वास्थ्य जांच को बढ़ावा के साथ-साथ पशुधन के रोग का शीघ्रता से पता लगाने की प्रणाली का विकास एवं गुणवत्तायुक्त चारे की निरंतर आपूर्ति के लिए, हाइड्रोपोनिक्स तथा साइलेज उत्पादन जैसी आधुनिक तकनीकों तथा चारा प्रसंस्करण इकाइयों की सुदृढ़ीकरण हमारी प्राथमिकताएं हो सकती हैं।

## स्वास्थ्य का एकीकृत दृष्टिकोण

मनुष्यों को होने वाले लगभग 60 प्रतिशत संक्रामक रोग पशु जन्य हैं तथा 75 प्रतिशत उभरते संक्रमण पशुओं से उत्पन्न होते हैं। आवश्यक है कि मानव, पशु और पर्यावरणीय स्वास्थ्य को एकीकृत दृष्टिकोण से अध्ययन किया जाए। पशुजन्य रोगों और प्रति जैविक प्रतिरोधकता जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में निगरानी प्रणाली एवं समावेशित निदान प्रणाली को सुदृढ़ किया जाए।

### कुल पशुधन संख्या

(करोड़ में)

| वर्ष | संख्या |
|---|---|
| 1951 (क्या थी) | 29.29 |
| 2019 (क्या है) | 53.578 |

एक साल में 10 करोड़ गाय-भैंस जन्म कराने का लक्ष्य राष्ट्रीय गोकुल मिशन में

### कुल गोवंश (करोड़ में)

| | |
|---|---|
| 1951 | 19.87 |
| 2025 | 30.7 |

### दुग्ध उत्पादन और उपलब्धता

| वर्ष | उत्पादन * | उपलब्धता** |
|---|---|---|
| 1950-51 | 17 | 130 |
| 2023-24 | 239 | 471 |

30 करोड़ मीट्रिक टन तक करने का लक्ष्य

* मिलियन टन ** प्रति व्यक्ति, ग्राम/ प्रति दिन

### सकल मूल्य वर्धन में पशुधन

| | (हजार करोड़ रुपये) |
|---|---|
| 2011-12 | 1502 |
| 2023-24 | 4878 |

### पशुधन से समृद्धि

- इंडियन वेटरिनरी प्रैक्टिशनर्स रजिस्टर के अनुसार फरवरी 2024 तक देश में पशु चिकित्सकों की संख्या 87,914 थी।
- 28 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में 4016 मोबाइल वेटरिनरी यूनिट (एमवीयू) को शुरू किया गया है। अब तक 62.24 लाख से अधिक किसान और 131.05 लाख से अधिक पशु लाभान्वित हुए।
- राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम का लक्ष्य 2030 तक खुरपका-मुंहपका, ब्रुसेलोसिस और लंपी स्किन डिजीज का उन्मूलन करना है। 99.71 करोड़ से अधिक टीकाकरण किए गए इसके तहत अब तक।

### हमने जो सोचा है

किसानों को अपनी आय बढ़ाने के लिए पशुधन का उपयोग करना चाहिए। पशुधन न केवल दूध और अन्य उत्पादों का उत्पादन करता है, बल्कि आपात स्थिति में एक संपत्ति की तरह सहायक बनता है। देश के विकास में पशुधन एक अहम कारक है।

## गरीबों का बैंक पशुधन

**चौधरी चरण सिंह**

पशुधन किसानों की संपत्ति है और किसानों की आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। पशुधन का उचित प्रबंधन और देखभाल किसानों के आर्थिक कल्याण के लिए आवश्यक है।

ये 'गरीबों का बैंक' है, क्योंकि यह न केवल दूध और अन्य उत्पादों का स्रोत बनता है, बल्कि किसानों को आपात स्थिति में बेचने के लिए एक संपत्ति भी प्रदान करता है। किसानों को अपनी आय बढ़ाने के लिए पशुधन का उपयोग करना चाहिए। पशुधन का उचित प्रबंधन, जिसमें उचित चारा, आश्रय और चिकित्सा देखभाल शामिल है, किसानों के आर्थिक कल्याण के लिए आवश्यक है।

किसान पशुधन के महत्व को समझें और उनकी उचित देखभाल करें। -संपादित अंश

## ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए जरूरी पशुधन

**वर्गीज कुरियन**

पशुधन गरीबी उन्मूलन और किसानों की आय बढ़ाने का एक महत्वपूर्ण साधन है। सहकारी समितियों के माध्यम से पशुधन को संगठित करने और डेयरी किसानों को सशक्त बनाने के प्रयास होने चाहिए। पशुधन किसानों की आय और जीवन स्तर को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है। पशुधन से होने वाली आय से ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार हो सकता है। पशुधन की उत्पादकता में सुधार पर ध्यान दिया जाना चाहिए, उन्नत प्रजनन, पोषण और प्रबंधन प्रथाओं को बढ़ावा मिले, जिससे डेयरी किसानों को अधिक दूध और अन्य पशुधन उत्पादों का उत्पादन करने में मदद मिल सके।

संपादित अंश

# हृदय को स्वस्थ व कैंसर से बचाता है अमरूद का सेवन

**पूसा, निज संवाददाता।** ताज़ा अमरूद का सेवन हृदय को स्वस्थ व कैंसर जैसे रोगों से बचाव करता है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के वैज्ञानिक सह ईख अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. देवेन्द्र सिंह की मानें तो इसमें पोटैशियम और फाइबर पाया जाता है। जो रक्तचाप और कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करता हैं। एंटीऑक्सीडेंट्स हृदय को मज़बूत बनाते हैं।

इसमें लाइकोपीन, क्वेरसेटिन और विटामिन सी तत्व कोशिकाओं को नुकसान से बचाते हैं। जिससे प्रोस्टेट, स्तन और कोलन कैंसर का जोखिम कम करता है। उन्होंने कहा कि अमरूद में संतरे से 4-5 गुना विटामिन अत्यधिक मात्रा में पाया जाता है जो रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। इससे शरीर को संक्रमण, सर्दी-जुकाम और बीमारियों से लड़ने की शक्ति मिलती है। इसके अलावा अमरूद में रेशा (फाइबर) प्रचुर मात्रा में होता है। जो कब्ज़ को दूर करता है।

Dainik Jagran 21-08-2025

# 22-23 को वज्रपात और मध्यम से भारी वर्षा की संभावना

**समस्तीपुर।** डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र द्वारा जारी अगामी 24 अगस्त, 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार-पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में मध्यम से घने बादल छा सकते है। अगले 24 घंटो में अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा होने का अनुमान है। इस बाबत जानकारी देते हुए जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र के नोडल ऑफिसर डॉ अब्दुल सत्तार ने बताया है कि, 22-23 अगस्त को उत्तर बिहार के जिलों में अधिकांश स्थानों पर मध्यम से भारी वर्षा हो सकती है, कुछ स्थानों पर बिजली और गरज के साथ वर्षा हो सकती है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 33 से 36 दियी सेल्सियस के बीच रह सकता है। न्यूनतम तापमान 27 से 29 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है। सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 प्रतिशत के आसपास तथा दोपहर में 40 से 45 प्रतिशत रहने की संभावना है। वहीं पूर्वानुमानित अवधि में 20 अगस्त को औसतन 10 से 15 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पूरवा हवा चल सकती है। अन्य दिनों में पछिया हवा चलने की संभावना है।

राष्ट्रीय सहारा-21/8/25 P-5

भास्कर 23/8/25 पेज 17

मौसम • अधिकतम तापमान 30-32 डिग्री व न्यूनतम तापमान 26-28 डिग्री सेल्सियस रह सकता है

# 24-25 को उत्तर बिहार के जिलों में मध्यम बारिश के आसार, 10-15 किमी की रफ्तार से चलेगी हवा

सिटी रिपोर्टर | समस्तीपुर

27 अगस्त तक हल्की से मध्यम बदल देखे जा सकते हैं। 24-25 अगस्त के आसपास सारण, समस्तीपुर, वैशाली, बेगूसराय, गोपालगंज, सिवान, पूर्वी चम्पारण एवं पश्चमी चम्पारण के जिलों में कुछ स्थानों पर मध्यम वर्षा हो सकती है। डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा मौसम विभाग के वैज्ञानिक के अनुसार इस अवधि में अधिकतम तापमान 30-32 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। न्यूनतम तापमान 26-28 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है। वहीं सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 प्रतिशत के आसपास तथा दोपहर में 40 से 45 प्रतिशत रहने की संभावना है। इस बीच पूर्वानुमानित अवधि में 23 अगस्त को औसतन 10 से 15 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चल सकती है। उसके बाद अन्य दिनों में पूर्वा हवा चलने की संभावना है। धान की फसल में खैरा बीमारी दिखाई पड़ने पर खेतों में जिंक सल्फेट 5.0 किलोग्राम तथा 2.5 किलोग्राम बुझा चूना का 500 लीटर पानी में घोल बना कर एक हेक्टेयर में छिड़काव आसमान साफ रहने पर ही करें। पिछात धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दें।

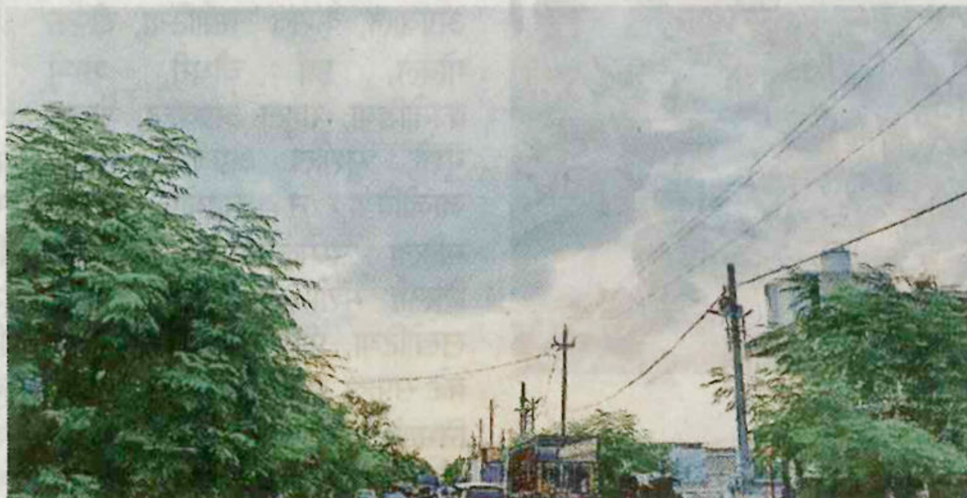

आसमान में छाए बादल।

## धान की फसल में तना छेदक कीट का प्रकोप बढ़ा, करें निगरानी

अगात धान की फसल में तना छेदक कीट की निगरानी करें। तना छेदक कीट दिखने पर बचाव के लिए फेरोमोन ट्रैप की 12 ट्रैप प्रति हेक्टेयर का प्रयोग करे। खेतों में 5 प्रतिशत क्षतिग्रस्त पौधे दिखाई देने पर करताप हाईड्रोक्लोराईड दाने-दार दवा का अथवा फिप्रोनिल 0.3 जी का 10 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से व्यवहार करें। सितम्बर अरहर की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। किसान 25 अगस्त के बाद इसकी बुआई कर सकते हैं। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलोग्राम नेत्रजन, 45 किलोग्राम स्फुर, 20 किलोग्राम पोटाश तथा 20 किलोग्राम सल्फर का व्यवहार करें। अरहर की पूसा 9 तथा शरद प्रभेद उत्तर बिहार के लिए अनुशंसित है। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्वर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए।

भास्कर 23/8/25 पेज 19

**उपलब्धि • इस केंद्र की सहायता से 69 से अधिक नए स्टार्ट अप और उद्यम स्थापित किए गए, बढ़ा रोजगार**

# डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कृषि नवाचार और उद्यमिता केंद्र को मिला बिहार में प्रथम स्थान

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कृषि नवाचार और उद्यमिता केंद्र (एग्री इनोवेशन एंड इनक्यूबेशन सेंटर) को बिहार सरकार के उद्योग विभाग की ओर से राज्य के विभिन्न स्टार्ट अप केंद्रों में प्रथम स्थान दिया गया है। स्टार्टअप बिहार कार्यक्रम के तहत इस परियोजना में बिहार के 46 स्टार्टअप सेल ने भाग लिया था जिसमें से विश्वविद्यालय के केंद्र को नंबर 1 का स्थान दिया गया है। कुलपति डॉ.पी एस पांडेय ने इस पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि इस केंद्र को 2023 में कृषि में उद्यमिता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बनाया गया है। लगभग दो वर्षों से भी कम समय में इस केंद्र की सहायता से 69 से अधिक नये स्टार्ट अप और उद्यम स्थापित किये गये हैं जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है। उन्होंने कहा कि इस सफलता में इस केंद्र के कार्यक्रम प्रमुख डॉ.रामदत्त और उनकी टीम का प्रमुख योगदान हैं। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक समर्पित भाव से किसानों के हित के लिए निरंतर सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं जिसके परिणामस्वरूप विश्वविद्यालय विभिन्न मंचों पर प्रथम स्थान प्राप्त कर रहा है। डॉ. रामदत्त, फैकल्टी इंचार्ज (इनक्यूबेशन केन्द्र) ने बताया कि विश्वविद्यालय के एग्री इनोवेशन एंड इनक्यूबेशन केंद्र की सहायता से 69 स्टार्टअप्स सफलतापूर्वक कार्य कर रहे हैं। इस केंद्र के माध्यम से मुख्य रूप से बिहार की पारंपरिक वस्तुओं जैसे मखान, चावल, बागवानी के उत्पाद, शहद, गुड़, बांस और औषधीय पौधों से संबंधित उद्यम और उत्पाद को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसके अतिरिक्त इनक्यूबेशन केंद्र की ओर से लगभग 163 मार्गदर्शन और आउटरीच कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं जिससे छात्रों, ग्रामीण युवाओं और महिलाओं को नवीन उद्यम शुरू करने के लिए प्रेरित किया गया है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक शहद प्रसंस्करण, मशरूम उत्पादन, संरक्षित खेती, बीज प्रौद्योगिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण जैसे क्षेत्रों में विभिन्न स्टार्ट अप से जुड़े युवाओं और उद्यमियों को उच्च स्तरीय सलाह प्रदान कर रहे हैं। विश्वविद्यालय भविष्य में इस केंद्र में अत्याधुनिक खाद्य प्रसंस्करण सुविधा स्थापित करने की योजना पर भी कार्य कर रहा है जिससे कि स्टार्टअप्स के माध्यम से युवाओं को विभिन्न प्रसंस्कृत नवीन उत्पादों को विकसित करने और उन्हें देश विदेश में व्यापार करने में आसानी हो सके।

पूसा विवि का परिसर।

दैनिक जागरण 23/8/25 पेज 5

# उत्तर बिहार के कई जिलों में अगले दो दिनों में मध्यम वर्षा की संभावना

संस, जागरण, पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार उत्तर बिहार के विभिन्न जिलों में अगले दो दिनों में अच्छी वर्षा की संभावना है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार ने बताया कि 24 एवं 25 अगस्त के आसपास आसमान में हल्के से मध्यम बादल रहेंगे। सारण, समस्तीपुर, वैशाली, बेगूसराय, गोपालगंज, सिवान, पूर्वी चम्पारण एवं पश्चिमी चम्पारण के जिलों में कुछ स्थानों पर मध्यम वर्षा हो सकती है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 30-32 डिग्री सेल्सियस के बीच एवं न्यूनतम तापमान 26-28 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रहेगा। मौसम

- 24 व 25 के आसपास आसमान में हल्के से मध्यम बादल रहेंगे
- अधिकतम 30-32 व न्यूनतम 26-28 डिग्री सेल्सियस रहेगा तापमान

विभाग के द्वारा शुक्रवार का अधिकतम तापमान 32.2 एवं न्यूनतम तापमान 25.5 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। 23 अगस्त को औसतन 10 से 15 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलेगी। उसके बाद अन्य दिनों में पूर्वी हवा चलने की संभावना है।

**किसानों के लिए विभिन्न सुझाव :** धान की फसल में खैरा बीमारी दिखाई

पड़ने पर खेतों में जिंक सल्फेट 5.0 किलोग्राम तथा 25 किलोग्राम बुझा चूना का 500 लीटर पानी में घोल बना कर एक हेक्टेयर में छिडकाव आसमान साफ रहने पर ही करें। पिछात धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दें।

अगात धान की फसल में तना छेदक कीट की निगरानी करें। तना छेदक कीट दिखने पर बचाव के लिए फेरोमोन ट्रैप की 12 ट्रैप प्रति हेक्टेयर का प्रयोग करें। खेतों में 5 प्रतिशत क्षतिग्रस्त पौधे दिखाई देने पर हाईड्रोक्लोराईड दाने-दार दवा का अथवा फिप्रोनिल 0.3 जी का 10 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से व्यवहार करें।

अरहर की बुआई के लिए खेत की तैयारी करे। 25 अगस्त के बाद इसकी बुआई की जाएगी। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलोग्राम नेत्रजन 45 किलोग्राम स्फुर, 20 किलोग्राम पोटाश तथा 20 किलोग्राम सल्फर का व्यवहार करें। अरहर की पूसा 9 तथा शरद प्रभेद उत्तर बिहार के लिए अनुसंशित है। बुआई के 24 घंटे बीज का उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेतों को समतल कर छोटी-छोटी उथली क्यारियों बनाएं। जिसकी चौड़ाई 2 मीटर एवं लम्बाई से 5 मीटर तक रख सकते हैं। प्रत्येक दो क्यारियों के बीच जल निकास के लिए नाली अवश्य बनाएं। पंक्ति से पंक्ति की दूरी 15 सेमी, पौधे से पौधे की दूरी 10 सेमी पर रोपाई करें।

हल्दी, अदरक, ओल और बरसाती सब्जियों में आवश्यकतानुसार निकाई-गुड़ाई करें। इन फसलों में कीट-व्यांधि का निरीक्षण करते रहें।

## आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 25 अगस्त तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में बादल छाए रह सकते हैं। अगले 48 घंटे तक अनेक स्थानों पर वर्षा होने की संभावना है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस दौरान पुरवा हवा चलेगी लेकिन तापमान में गिरावट की संभावना नहीं है। उन्होंने कहा कि अच्छी बारिश होने से गर्मी व उमस से कुछ राहत मिल सकती है।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| समस्तीपुर | | |
| 23 अगस्त | 29.0 | 25.0 |
| 24 अगस्त | 29.0 | 25.5 |
| दरभंगा | | |
| 23 अगस्त | 29.0 | 25.5 |
| 24 अगस्त | 30.0 | 25.5 |
| पटना | | |
| 23 अगस्त | 31.5 | 26.5 |
| 24 अगस्त | 31.5 | 26.5 |

डिग्री सेल्सियस में

दैनिक जागरण 23/8/25 पेज 5

# गाजर घास मनुष्य व पशुओं के लिए भी हानिकारक

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में गाज़र घास उन्मूलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय में गाजर घास उन्मूलन का यह अभियान प्रत्येक वर्ष छात्रों व कर्मचारियों की मदद से पहले से ही चलाया जा रहा है।

गाजर घास के बारे में हमें अपने आसपास के लोगों को भी जागरूक करने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि यह गाजर घास वर्ष 1950 में गेंहू के बीज के साथ भारत में पहुंचा था। इसके बाद से देश में यह घास लगातार बढ़ता ही चला गया। इस घास के अनेक तरह के हानिकारक परिणाम हैं। उन्होंने कहा कि गाजर घास आमतौर पर सड़क के किनारे, रेलवे ट्रैक के किनारे, बंजर भूमि में, नदियों के घाट किनारे सहित 35 मिलियन हेक्टेयर भूमि के क्षेत्रफल को

गाजर घास उखड़ते कुलपति। • जागरण

प्रभावित कर रहा है। यह बहुत ही खतरनाक खरपतवार है। पशु अगर इसे खा ले तथा मनुष्य अगर इसके संपर्क में आ जाएं तो यह दोनों को व्यापक स्तर पर नुकसान पहुंचा सकता है।

पशु अगर इसका सेवन कर ले तो पशुओं में अत्यधिक लार बनने लगता है। पशु को दस्त होने के साथ-साथ उसके मुँह में छाले पड़ जाते है। गाजर घास का उन्मूलन करना बहुत ही आवश्यक है। कुलपति ने सभी को इसके नियंत्रण के लिए कई तरह के उपाय भी बताए। उन्होंने कहा कि हम सब को मिलकर गाजर घास मुक्त कैंपस बनाना है। निदेशक अनुसंधान डॉ. एके सिंह ने कहा कि गाजर घास मनुष्य व पशुओं में त्वचा रोग, अस्थमा रोग, ब्रोकाईटिस आदि रोग का कारण भी बनता हैं। गाजर घास के पौधें में फूल आने से पहले ही इसे उखाड़कर फेंक दें। उन्होंने कहा कि गाजरघास का उन्मुलन अत्यंत आवश्यक है जिससे कि पर्यावरण, मनुष्य व पशुओं को इससे होने वाले दुष्प्रभाव से बचाया जा सके। कार्यक्रम के दौरान अघिष्ठाता स्नातकोत्तर कृषि महाविद्यालय ने बताया कि फुल आने से पहले इस खरपतवार को उखाड़कर कम्पोस्ट या वर्मीकम्पोस्ट बना लें अन्यथा इससे अन्य तरीके की बीमारियाँ जन्म ले लेती हैं। इसके सम्पर्क में आने से खुजली तथा साँस फुलने जैसी बीमारी भी हो जाती है। कार्यक्रम के दौरान मंच का संचालन तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. मुकेश कुमार ने किया। मौके पर डॉ. आरके झा, डा. विपिन कुमार, डा. संजय कुमार चौधरी, प्रधान शस्य डॉ. देवेन्द्र सिंह, डा. सीके झा, अनिल कुमार शर्मा आदि मौजूद थे।

हिन्दुस्तान 23/8/ 25 पेज 4

# कृषि नवाचार और उद्यमिता केंद्र को मिला प्रथम स्थान

पूसा, निसं। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि, पूसा के कृषि नवाचार और उद्यमिता केंद्र (एग्री इनोवेशन एंड इनक्यूबेशन सेंटर) ने राज्य में प्रथम स्थान पाया है। यह सम्मान बिहार सरकार के उद्योग विभाग की ओर से राज्य के विभिन्न स्टार्ट अप केंद्रों के कार्यों के आकलन के बाद दिया गया है। विवि से मिली जानकारी के अनुसार राज्य के 46 स्टार्टअप सेल इस परियोजना में भाग ले रहे हैं।

इसको लेकर कुलपति डॉ.पीएस पांडेय ने बताया कि इस केंद्र को वर्ष 2023 में कृषि में उद्यमिता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बनाया गया है। लगभग दो वर्षों से भी कम समय में इस केंद्र की सहायता से 69 से अधिक नये स्टार्ट अप और उद्यम स्थापित किये गये हैं। जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है। उन्होंने कहा कि इसकी सफलता में केंद्र के कार्यक्रम प्रमुख डॉ. रामदत्त और उनकी टीम बधाई के पात्र हैं। केन्द्र प्रमुख डॉ. राम दत्त ने बताया कि इस केंद्र के माध्यम से मुख्य रूप से बिहार के पारंपरिक वस्तुओं में शामिल मखाना, चावल, बागवानी के उत्पाद, शहद, गुड़, बांस और औषधीय पौधों से संबंधित उद्यम और उत्पाद को बढ़ावा दिया जा रहा है।

हिन्दुस्तान 23/8/25 पेज 4

# 'अस्थामा को जन्म देती है गाजर घास'

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय ने कहा कि गाजर घास खतरनाक खरपतवार है। यह मनुष्य एवं पशुओं में त्वचा रोग, अस्थामा, ब्रोकाईटिस जैसी स्वास्थ्य समस्याओं को जन्म देता हे।

इसके सेवन से पशुओं में अत्यधिक लार, दस्त के साथ मुंह में छाले हो जाते हैं। इसे सामूहिक प्रयास से उन्मूलन करने की जरूरत है। इसके लिए जागरूक होकर संकल्पित भाव से कार्य करने की जरूरत है। वे शुक्रवार को विवि परिसर में आयोजित गाजर घास उन्मूलन पर आयोजित जागरूकता कार्यक्रम के मौके पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि गाजर घास का फूल आने से पहले ही उसे उखाड़ फेंकने की जरूरत है।

जिससे उसका फैलाव ना हो सके। उन्होंने एक वर्ष में गाजर घास मुक्त कैंपस बनाने का संकल्प दिलाया। निदेशक अनुसंधान (डीआर) डॉ.अनिल कुमार सिंह ने कहा कि देश में करीब 35 मिलियन हेक्टेयर में गाजर घास फैला है। यह वर्ष 1950 में गेहूं के बीज के साथ भारत आ गया था। यह प्रायः सड़क, रेलवे ट्रैक, बंजर भूमि, उद्यान आदि स्थलों पर फैला रहता है। इसके निवारण के लिए जागरूकता जरूरी है। संचालन डॉ. मुकेश कुमार ने किया।

शुक्रवार को विवि परिसर में गाजर घास उखाड़ते कुलपति, निदेशक व अन्य। • हिन्दुस्तान

## संकल्पित भाव से करें गाजर घास उन्मूलन का सामूहिक प्रयास

मौके पर ईख अनुसंधान संस्थान, पूसा के निदेशक डॉ. देवेन्द्र सिंह, एमबीए के निदेशक डॉ. रामदत्त, डॉ. आरके झा, डॉ. विपीन कुमार, डॉ. सीके झा, डॉ. संजय कुमार चौधरी समेत अन्य वैज्ञानिक मौजूद थे। इस दौरान विवि परिसर में जागरूकता रैली भी निकाली गई।

# 24-25 के आसपास हो सकती है मध्यम वर्षा

पूसा। उत्तर बिहार के जिलों में अगले चार दिनों तक हल्की से मध्यम बादल रह सकते हैं। इस दौरान 24-25 अगस्त के आसपास समस्तीपुर, वैशाली, सारण, बेगूसराय, गोपालगंज, सिवान, पूर्वी एवं पश्चमी चम्पारण के जिलों में कुछ स्थानों पर मध्यम वर्षा हो सकती है। इस दौरान 23 अगस्त को औसतन 10 से 15 किमी प्रति घंटा की गति से पछुआ हवा चल सकती है।उसके बाद अन्य दिनो में पुरवा हवा चलने की संभावना मौसम विभाग ने जताया है।

हिन्दुस्तान 23/8/25 पेज 4

प्रभात खबर 23/8/25 पेज 4

# गाजर घास उन्मूलन को ले जागरूकता जरूरी : कुलपति

जागरुकता में शामिल कुलपति डा पीएस पांडेय.

प्रतिनिधि, पूसा

डा राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में 20वें जागरूकता सप्ताह के तहत गाजर घास उन्मूलन कार्यक्रम किया गया. कुलपति डा पीएस पांडेय ने कहा कि गाजर घास के बारे में हमें अपने साथ साथ औरों को भी जागरूक करने की जरूरत है. निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह ने बताया कि यह गाजर घास सन 1950 में गेंहू के बीज के साथ यह घास भारत आ गया. इसके अनेक तरह के हानिकारक परिणाम हैं.

गाजर घास बहुत ही खतरनाक खरपतवार है, क्योंकि यह मनुष्यों और पशुओं में त्वचा रोग, अस्थमा और ब्रोंकाइटिस जैसी स्वास्थय समस्याओं का कारण बनता है. इसके सेवन से पशुओं में अत्यधिक लार और दस्त के साथ मुंह में छाले हो जाते हैं. गाजर घास का उन्मूलन करना बहुत ही आवश्यक है. कुलपति ने बताया कि फूल आने से पहले इस खरपतवार को उखाड़कर फेंक दें. निदेशक अनुसंधान डा अनिल कुमार सिंह ने कहा कि गाजर घास का उन्मूलन अत्यंत आवश्यक है. कार्यक्रम के दौरान मंच का संचालन व धन्यवाद ज्ञापन डा मुकेश कुमार ने किया. कार्यक्रम के दौरान डा आरके झा, प्रोजेक्ट डायरेक्टर सीएएससीसी एवं डा विपिन कुमार, डिप्टी डायरेक्टर पूसा फार्म, डा संजय कुमार चौधरी, प्रधान शस्य, डा देवेन्द्र सिंह, डा सीके झा, अनिल कुमार शर्मा मौजूद थे.

प्रभात खबर 23/8/25 पेज 4

# कृषि नवाचार व उद्यमिता केंद्र को बिहार में प्रथम स्थान

- बिहार सरकार के उद्योग विभाग की ओर से दिया गया सम्मान

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कृषि नवाचार और उद्यमिता केंद्र को बिहार सरकार के उद्योग विभाग की ओर से राज्य के विभिन्न स्टार्ट अप केंद्रों में प्रथम स्थान दिया गया है. स्टार्टअप बिहार कार्यक्रम के तहत इस परियोजना में बिहार के 46 स्टार्टअप सेल ने भाग लिया था. इसमें से विश्वविद्यालय के केंद्र को नंबर 1 का स्थान दिया गया है. कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने इस पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि इस केंद्र को 2023 में कृषि में उद्यमिता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बनाया गया है.

लगभग दो वर्षों से भी कम समय में इस केंद्र की सहायता से 69 से अधिक नये स्टार्ट अप और उद्यम स्थापित किये गये हैं जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है. उन्होंने कहा कि इस सफलता मे इस केंद्र के कार्यक्रम प्रमुख डॉ रामदत्त और उनकी टीम बधाई के पात्र हैं. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक समर्पित भाव से किसानों के हित में लगातार सक्रिय हैं. जिसके परिणामस्वरूप विश्वविद्यालय विभिन्न मंचों पर प्रथम स्थान प्राप्त कर रहा है.

डॉ रामदत्त, फैकल्टी इंचार्ज, इनक्यूबेशन केन्द्र ने बताया कि विश्वविद्यालय का एग्री इनोवेशन एंड इनक्यूबेशन केंद्र की सहायता से 69 स्टार्टअप्स सफलतापूर्वक कार्य कर रहे हैं. इस केंद्र के माध्यम से मुख्य रूप से बिहार की पारंपरिक वस्तुओं जैसे मखान, चावल, बागवानी के उत्पाद, शहद, गुड़, बांस और औषधीय पौधों से संबंधित उद्यम और उत्पाद को बढ़ावा दिया जा रहा है. इसके अतिरिक्त इनक्यूबेशन केंद्र की ओर से लगभग 163 मार्गदर्शन और आउटरीच कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं. इससे छात्रों, ग्रामीण युवाओं और महिलाओं को नवीन उद्यम शुरू करने के लिए प्रेरित किया गया है.

विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक शहद प्रसंस्करण, मशरूम उत्पादन, संरक्षित खेती, बीज प्रौद्योगिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण जैसे क्षेत्रों में विभिन्न स्टार्ट अप से जुड़े युवाओं और उद्यमियों के सलाह प्रदान कर रहे हैं. विश्वविद्यालय भविष्य में इस केंद्र में अत्याधुनिक खाद्य प्रसंस्करण सुविधा स्थापित करने की योजना पर भी कार्य कर रहा है. जिससे कि स्टार्टअप्स के माध्यम से युवाओं को विभिन्न प्रसंस्कृत नवीन उत्पादों को विकसित करने और उन्हें देश विदेश में व्यापार करने में आसानी हो सके.

राष्ट्रीय सहारा 23/8/25 पेज 5

# गाजर घास का उन्मूलन जरूरी : कुलपति

**पूसा (एसएनबी)**। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के परिसर में गाजर घास उन्मुलन जागरूकता सप्ताह के तहत, घास उन्मूलन से जुड़े कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने कहा कि गाजरघास एक दुष्प्रभावी खरपतवार है। जो मनुष्य व पशु में त्वचा रोग का कारण बनता है। वहीं अस्थमा और ब्रोंकाइटिस जैसी बिमारी को भी उत्पन्न करता है। इस लिए गाजरघास का उन्मुलन करना जरूरी है। उन्होंने ने कहा कि फूल आने से पहले इसे उखाड़कर हटाने की जरूरत है। उन्होंने ने घास के नियंत्रण से जुड़े अन्य जानकारी दिया। और कहा कि हम सभी प्रण करें कि कैंपस को गाजरघास मुक्त बनायेंगे। उन्होंने ने कहा कि विश्वविद्यालय परिसर में गाजर घास उन्मूलन कार्यक्रम प्रत्येक वर्ष छात्रों व कर्मचारियों द्वारा कार्यक्रम चलाया जाता है।

गाजर घास उन्मूलन कार्यक्रम में वीसी व अन्य।

निर्देशक अनुसंधान डॉ एके सिंह ने कहा कि गाजरघास का उन्मुलन कर पर्यावरण एवं मनुष्य व पशुओं को इसकी होने वाले दुष्प्रभाव से बचाया जा सकता है। इस कार्यक्रम का आयोजन अनुसंधान निदेशालय की ओर से किया गया था कार्यक्रम का संचालन अधिष्ठाता स्नातकोत्तर कृषि महाविद्यालय डॉ मयंक राय ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ मुकेश कुमार ने किया। मौके पर डॉ आरके झा, डॉ विपिन कुमार, डॉ संजय कुमार चौधरी, डॉ देवेन्द्र सिंह, डॉ सीके झा, कुलपति के सचिव अनिल कुमार शर्मा सहित वैज्ञानिक, पदाधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे।

राष्ट्रीय सहारा 23/8/25 पेज 5

# डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कृषि नवाचार और उद्यमिता केंद्र को मिला बिहार में प्रथम स्थान

**पूसा (एसएनबी)।** डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कृषि नवाचार और उद्यमिता केंद्र को बिहार सरकार के उद्योग विभाग की ओर से राज्य के विभिन्न स्टार्ट अप केंद्रों में प्रथम स्थान दिया गया है। स्टार्टअप बिहार कार्यक्रम के तहत इस परियोजना में बिहार के 46 स्टार्टअप सेल ने भाग लिया था, जिसमें से विश्वविद्यालय के केंद्र को नंबर 1 का स्थान दिया गया। इस को लेकर वि वि के कुलपति डॉ पी एस पांडेय ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि इस केंद्र को 2023 में कृषि में उद्यमिता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बनाया गया था। लगभग दो वर्षो से भी कम समय में इस केंद्र की सहायता से 69 से अधिक नये स्टार्ट अप और उद्यम स्थापित किया गया है जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है। उन्होंने कहा कि इस सफलता मे इस केंद्र के कार्यक्रम प्रमुख डॉ रामदत्त और उनकी टीम बधाई के पात्र है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक समर्पित भाव से किसानों के हित में लगातार सक्रिय है, जिसके परिणामस्वरूप विश्वविद्यालय विभिन्न मंचों पर प्रथम स्थान प्राप्त कर रहा है। इनक्यूबेशन केन्द्र फैकल्टी इंचार्ज,डॉ रामदत्त, ने कहा कि विश्वविद्यालय के एग्री इनोवेशन एंड इनक्यूबेशन केंद्र की सहायता से 69 स्टार्टअप्स सफलतापूर्वक कार्य कर रहा है। वही इस केंद्र के माध्यम से मुख्य रूप से बिहार की पारंपरिक वस्तुओं जैसे मखान, चावल, बागवानी के उत्पाद, शहद, गुड़, बांस और औषधीय पौधों से संबंधित उद्यम और उत्पाद को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसके अतिरिक्त इनक्यूबेशन केंद्र की ओर से लगभग 163 मार्गदर्शन और आउटरीच कार्यक्रम आयोजित किया गया है, जिसमें छात्रों, ग्रामीण युवाओं और महिलाओं को नवीन उद्यम शुरू करने के लिए प्रेरित किया गया है। वही विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक शहद प्रसंस्करण, मशरूम उत्पादन, संरक्षित खेती, बीज प्रौद्योगिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण जैसे क्षेत्रों में विभिन्न स्टार्ट अप से जुड़े युवाओं और उद्यमियों के सलाह प्रदान कर रहे है। विश्वविद्यालय भविष्य में इस केंद्र में अत्याधुनिक खाद्य प्रसंस्करण सुविधा स्थापित करने की योजना पर भी कार्य कर रहा है, जिससे स्टार्टअप्स के माध्यम से युवाओं को विभिन्न प्रसंस्कृत नवीन उत्पादों को विकसित करने और उन्हें देश विदेश में व्यापार करने में आसानी हो सके।

विश्वविद्यालय का विहंगम दृश्य।

राष्ट्रीय सहारा 23/8/25 पेज 5

# उत्तर बिहार के कुछ जिलों में कुछेक स्थानों पर हो सकती है मध्यम वर्षा

**समस्तीपुर।** अगले 5 दिनों में आसमान में हल्के व मध्यम बादल मंडराते दिखेंगे। बादलों व सुर्य की आंख मिचौली के बीच धरती पर धूप छांव का खेल चलता रहेगा। इसी बीच उत्तर बिहार के कुछ जिलों में कुछेक स्थानों पर मध्यम वर्षा होने की संभावना है। इस संबंध में जिले के डॉ राजेन्द्र प्रसाद कृषि विश्वविद्यालय पूसा के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जलवायू परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र द्वारा जारी अगामी 27 अगस्त, 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार पूर्वानुमानित अवधि में आसमान में हल्की से मध्यम बादल देखे जा सकते है. 24-25 अगस्त के आसपास सारण, समस्तीपुर, वैशाली, बेगुसराय, गोपालगंज, सिवान, पूर्वी चम्पारण एवं पश्चिमी चम्पारण के जिलों में कुछ स्थानों पर मध्यम वर्षा हो सकती है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 30 से 32 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। जबकि न्यूनतम तापमान 26 से 28 डिग्री रोल्सियस के आरा-पारा रहने की संभावना है। सापेक्ष आर्दता सुबह में 90 प्रतिशत के आसपास तथा दोपहर में 40 से 45 प्रतिशत रहने की संभावना है। पूर्वानुमानित अवधि में 23 अगस्त को औसतन 10 से 15 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चल सकती है। उसके बाद पूर्वी हवा चलने की संभावना है।

# RPCAU cell tops 'Startup Bihar' rankings

B K Mishra | TNN

**Patna:** Agri-Innovation and Incubation Centre (AIIC) at Rajendra Prasad Central Agricultural University (RPCAU), Pusa, has secured the top spot among 46 startup cells across the state under Startup Bihar, an initiative by industries department. According to the rankings released by the department on Friday, the startup cells at Govt Engineering Colleges, Vaishali, and Aurangabad, were placed second and third, respectively. Bihar Agricultural University, Sabour, secured the fourth position.

Vice-chancellor of RPCAU , P S Pandey, said the success of the AIIC reflects the dedication of the scientists and leadership of Ramdatt. Our university remains committed to fostering entrepreneurship and driving rural development through innovative agricultural solutions."

## डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि स्थित विद्यापति सभागार में कार्यक्रम

# उद्यमिता व व्यावहारिक कौशल को बढ़ावा देने की जरूरत : कुलपति

प्रतिनिधि,पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित विद्यापति सभागार में छात्र ग्रामीण उद्यमिता जागरूकता विकास योजना पर सेमिनार किया गया. उद्घाटन कुलपति डा पीएस पांडेय ने किया. कुलपति डॉ पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय इस कार्यक्रम को पूरी गंभीरता से लागू करना चाहता है. ताकि किसान और छात्र दोनों को लाभ हो. उन्होंने कहा कि आज के सेमिनार में इस योजना के विभिन्न आयामों के बारे में विस्तार से चर्चा की गई. जिसमें शिक्षकों एवं वैज्ञानिकों को साथ छात्रों ने भी भाग लिया. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा कृषि और संबद्ध विज्ञान में स्नातक छात्रों के बीच उद्यमिता और व्यावहारिक कौशल को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण पहल है. कहा कि इस योजना के तहत छात्रों में उद्यमशीलता कौशल और ज्ञान विकसित करने पर जोड़ दिया जाना चाहिए. ताकि वे जाब सीकर से जाब प्रोवाइडर बनें. टीसीए ढोली के डीन डॉ पीपी सिंह ने कहा कि इस योजना की शुरुआत कुलपति ने ही देश भर में की थी.

सेमिनार का उद्घाटन करते कुलपति.

आधारभूत एवं मानविकी महाविद्यालय के डीन डॉ अमरेश चंद्रा ने विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की. पीजीसीए के डीन डॉ मयंक राय ने कहा कि इस कार्यक्रम से छात्रों में व्यावहारिक कौशल और तकनीकी विशेषज्ञता को बढ़ावा मिलता है. फिशरीज कालेज के डीन डॉ पीपी सिंह ने कहा कि यह योजना छात्रों को ग्रामीण वास्तविकताओं, चुनौतियों और अवसरों से परिचित कराता है. इंजीनियरिंग कॉलेज के डीन डॉ राम सुरेश वर्मा ने कहा कि इस योजना की उचित निगरानी तंत्र को विकसित करने की आवश्यकता है ताकि कोई इस योजना में गड़बड़ी न कर सके. वानिकी एवं उद्यानिकी महाविद्यालय के डीन डॉ आर के झा ने कार्यक्रम को और बेहतर बनाने को लेकर अपने सुझाव दिये. मौके पर डॉ महेश कुमार, डॉ नितेश कुमार शर्मा, डॉ लिखिंद्र, डॉ केएल भूटिया, डॉ कुमार राज्यवर्धन आदि थे

प्रभात खबर
Sunday, August 24, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68aa02260de931cdb3e7bc89

# मछली की प्रजातियां विटामिन्स से भरपूर

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में बेहतर उत्पादन के लिए समेकित मत्स्यपालन विषय पर राज्य के लखीसराय जिले के किसानों के लिए छह दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ. अध्यक्षता करते हुए निदेशक छात्र कल्याण डॉ रमण त्रिवेदी ने कहा कि मछली की विभिन्न प्रजातियां विटामिन्स से भरपूर होती है. बिहार सरकार की ओर से मत्स्यपालकों के ज्ञानवर्धन के लिए विवि में प्रशिक्षण की व्यवस्था की गयी है.

इससे प्रदेश के किसान एवं मत्स्यपालकों को गुणवत्तापूर्ण तकनीकी ज्ञान देकर मछली उद्योग से जोड़ने का मुहिम संचालित किया जा रहा है. प्रशिक्षित मत्स्यपालकों को नियमानुसार कई योजनाओं पर सब्सिडी आधारित लाभ भी दिया जाता है. मछली खाने की लोगों में जागरूकता बढ़ी है. मछली का उत्पाद

वैज्ञानिकों के साथ प्रतिभागी.

तैयार करने में प्रशिक्षण की महती भूमिका है. उन्होंने कहा कि किसान मछली उद्योग से जुड़ कर विभिन्न आयाम अपनाकर लाभ ले सकते हैं. इस आधुनिक तकनीकी युग में किसान मछली व्यवसाय से 15 से 20 हजार प्रतिमाह की आमदनी कर सकते हैं.

कोलेस्ट्रॉल एवं शुगर के लिए मछली रामबाण है. समेकित कृषि प्रणाली को अपनाते हुए बांध पर मुर्गीपालन, फल सब्जी का उत्पादन करना अत्यंत लाभकारी है. स्वागत एवं सत्र का संचालन करते हुए प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण डॉ बिनीता सतपथी ने कहा कि बिहार में मछली का उत्पादन चार गुना बढ़कर राज्य में पांचवें रैंक पर पहुंच गया है. प्रशिक्षण में मछली को खाना देना, रखरखाव, हार्वेस्टिंग करने के तरीकों को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है. धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डॉ फूलचंद ने किया. मौके पर टेक्निकल सेल के सुरेश कुमार आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Sunday, August 24, 2025
Samastipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68aa02260de931cdb3e7bc89

भास्कर 25/8/25 पेज 20

आयोजन • डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में कार्यक्रम

# सेमिनार से किसानों की समस्याओं को समझने का मिलेगा मौका :वीसी

भास्कर न्यूज़|पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में छात्र ग्रामीण उद्यमिता जागरूकता विकास योजना कार्यक्रम पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के तहत छात्रों को ग्रामीण इलाकों में कृषि की स्थिति एवं किसानों की समस्याओं को समझने के लिए भेजा जाता है। यह कृषि विश्वविद्यालय के छात्रों के सिलेबस का एक भाग है। इस कार्यक्रम के तहत छात्र इंडस्ट्रियल संस्थानों में भी जाते हैं और उद्यमिता का प्रशिक्षण लेते हैं। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मौजूद छात्रों को संबोधित करते हुए कुलपति डॉ.पी एस पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय इस कार्यक्रम को पूरी गंभीरता से लागू करना चाहता है जिससे कि किसान और छात्र दोनों को लाभ हो। उन्होंने कहा कि आज के सेमिनार में इस योजना के विभिन्न आयामों पर विस्तार से चर्चा की गई हैं। इस सेमिनार में शिक्षकों एवं वैज्ञानिकों के साथ-साथ बड़ी संख्या में छात्रों ने भी भाग लिया हैं। उन्होंने कहा कि छात्र READY (रूरल एंटरप्रेन्योरशिप अवेयरनेस डेवलपमेंट योजना) कार्यक्रम भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा कृषि और संबद्ध विज्ञान में स्नातक छात्रों के बीच उद्यमिता और व्यावहारिक कौशल को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण पहल है। उन्होंने कहा कि इस योजना के तहत छात्रों में उद्यमशीलता कौशल और ज्ञान विकसित करने पर जोड़ दिया जाना चाहिए ताकि वे जॉब सीकर (नौकरी खोजने वाले) से जॉब प्रोवाइडर (नौकरी देने वाले) बनें। उन्होंने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डिजिटल एग्रीकल्चर सहित विभिन्न भविष्य की तकनीक को ध्यान में रखकर छात्रों को उद्यमिता विकास प्रशिक्षण देने की जरूरत है।

कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति व मौजूद वैज्ञानिक और छात्र।

## छात्रों में व्यावहारिक कौशल व तकनीकी विशेषज्ञता को बढ़ावा मिलता है : वैज्ञानिक

टीसीए ढोली के डीन डॉ.पी पी सिंह ने कहा कि इस योजना की शुरुआत कुलपति डॉ. पीएस पांडेय के द्वारा ही देश भर में की गई थी जब वे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में सहायक महानिदेशक के रूप में कार्य कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कुलपति डॉ. पांडेय विश्वविद्यालय में इस योजना को अक्षरस: लागू करने को लेकर लगातार सक्रिय हैं। आधारभूत एवं मानविकी महाविद्यालय के डीन डॉ. अमरेश चंद्रा ने इस कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की। पीजीसीए के डीन डॉ. मयंक राय ने कहा कि इस कार्यक्रम से छात्रों में व्यावहारिक कौशल और तकनीकी विशेषज्ञता को बढ़ावा मिलता है और वे वास्तविक दुनिया की चुनौतियों का समाधान करने के लिए बेहतर तरीके से सक्षम बनते हैं। फिशरीज कालेज के डीन डॉ. पी पी सिंह ने कहा कि यह योजना छात्रों को ग्रामीण वास्तविकताओं, चुनौतियों और अवसरों से परिचित कराता है। उन्होंने अपने कालेज में चल रहे विभिन्न कार्यक्रम के बारे में भी बताया।

## योजना की उचित निगरानी तंत्र को विकसित करने की जरूरत

इंजीनियरिंग कॉलेज के डीन डॉ. राम सुरेश वर्मा ने कहा कि इस योजना की उचित निगरानी तंत्र को विकसित करने की आवश्यकता है ताकि कोई इस योजना में गड़बड़ी न कर सके। वानिकी एवं उद्यानिकी महाविद्यालय के डीन डॉ.आर के झा ने कार्यक्रम को और बेहतर बनाने के लिए अपने महत्वपूर्ण सुझाव दिये। बता दें कि ग्रामीण उद्यमिता विकास योजना के तहत छात्रों को 3000 की मासिक छात्रवृत्ति भी प्रदान की जाती है जिसमें से 2500 आईसीएआर से और 500 रुपये राज्य सरकार से मिलता है। मौके पर डॉ.महेश कुमार, डॉ.नितेश कुमार शर्मा, डॉ.लिखिंद्र, डॉ. के एल भूटिया, डॉ.कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न शिक्षक, वैज्ञानिक, पदाधिकारी व छात्र मौजूद थे।

# युवा जाब सीकर नहीं, प्रोवाइडर बनें : कुलपति

संस, जागरण●पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में शनिवार को छात्र ग्रामीण उद्यमिता जागरूकता विकास पर सेमिनार का आयोजन किया गया। इसमें कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय इस कार्यक्रम को पूरी गंभीरता से लागू करना चाहता है। छात्र रेडी (रूरल एंटरप्रेन्योरशिप अवेयरनेस डेवलपमेंट योजना) के तहत भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा कृषि और संबद्ध विज्ञान में स्नातक छात्रों के बीच उद्यमिता और व्यावहारिक कौशल को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण पहल है। उन्होंने छात्रों से जाब सीकर की जगह जाब प्रोवाइडर बनने की अपील की।

टीसीए ढोली के डीन डा. पीपी सिंह ने इस योजना की प्रशंसा की। आधारभूत एवं मानविकी महाविद्यालय के डीन डा. अमरेश चंद्रा ने इस कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं के बारे में चर्चा की। पीजीसीए के डीन डा. मयंक राय, मत्स्यकी कालेज के डीन डा. पीपी सिंह ने कहा कि यह योजना छात्रों को ग्रामीण वास्तविकताओं, चुनौतियों और अवसरों से परिचित कराता है। मौके पर डीन डा. राम सुरेश वर्मा, डा. आरके झा, डा. महेश कुमार, डा. नितेश कुमार शर्मा, डा. लिखिंद्र, डा. केएल भूतिया, डा. कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न शिक्षक विज्ञानी एवं पदाधिकारी उपस्थित थे।

**Dainik Jagran 24-8-25**

# आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 25 अगस्त तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में बादल छाए रह सकते हैं। अगले 48 घंटे तक अनेक स्थानों पर वर्षा होने की संभावना है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा . ए सत्तार का कहना है कि इस दौरान पूरवा हवा चलेगी लेकिन तापमान में गिरावट की संभावना नहीं है। उन्होंने कहा कि अच्छी बारिश होने से गर्मी व उमस से कुछ राहत मिल सकती है।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| समस्तीपुर | | |
| 24 अगस्त | 31.5 | 25.2 |
| 25 अगस्त | 32.0 | 25.5 |
| दरभंगा | | |
| 24 अगस्त | 32.0 | 25.5 |
| 25 अगस्त | 32.0 | 26.0 |
| पटना | | |
| 24 अगस्त | 33.0 | 27.5 |
| 25 अगस्त | 33.0 | 27.5 |

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 24-08-2025

# ‘जॉब सीकर नहीं, जॉब प्रोवाईडर बने’

## सेमिनार

**पूसा, निज संवाददाता।** डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि के कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय ने कहा कि छात्रों में उद्यमशीलता कौशल व ज्ञान विकसित करने पर जोर देने की जरूरत है। इससे छात्र जॉब सीकर (नौकरी खोजने वाला) के बदले जॉब प्रोवाईडर (नौकरी देने) बनें। उन्होंने छात्रों के उद्यमिता विकास प्रशिक्षण में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डिजिटल एग्रीकल्चर व भविष्य के लिए अन्य जरूरी तकनीकों को ध्यान में रखकर कार्य करने पर बल दिया। वे शनिवार को विवि के विद्यापति सभागार में वैज्ञानिकों व छात्रों को संबोधित कर रहे थे। मौका था छात्र ग्रामीण उद्यमिता जागरूकता विकास योजना पर एक दिवसीय सेमिनार का। उन्होंने छात्र रेड्डी प्रोग्राम को प्रभावी तरीके से लागू करने पर बल देते हुए कहा कि इससे किसान व छात्र दोनों को लाभ मिल सकेगा। डीन पीजीसीए डॉ. मयंक राय ने कहा कि इस तरह के कार्यक्रम से छात्रों में व्यावहारिक कौशल और तकनीकी विशेषज्ञता को बढ़ावा मिलता है।

शनिवार को कृषि विवि में दीप प्रज्जवलित कर उद्घाटन करते कुलपति व डीन।

**Hindustan 24-08-2025**

# जॉब सीकर नहीं, जॉब प्रोवाइडर बनें छात्र : कुलपति

संबोधित करते वीसी।

**ग्रामीण उद्यमिता जागरूकता विकास योजना विषय पर आधारित एक दिवसीय सेमिनार संपन्न**

**पूसा (एसएनबी)।** डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के परिसर स्थित विद्यापति सभागार में छात्रों के ग्रामीण उद्यमिता जागरूकता विकास योजना विषय पर आधारित एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के तहत छात्रों को ग्रामीण क्षेत्र में कृषि की स्थिति एवं फसलों में किसानों की होने वाली समस्याओं को समझने के लिए भेजा जाता है। यह कृषि विश्वविद्यालय के छात्रों के सिलेबस का एक भाग है। इस कार्यक्रम के तहत छात्र इंडस्ट्रियल संस्थानों में भी जाते है और उद्यमिता का प्रशिक्षण लेते है। कार्यक्रम में उपस्थित वि वि के कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय इस कार्यक्रम को पूरी गंभीरता से लागू करना चाहता है जिससे किसान और छात्र दोनों को लाभ हो। उन्होंने कहा कि आज के सेमिनार में इस योजना के विभिन्न आयामों के बारे में विस्तार से चर्चा की गई, जिसमें शिक्षकों एवं वैज्ञानिकों को साथ साथ छात्रों ने भी भाग लिया। उन्होंने कहा कि छात्र रूरल एंटरप्रेन्योरशिप अवेयरनेस डेवलपमेंट योजना कार्यक्रम भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा कृषि और संबद्ध विज्ञान में स्नातक छात्रों के बीच उद्यमिता और व्यावहारिक कौशल को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण पहल है। उन्होंने कहा कि इस योजना के तहत छात्रों में उद्यमशीलता कौशल और ज्ञान विकसित करने पर जोड़ दिया जाना चाहिए ताकि वे जॉब सीकर (नौकरी खोजने वाले) से जॉब प्रोवाइडर (नौकरी देने वाले) बनें। टीसीए ढोली के अधिष्ठाता डॉ पीपी सिंह ने कहा कि इस योजना की शुरुआत कुलपति डॉ पी एस पांडेय के द्वारा ही देश भर में की गई थी जब वे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में सहायक महानिदेशक के रूप में कार्य कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कुलपति डॉ पांडेय विश्वविद्यालय में इस योजना को अक्षरसः लागू करने को लेकर लगातार सक्रिय है। आधारभूत एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ अमरेश चंद्रा ने इस कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं के बारे में विस्तार से चर्चा की। पीजी सीए डीन डॉ मयंक राय ने कहा कि इस कार्यक्रम से छात्रों में व्यावहारिक कौशल और तकनीकी विशेषज्ञता को बढ़ावा मिलता है और वे वास्तविक दुनिया की चुनौतियों का समाधान करने के लिए बेहतर तरीके से सक्षम बनते है। फिशिरीज कालेज के डीन डॉ पी पी श्रीवास्तव ने कहा कि यह योजना छात्रों को ग्रामीण वास्तविकताओं, चुनौतियों और अवसरों से परिचित कराता है। उन्होंने अपने महाविद्यालय में चल रहे विभिन्न कार्यक्रम के बारे में भी जानकारी दी। इंजीनियरिंग कॉलेज डीन डॉ राम सुरेश वर्मा ने कहा कि इस योजना की उचित निगरानी तंत्र को विकसित करने की आवश्यकता है ताकि कोई इस योजना में गड़बड़ी न कर सके। वानिकी एवं उद्यानिकी महाविद्यालय के डीन डॉ आर के झा ने कार्यक्रम को और बेहतर बनाने को लेकर अपने सुझाव दिये। ग्रामीण उद्यमिता विकास योजना के तहत छात्रों को 3,000 रुपया की मासिक छात्रवृत्ति भी प्रदान की जाती है, जिसमें से 2,500 रुपया आई सी ए आर से और 500 रूपया राज्य सरकार से मिलता है। कार्यक्रम के दौरान डॉ महेश कुमार, डॉ नितेश कुमार शर्मा, डॉ केएल भूटिया, डॉ कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न शिक्षक वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी उपस्थित थे।

**Rashtriya Sahara 24-08-2025**

# भजन-संकीर्तन से भक्तिमय हुआ इलाका

उपस्थित श्रद्धालु.

**पूसा.** डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित महावीर मानस मंदिर में रामचरित्र मानस प्रचार प्रसार संघ पूसा की ओर से रामायण गोष्ठी की गयी. इस दौरान विश्व हिंदू परिषद के स्थापना दिवस समारोह पर चर्चा व भजन-संकीर्तन किया गया. इससे इलाका भक्तिमय हो गया. विहिप के जिला सत्संग प्रमुख जगदीश ठाकुर, राष्ट्रीय स्वयं सेवक सदस्य संदीप तिवारी, व्यास नवीन कुमार राय, ललन चौधरी, अरविंद कुमार शर्मा, राजेंद्र राय, अंजनी कुमार शर्मा, श्रीनारायण, तरुण, घनश्याम प्रसाद, अरुण पोद्दार आदि मौजद थे.

प्रभात खबर
Monday, August 25, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68ab650bd98ccadaead164

# किसान धान की फसलों में खैरा रोग की निगरानी करें, सब्जी पर दें ध्यान

**प्रतिनिधि, समस्तीपुर**

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय,पूसा के द्वारा किसानों के लिए समसामयिक सुझाव जारी किये गये हैं. किसानों को सुझाव दिया गया है कि धान की फसल में किसान खैरा रोग की निगरानी करें. धान की फसल में खैरा बीमारी दिखाई पड़ने पर खेतों में जिंक सल्फेट 5.0 किलोग्राम तथा 2.5 किलोग्राम बुझा चूना का 500 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेयर में छिड़काव आसमान साफ रहने पर ही करें. पिछात धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दें. अगात धान की फसल में तना छेदक कीट की निगरानी करें. तना छेदक कीट दिखने पर बचाव के लिए फेरोमोन ट्रैप की 12 ट्रैप प्रति हेक्टेयर का प्रयोग करें. खेतों में 5 प्रतिशत क्षतिग्रस्त पौधें दिखाई देने पर करताप हाईड्रोक्लोराइड दानेदार दवा का अथवा फिप्रोनिल 0.3 जी का 10 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से व्यवहार करें. सितम्बर अरहर की बोआई के लिए खेत की तैयारी करें. किसान 25 अगस्त के बाद इसकी

बोआई कर सकते हैं. बोआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलोग्राम नत्रेजन, 45 किलोग्राम स्फुर,20 किलोग्राम पोटाश तथा 20 किलोग्राम सल्फर का व्यवहार करें. अरहर की पूसा-9 तथा शरद प्रभेद उत्तर बिहार के लिए अनुशंसित है. बोआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें. बोआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बोआई करनी चाहिये. टमाटर की नर्सरी उथली क्यारियों में पंक्तियों में गिरावें. इसके लिए काशी विशेष, काशी अमन, स्वर्ण लालिमा, स्वर्ण नवीन, अर्का आभा किस्में अनुशंसित है. बीज दर 200 से 250 ग्राम प्रति हेक्टेयर रखें. सब्जियों की नर्सरी में लाही, सफेद मक्खी व चूसक कीड़ों की निगरानी करें. खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेतों को समतल कर छोटी-छोटी उथली क्यारियां बनावें, जिसकी चौड़ाई 2 मीटर एवं लम्बाई 3 से 5 मीटर तक रख सकते हैं. प्रत्येक दो क्यारियों के बीच जल निकास के लिए नालियां अवश्य बनावें. पंक्ति से पंक्ति की दूरी 15 सेमी, पौध से पौध की दूरी 10 सेमी पर रोपाई करें. हल्दी, अदरक, ओल और बरसाती सब्जियों में आवश्यकतानुसार निकाई-गुड़ाई करें. इन फसलों में कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहे.

फूलगोभी की मध्यकालीन किस्में अगहनी, पूसी, पटना मने, पूसा सिन्थेटिक-1, पूसा शुभ्रा, पूसा शरद, पूसा मेघना, काशी कुंवरी एवं अर्ली स्नोबॉल किस्मों की बोआई नर्सरी में करें. उपचारित बीज उथली क्यारियों में पंक्तियों में गिरायें. पपीता की नर्सरी उथली क्यारियों ( 10–15 सेन्टी मीटर ऊंची ) में बोयें. इसके लिए उन्नत प्रभेद पूसा ड्वार्फ, पूसा नन्हा, पूसा डीलीसीयस, सीओ- 07, अर्का सूर्या एवं रडे लेडी है. बीज दर 300 से 350 ग्राम प्रति हेक्टेयर रखें. बीज को बेविस्टन 2 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से उपचारित कर क्यारियों में 07 से 10 सेन्टीमीटर की दूरी पर बोयें.

प्रभात खबर
Monday, August 25, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68ab650bd98ccadaead1641f

भास्कर 25/8/25 पेज 18

# मेथी की खेती के लिए तैयार करें खेत, अगले माह बुआई के लिए समय उपयुक्त

## कृषि विज्ञान केंद्र के वरीय कृषि वैज्ञानिक ने दी जानकारी, मेथी के दाने और पत्ते में ढ़ेर सारे औषधीय गुण होते हैं मौजूद, इसलिए बाजार में भी अधिक मांग

भास्कर न्यूज | पूसा

बिहार के किसान आने वाले सितंबर माह में मेथी की खेती को वैज्ञानिक तरीके से करके बेहतर उत्पादन और अच्छा मुनाफा दोनों प्राप्त सकते हैं। मेथी के दाने और पत्ते में ढ़ेर सारे औषधीय गुण मौजूद होते हैं। इसलिए इसका सेवन मानव शरीर के लिए भी काफी फायदेमंद है। ये जानकारी कृषि विज्ञान केंद्र के वरीय कृषि वैज्ञानिक सह संस्थान के हेड डॉ. आरके तिवारी ने दी है। उन्होंने कहा कि मेथी के पत्ते को आटे में मिलाकर रोटी बनाकर खाने से भी डायबिटीज रोगियों को काफी फायदा मिलता है। उन्होंने कहा कि मेथी एक पत्तेदार व औषधीय फसल है। इसकी गिनती मसालेदार फसलों में होती है। मेथी का उपयोग सब्जी, अचार और लड्डू आदि बनाने में भी किया जाता है। उन्होंने बताया कि मेथी दाने में सोडियम, जिंक, फॉस्फोरस, फॉलिक एसिड, आयरन, कैल्शियम, मैग्नीशियम, पोटैशियम जैसे महत्वपूर्ण मिनरल्स और विटामिन ए, बी और सी जैसे महत्वपूर्ण विटामिन पाए जाते हैं। इसके अलावा इसमें भरपूर मात्रा में फाइबर्स, प्रोटीन, स्टार्च, फॉस्फोरिक एसिड जैसे न्यूट्रिएंट्स भी पाए जाते हैं। मेथी के सेवन से शुगर के साथ-साथ पेट संबंधी बीमारियों एवं जोड़ों के दर्द में भी काफी आराम मिलता है। यह उच्च रक्तचाप यानी (हाई वीपी) व अपच में भी काफी लाभकारी है।

खेतों में लहलहाती मेथी की फसल। फाइल फोटो।

### अच्छी जल निकास वाली चिकनी मिट्टी खेती के लिए ज्यादा उपयुक्त

कृषि वैज्ञानिक की मानें तो मेथी की खेती ऐसे तो सभी तरह के मिट्टी में की जा सकती है लेकिन अच्छी जल निकास वाली चिकनी मिट्टी इसकी खेती के लिए ज्यादा उपयुवत होती है। मिट्टी का पीएच मान 6 से 7 के बीच रहना चाहिए। उन्होंने बताया कि मैदानी इलाकों में मेथी की बुआई सितंबर से मार्च तक और पहाड़ी इलाकों में इसकी बुआई जुलाई से अगस्त तक की जा सकती है। उन्होंने कहा कि यदि किसान मेथी की बुआई (साग) के लिए करते हैं तो किसानों को अपने खेतों में 8 से 10 दिनों के अंतर पर खेत के छोटे छोटे टुकड़े बनाकर उसमें बुआई करनी चाहिए।

### मेथी बुआई के लिए ऐसे करें खेत को तैयार

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि मेथी की बुआई से पूर्व किसान अपने खेत को अच्छी तरह से जुतवाकर उसे तैयार कर ले। जुताई के समय किसान खेत में 150 क्विंटल गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर की दर से डालें। अगर खेत में दीमक की समस्या है तो किसान पाटा चलाने से पहले खेत में क्विनालफास (1.5 फीसदी) या मिथाइल पैराथियान (2 फीसदी चूर्ण) दवाई का 25 किलोग्राम मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से खेत मे मिला दें। इसके बाद किसान पाटा चलाकर खेत को बराबर कर दें। उन्होंने बताया कि एक एकड़ खेत में मेथी की बुआई के लिए लगभग 12 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है। किसान मेथी के दाने को बुआई से पहले 8 से 12 घंटे तक पानी में भिगो दें। इसके बाद बीजों को कीट और बीमारियों से बचाने के लिए किसान थीरम नाम की दवाई के 4 ग्राम मात्रा से बीज को उपचारित करके ही उसकी बुआई करें। उन्होंने बताया कि अधिकतर किसान मेथी की बुआई छिड़काव विधि से ही करते हैं।

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 25 अगस्त तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में बादल छाए रह सकते हैं। अगले 48 घंटे तक अनेक स्थानों पर वर्षा होने की संभावना है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस दौरान पूरवा हवा चलेगी लेकिन तापमान में गिरावट की संभावना नहीं है। उन्होंने कहा कि अच्छी बारिश होने से गर्मी व उमस से कुछ राहत मिल सकती है।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| **समस्तीपुर** | | |
| 25 अगस्त | 31.5 | 25.2 |
| 26 अगस्त | 32.0 | 25.5 |
| **दरभंगा** | | |
| 25 अगस्त | 32.0 | 25.5 |
| 26 अगस्त | 32.0 | 26.0 |
| **पटना** | | |
| 25 अगस्त | 33.0 | 27.5 |
| 26 अगस्त | 33.0 | 27.5 |

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 25-08-25

भास्कर 26/8/25 पेज 16

कृषि • इस बीमारी का संक्रमण नींबू की पत्तियों, टहनियों, कांटों, पुरानी शाखाओं और फलों पर अधिक

# नींबू में लगने वाले सिट्रस कैंकर रोग अत्यंत ही घातक व जीवाणुजनित : कृषि वैज्ञानिक

भास्कर न्यूज | पूसा

नींबू में लगने वाला रोग सिट्रस कैंकर अत्यंत ही घातक और जीवाणुजनित रोग है। इस रोग का संक्रमण नींबू की पत्तियों, टहनियों, कांटे, पुरानी शाखाओं और फलों आदि से जुड़े जगहों को बुरी तरह से प्रभावित करता है। इस बीमारी से पूर्णरूपेण संक्रमित पौधे धीरे-धीरे सूख जाते हैं। बिहार के नींबू उत्पादक किसान वैज्ञानिक सुझावों को अपनाकर इस बीमारी का प्रबंधन करते हुए इससे निजात पा सकते हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक एवं प्लांट पैथोलॉजी विभाग के हेड डॉ. संजय कुमार सिंह ने दी है। उन्होंने कहा कि नींबू की प्रजाति एसिड लाइम साइट्रस कैंकर बीमारी के लिए अतिसंवेदनशील है। इस बीमारी से रोगग्रस्त पौधों में उपज की हानि लगभग किस्म के आधार पर 5 से 35 प्रतिशत तक होती है। यह बीमारी छोटे पौधों के साथ-साथ बड़े-बड़े पेड़ों में भी आसानी से लग जाती है। नर्सरी में रखे गए युवा पौधे भी इस रोग के लगने से क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। इस बीमारी से आक्रांत नींबू के पेड़ की

पूरा पौधा मर जाता है। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि इस रोग के लक्षणों में नींबू की पत्तियों पर सबसे पहले एक छोटे पानीदार पारभासी पीले रंग के धब्बे प्रकट हो जाते हैं। जैसे-जैसे धब्बे परिपक्व होते हैं वह सतह सफेद या भूरे रंग का होते हुए अंत में केंद्र में टूटकर खुरदुरी, सख्त, कॉर्क जैसा और गड्ढा जैसा बन जाता है। उन्होंने बताया कि साइट्रस कैंकर नींबू के सबसे महत्वपूर्ण रोगों में से एक रोग है जो जीवाणु जैंथोमोनस एक्सोनोपोडिस के कारण होता है। हालांकि यह जीवाणु मनुष्यों के लिए हानिकारक नहीं है लेकिन नींबू के पेड़ों की जीवन शक्ति को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। कैंकर से संक्रमित फल दागदार भले दिखता है लेकिन खाने के लिहाज से यह सुरक्षित है। उन्होंने बताया कि दागदार नींबू फल दिखने के कारण ताजे फल के रूप में इसकी बिक्री न के बराबर हो पाती है। इसलिए किसानों को बाजार में नींबू का अच्छा मूल्य नहीं मिल पाता है। उन्होंने बताया कि साइट्रस कैंकर रोग पैदा करने वाले बैक्टीरिया रंध्रों के माध्यम से या मौसम की क्षति या कीड़ों के कारण हुए घावों के माध्यम से नींबू की पत्तियों में प्रवेश

## किसान वैज्ञानिक सुझावों को अपनाकर करें प्रबंधन

सिट्रस कैंकर बीमारी से ग्रसित नींबू।

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि नींबू उत्पादक किसान इस रोग से ग्रसित व गिरे हुए पत्तों और टहनियों को इकट्ठा करके जला दें। नए बागों के रोपण में रोग मुक्त नर्सरी से पौधे खरीदें। नए बागों के रोपण से पहले पौधों को ब्लाइटॉक्स 50 की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी के साथ तथा स्ट्रेप्टोसाइकिलिन की 1 ग्राम मात्रा प्रति 3 लीटर पानी के साथ घोलकर पौधों पर छिड़काव कर दें। इसके बाद ही पौधों को खेतों में लगाएं। किसान पुराने बागों में मानसून की शुरुआत से पहले प्रभावित पौधों के हिस्सों की छंटाई करें तथा मौसम की स्थिति के आधार पर समय-समय पर ब्लाइटॉक्स 50 एवं स्ट्रेप्टोसाइकिलिन का छिड़काव पौधों पर करते रहें। नींबू में फूल आने के तुरंत बाद ब्लाइटॉक्स 50 एवं स्ट्रेप्टोसाइकिलिन का

## बैक्टीरिया के संपर्क में आने के 14 दिनों में दिखते हैं लक्षण, तब करें दवा छिड़काव

कृषि वैज्ञानिक ने बताया गया कि आमतौर पर इस बीमारी के लक्षण बैक्टीरिया के संपर्क में आने के 14 दिनों के भीतर दिखाई देने लगते हैं। इसके जीवाणु पुराने घावों और पौधों की सतहों पर कई महीनों तक रह सकते हैं। बीमारी से संक्रमित जगह व घावों से जीवाणु कोशिकाएं निकलती हैं। जो हवा और बारिश के माध्यम से फैलकर दूसरे पौधों को भी संक्रमित कर देती हैं। यह रोग उच्च वर्षा और उच्च तापमान वाले क्षेत्रों में ज्यादा पनपता है। वैसे तो नींबू की सभी प्रजातियां साइट्रस कैंकर बीमारी के लिए अतिसंवेदनशील होती हैं लेकिन यह रोग सर्वाधिक

भास्कर 26/8/25 पेज 15

# धान के खेतों में पानी का स्तर 3 से 4 सेमी रखें, इससे अच्छी उपज होगी : कृषि वैज्ञानिक

## धान रोपाई के 25 से 30 दिनों बाद किसान शुरू करें तमाम तरह के प्रबंधन का कार्य, 25 से 30 दिन की फसल में 65 किलोग्राम यूरिया प्रति हेक्टेयर की दर से डालें

भास्कर न्यूज़ | पूसा

धान की रोपाई के 25 से 30 दिनों बाद किसानों को धान के फसल में समुचित मात्रा में विभिन्न तरह के उर्वरकों का प्रयोग करते रहना चाहिए। इस समय में धान की फसल में किया गया उर्वरक का बेहतर प्रयोग किसानों को धान का उच्च स्तरीय उत्पादन दिला सकता हैं। ये जानकारी कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली की विषय वस्तु विशेषज्ञ भारती उपाध्याय ने दी। उन्होंने कहा कि इस साल बहुत अच्छी बारिश नहीं हुई है जिस वजह से किसानों ने अपने खेतों में काफी कम मात्रा में धान लगाया हैं। वैसे किसान जिन्होंने सिंचाई के भरोसे धान की खेती की है वे अब धान के फसल पर विशेष ध्यान दें। किसान धान के खेतों की मेड़बन्दी मजबूती से करें ताकि वर्षा का पानी खेत से बाहर न निकल पाए। पछेती प्रजाति के लगाएं गए धान के फसल में जहां पौधे मर गए हों वहां उसी प्रजाति की नए पौधों की रोपाई दोबारा करें। धान के खेत में पानी का स्तर 3 से 4 सेंटीमीटर हमेशा बनाएं रखें।

केवीके बिरौली में लगाई गई धान की फसल।

### धान की फसल में उर्वरकों का उचित प्रबंधन जरूरी

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि इस समय धान की फसल में उर्वरक का प्रबंधन करना काफी महत्वपूर्ण होता है। वैसे धान जो अधिक उपज देने वाली किस्म के हो तथा जिन्हें लगाएं हुए 25 से 30 दिन हो गया हो और उसमें कल्ले निकल रहे हो उसमें 65 किलोग्राम यूरिया प्रति हेक्टेयर की दर से अविलंब डालें। उसके बाद यूरिया की इतनी ही मात्रा धान की रोपाई के 50 से 55 दिनों बाद यानी पेनिकल स्टेज में डालें। उन्होंने बताया कि धान की सुगंधित प्रजातियों में 33 किलोग्राम यूरिया ही प्रति हेक्टेयर की दर से डालें। धान की फसल में अगर जिंक की कमी के लक्षण दिखाई दें तो फसल पर 0.5 प्रतिशत जिंक सल्फेट एवं 0.25 प्रतिशत बुझे हुए चूने के घोल को एक साथ मिलाकर 2 से 3 छिड़काव 15 से 20 दिनों के अंतराल पर करें। वैसे किसान जिन्होंने धान की सीधी बुआई की है अगर उनके धान के पौधों में लौह तत्व की कमी दिखाई देती हो तो उसमें 0.5 प्रतिशत फेरस सल्फेट का घोल बनाकर 15 दिनों के अंतराल पर डालें।

### किसान धान में करें खरपतवारों का नियंत्रण : डॉ. तिवारी

केवीके के हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक ने डॉ. आरके तिवारी ने बताया कि इस समय धान की फसल में खरपतवार का नियंत्रण भी काफी मायने रखता हैं। धान के फसल का खरपतवार धान के पैदावार को भी बुरी तरह से प्रभावित करता है तथा इसके साथ-साथ खरपतवार धान में लगने वाले रोगों एवं कीटों को भी आश्रय देता हैं। किसान फसल में खरपतवार दिखाई देने पर खेतों में अविलंब निकौनी का काम करवाएं।

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 27 अगस्त तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में बादल छाए रह सकते हैं। अगले 48 घंटे तक अनेक स्थानों पर वर्षा होने की संभावना है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस दौरान पूरवा हवा चलेगी लेकिन तापमान में गिरावट की संभावना नहीं है। उन्होंने कहा कि अच्छी बारिश होने से गर्मी व उमस से कुछ राहत मिल सकती है।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| | समस्तीपुर | |
| 26 अगस्त | 31.5 | 25.2 |
| 27 अगस्त | 32.0 | 25.5 |
| | दरभंगा | |
| 26 अगस्त | 32.0 | 25.5 |
| 27 अगस्त | 32.0 | 26.0 |
| | पटना | |
| 26 अगस्त | 33.0 | 27.5 |
| 27 अगस्त | 33.0 | 27.5 |

डिग्री सेल्सियस में

हिन्दुस्तान 26-8-2025 पृ० 4 ५८

# जलवायु अनुकूल खेती के बारे में बताया

दलसिंहसराय, निस। ई-किसान भवन में सोमवार को कैफेटेरिया ऑफ एक्टिविटी के तहत प्रखंड स्तरीय किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में समसामयिक एवं जलवायु अनुकूल कृषि के साथ ही मोटे अनाज की खेती विषय पर चर्चा की गई।

गोष्ठी की अध्यक्षता जिप सदस्या सुनीता शर्मा ने की। मंच संचालन प्रखंड तकनीकी प्रबंधक शांता चौधरी ने किया। कृषि विज्ञान केंद्र लादा के

- ई-किसान भवन में किसान गोष्ठी का किया गया आयोजन

वैज्ञानिक डॉ. ईमटी ने खरीफ फसलों की प्रमुख कीट एवं रोग व्याधि समस्या तथा उसके निदान के उपायों पर विस्तार पूर्वक जानकारी दी। वहीं किसानों द्वारा पूछे गये पौध सुरक्षा से जुड़े विभिन्न समस्याओं का समाधान भी किया। एसडीएओ राकेश कुमार ने डिजिटल क्रॉप सर्वे के बारे में जानकारी दी। प्रबंधक शांता ने किसानों को वैज्ञानिक तरीके से खेती करने के साथ-साथ फसल चक्र में दलहनी फसल एवं मिलेट्स फसलों की खेती अपनाने की सलाह दी। उदया पदाधिकारी निहारिका ने उद्यान की योजनाओं सहित उद्यानिक फसलों से जुड़ी समस्या का समाधान किया। पूर्व बीडीओ अशोक कुमार चौधरी, कृषक दर्शन कुमार, रंजीत कुमार, देवेंद्र प्रसाद यादव, सीताराम चौधरी सहित अन्य किसान एवं कृषि कॉर्डिनेटर उपस्थित थे।

प्रभात खबर 26-8-2025 पृ० 6 पर

# जलवायु के अनुकूल खेती पर दिया गया जोर

प्रतिनिधि, दलसिंहसराय

किसानों को संबोधित करते विशेषज्ञ.

प्रखंड स्थित कृषि कार्यालय सभा कक्ष में सोमवार को कैफेटेरिया ऑफ एक्टिविटी के तहत प्रखंड स्तरीय किसान गोष्ठी की गयी. समसामयिक खेती, जलवायु अनुकूल कृषि एवं मोटे अनाज की खेती विषय पर आयोजित गोष्ठी की अध्यक्षता जिपा सुनीता शर्मा ने की. उदघाटन अतिथियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया. संचालन प्रखंड तकनीकी प्रबंधक ने किया. कृषि विज्ञान केंद्र लादा के वैज्ञानिक डॉ. ईमटी ने खरीफ फसलों के प्रमुख कीट एवं रोग-व्याधि की समस्या व उसके निदान के उपायों पर विस्तार से जानकारी दी. उन्होंने कृषकों द्वारा पूछे गये पौध सुरक्षा से जुड़े विभिन्न समस्याओं का समाधान भी किया. अनुमंडल कृषि पदाधिकारी राकेश कुमार ने डिजिटल क्रॉप सर्वे के बारे में विस्तार से जानकारी दी. प्रखंड तकनीकी प्रबंधक शांता कुमार चौधरी ने कहा कि जलवायु परिवर्तन की समस्या से आज पूरा विश्व जूझ रहा है. इससे हमारी खेती में काफी प्रतिकूल असर हो रहा है. उच्च तापमान, अनियमित वर्षा, कहीं बाढ़ तो कहीं अकाल की स्थिति, चक्रवात आदि की संख्या में बढ़ोतरी आदि के परिणाम स्वरूप फसलों की भारी तादाद में नुकसान हो रहा है. जलवायु परिवर्तन का प्रभाव कृषि में कम से कम हो इसके उपायों के बारे में विस्तार से उन्होंने जानकारी दी. उन्होंने किसानों को वैज्ञानिक तरीके से खेती करने के साथ-साथ फसल चक्र में दलहनी फसलें एवं मिलेट्स फसलों की खेती अपनाने की सलाह दी. प्रखंड उद्यान पदाधिकारी निहारिका ने उद्यान की योजनाओं सहित उद्यानिक फसलों से जुड़ी समस्या का समाधान किया. जिपा सुनीता शर्मा कृषकों को कृषि योजनाओं का भरपूर लाभ उठाने की बात कही. गोष्ठी को सुखदेव महतो व अशोक कुमार चौधरी ने भी संबोधित किया. मौके पर प्रगतिशील कृषक दर्शन कुमार, रंजीत कुमार, देवेंद्र प्रसाद यादव, सीताराम चौधरी उपस्थित थे.

**कृषि विवि.** आयुर्वेद का महत्व अब दुनिया भर के लोग समझ रहे हैं

# औषधीय व सगंधीय पौधों का बाजार तीन सौ अरब डॉलर का : कुलपति

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में अनुसूचित जाति के लिए औषधीय एवं सगंधीय पौधों पर क्रेता-विक्रेता बैठक आयोजित की गई. विशिष्ट अतिथि के रूप में आईसीटी भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के उप महानिदेशक डॉ अनिल राय, औषधीय एवं सगंधीय पादप अनुसंधान निदेशालय गुजरात के निदेशक डॉ मनीष दास, आरसीएफसी कोलकाता के क्षेत्रीय निदेशक डा सौम्यजीत विश्वास, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में प्रधान वैज्ञानिक डॉ राम सुरेश शर्मा शामिल हुए. कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने कहा कि औषधीय एवं सगंधीय पौधों की विश्व भर में मांग है. आंकड़ों के मुताबिक इसका बाजार लगभग तीन सौ अरब डॉलर से ज्यादा का है. लेकिन किसानों को इसके विषय में जानकारी नहीं है. जिसके कारण उनको उचित मूल्य नहीं मिल पाता है. विश्वविद्यालय इन समस्याओं को ही ध्यान में रखकर त्रेता और विक्रेता बैठक आयोजित कर रहा है. उन्होंने कहा कि आयुर्वेद का महत्व अब दुनिया भर के लोग समझ रहे हैं. कोरोना काल में इसको लेकर और जागरूकता बढ़ी है. ऐसे में औषधीय प्रोडक्ट की मांग भी बढ़ रही है. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक बिहार में किसानों को प्रशिक्षित कर रहे हैं. साथ में उनके प्रोडक्ट को भी उचित दाम मिले इसको लेकर लगातार प्रयास कर रहे हैं. उन्होंने कहा कि इस बैठक के दौरान किसान और खरीदार एक साथ बैठकर एक- दूसरे की समस्याओं को समझेंगे. आने वाले समय में अपने उत्पाद के व्यापार को लेकर समझौता करेंगे. कुलपति ने कहा कि बिहार में औषधीय पौधों के उत्पादन में यह बैठक एक मिल का पत्थर साबित होगा. महानिदेशक डॉ अनिल राय ने आईसीटी के क्षेत्र में चल रहे प्रयासों के बारे में विस्तार से जानकारी दी. औषधीय पादप निदेशालय के निदेशक डॉ मनीष दास ने कहा कि विश्वविद्यालय में इस क्रेता-विक्रेता बैठक में विभिन्न राज्यों के सोलह से अधिक बडी कंपनी के प्रतिनिधि सम्मिलित हैं. जबकि बिहार के लगभग सभी राज्यों के औषधीय पौधों से जुड़े किसान भाग ले रहे हैं. बैठक के परिणामस्वरूप आने वाले दिनों में राज्य के उत्पादों को एक बड़ा बाजार मिलेगा. अनुसंधान निदेशक डॉ एके सिंह ने कार्यक्रम के दौरान अनुसंधान में हो रही प्रगति की जानकारी दी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ मयंक राय ने अतिथियों का स्वागत किया.

हर्बल चाय को रिलीज करते अतिथि.

**हर्बल चाय व राजेन्द्र हर्बल टी लांच:** कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के द्वारा विकसित हर्बल चाय, राजेन्द्र हर्बल टी को भी लांच किया गया. इस हर्बल टी का उत्पादन डॉ दिनेश राय के द्वारा किया गया है. कार्यक्रम के दौरान मंच संचालन डॉ ईश प्रकाश ने किया. जबकि धन्यवाद ज्ञापन डा दिनेश राय ने किया. कार्यक्रम के दौरान डीन डॉ उषा सिंह, डा अमरेश चंद्रा, डॉ पीपी श्रीवास्तव, डॉ रामसुरेश, निदेशक डा डीके राय, डा रत्नेश कुमार झा, डॉ शिवपूजन सिंह, डॉ मिनातुल्ला, डॉ महेश कुमार, डॉ कुमार राज्यवर्धन मौजूद थे.

प्रभात खबर
Wednesday, August 27, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68adfa205e34de3788b2a983

# कैंपस अलर्ट

## किसानों की आमदनी में सुधार लाने की जरूरत : डॉ तिवारी

**पूसा.** डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के सभागार में ग्रामीण युवकों और युवतियों के लिए पांच दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ. वैज्ञानिक विधि से बकरीपालन विषय पर प्रशिक्षण प्रारंभ करते हुए संस्थान के वरीय वैज्ञानिक डॉ आरके तिवारी ने कहा कि प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य बकरीपालन के माध्यम से अपने आजीविका में सुधार लाना है. साथ ही किसानों के आय में वृद्धि करना है. इस पांच दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान बकरियों के आवास व्यवस्था, उसके नस्ल, बीमारियों, उसकी रोकथाम एवं विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी दी जायेगी. प्रशिक्षण में समस्तीपुर जिले के लगभग 10 प्रखंडों से प्रतिभागी अपने ज्ञान में वृद्धि कर रहे हैं. बिहार में बकरीपालन की असीम संभावनाओं को देखते हुए सरकार के माध्यम से विभिन्न योजनाएं चलाई जा रही है. इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में लगभग 50 प्रतिभागी अपनी सहभागिता निभा रहे हैं. प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुख्य रूप से डॉ मनीष कुमार, डॉ प्रदीप राम, डॉ बीके गोंड आदि शामिल थे.

## विवि में शोकसभा आयोजित

शोकसभा में शामिल कर्मी.

**पूसा.** डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित प्रशासनिक भवन में शोकसभा हुई. इसमें कुशल सहायक कर्मचारी विशेश्वर राम को श्रद्धांजलि दी गयी. विवि के अधिष्ठाता, निदेशक, वैज्ञानिक एवं कर्मचारी शामिल थे.

प्रभात खबर
Wednesday, August 27, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68adfa205e34de3788b2a983

भास्कर 27/8/25 पेज 15

कृषि • इस रोग के लगने के बाद से केले की पत्तियां मर जाती हैं, जिससे उपज में काफी कमी आती है

# केले में लगने वाला ब्लैक सिगाटोका रोग फसल के लिए घातक है : कृषि वैज्ञानिक

भास्कर न्यूज | पूसा

केले कि पत्तियों पर लगने वाला ब्लैक सिगाटोका रोग राष्ट्रीय स्तर पर केले की फसल के लिए सबसे घातक रोग माना जाता हैं। यह रोग केले की पत्तियों पर लगने वाला (लीफ स्पॉट) एक धब्बानुमा रोग है। इस रोग ने दुनिया भर के कई देशों में केले की फसल को काफी नुकसान पहुंचाया है। भारत की बात करें तो यहां के भी लगभग सभी केला उत्पादक क्षेत्रों से जुड़े केले के बागों में यह रोग प्रमुखता से लगता है। इस रोग के लगने के बाद केले की पत्तियां मर जाती हैं जिससे फलों की उपज में भारी कमी आती है और फलों के गुच्छे मिश्रित होकर फल समय से पहले ही पक जाते हैं। केला उत्पादक किसान वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाकर इस रोग से अपने केले के बागों को बचा सकते हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड एवं अखिल भारतीय फल अनुसंधान परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ. संजय कुमार सिंह ने दी है। उन्होंने कहा कि यह रोग दो तरह का होता है काला (ब्लैक) सिगाटोका एवं पीला (येलो) सिगाटोका। ब्लैक सिगाटोका दुनिया भर के कई देशों से जुड़े केले के बागों के लिए एक महत्वपूर्ण रोग है। यह रोग केले का एक पर्ण रोग है जो फंगस स्यूडोसेर्कोस्पोरा फिजिएंसिस के कारण होता है। इसे ब्लैक लीफ स्ट्रीक (बीएलएस) रोग नाम से भी जानते है। ब्लैक सिगाटोका रोग सभी प्रमुख केला उत्पादक देशों में मौजूद है। उन्होंने बताया कि यह रोग खासकर दक्षिण-पूर्व एशिया, भारत, चीन, दक्षिणी प्रशांत द्वीप समूह, पूर्वी और पश्चिम अफ्रीका, संयुक्त राज्य अमेरिका (हवाई), ग्रेनेडा (कैरेबियन), त्रिनिदाद और मध्य और दक्षिण अमेरिका में व्यापक रूप से केले के फसल को नुकसान पहुंचाता रहा है। इतना ही नहीं इसके अलावे यह रोग पापुआ न्यू गिनी और टोरेस जलडमरूमध्य के कई द्वीपों से जुड़े क्षेत्रों में भी पाया जाता रहा है।

ब्लैक सिगाटोका रोग से संक्रमित केले की पत्तियां।

## किसान सिगाटोका रोग का ऐसे करें प्रबंधन

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि इस रोग से गंभीर रूप से प्रभावित केले की पत्तियों को किसान काटकर हटा दें। बाद में इन पत्तियों को बाग से बाहर निकालकर किसान जलाकर पूर्णतः नष्ट कर दें या मिट्टी में अधिक गहराई पर लगा दें। किसान इस रोग से बचाव के लिए केले के पौधों पर पेट्रोलियम आधारित खनिज तेल का छिड़काव 1 प्रतिशत एवं किसी एक कवकनाशी जैसे प्रोपिकोनाजोल (0.1 प्रतिशत) या कार्बेन्डाजिम व मैनकोजेब संयोजन (0.1 प्रतिशत) या ट्राइफ्लॉक्सीस्ट्रोब नि एवं टेबुकोनाजोल (1.5 ग्राम प्रति लीटर पानी के साथ मिलाकर 25 से 30 दिनों के अंतराल पर 5 से 7 बार छिड़काव करें। किसान इस तकनीक से इस रोग को प्रभावी ढंग से नियंत्रित कर सकते हैं। इस रोग को नियंत्रित कर किसान केले की उपज में 20 से 25 प्रतिशत तक की वृद्धि कर सकते हैं।

## रोग के लक्षण दिखे तो दवा का करें छिड़काव

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि ब्लैक सिगाटोका रोग लगने के बाद केले के पत्तों पर छोटे लाल-जंग खाए भूरे रंग का धब्बा बन जाता हैं। यह धब्बा पत्तियों के नीचे की तरफ से सबसे अधिक स्पष्ट दिखाई देते हैं। ये धब्बे केले के पत्तो पर धीरे-धीरे लंबे, चौड़े और काले होकर लाल-भूरे रंग के पत्ती की धारियाँ बनाने लगती हैं।प्रारंभिक धारियाँ पत्ती शिराओं के समानांतर चलती हैं और पत्ती के नीचे की ओर अधिक स्पष्ट दिखती हैं। बाद में यह धारियां चौड़ी हो जाती हैं और पत्ती की दोनों सतहों पर दिखाई देने लगती हैं। धारियां फैलती हैं और अधिक अंडाकार हो जाती हैं। बाद में घाव का केंद्र धँसा हुआ दिखाई देने लगता है और समय के साथ उक्त जगह धूसर हो जाता है। उन्होंने बताया कि संक्रमण के इस स्तर पर घाव के किनारे व आसपास एक पीला प्रभामंडल विकसित हो जाता है।

कार्यक्रम • डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में औषधीय व सुगंधीय पौधों पर क्रेता विक्रेता बैठक आयोजित

# औषधीय पौधों का बाजार पूरे विश्व में बढ़ रहा: वीसी

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में अनुसूचित जाति के लिए औषधीय एवं सुगंधीय पौधों पर क्रेता विक्रेता बैठक आयोजित की गई। बैठक का उद्घाटन जहाँ मुख्य अतिथि के रूप में पूसा विवि के कुलपति डॉ. पीएस पांडेय सहित अन्य अतिथियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। वहीं इस बैठक में विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. अनिल राय सह महानिदेशक आईसीटी भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली, डॉ. मनीष दास निदेशक औषधीय एवं सुगंधीय पादप अनुसंधान निदेशालय गुजरात, आरसीएफसी कोलकाता के क्षेत्रीय निदेशक डा. सौम्यजीत विश्वास एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. राम सुरेश शर्मा शामिल हुए। बैठक में मौजूद अतिथि, वैज्ञानिकों, क्रेता, विक्रेता, किसान आदि को संबोधित करते हुए कुलपति डॉ. पी एस पांडेय ने कहा कि औषधीय एवं सुगंधीय पौधों की विश्व भर में मांग है। आंकड़ों के मुताबिक इसका बाजार लगभग तीन सौ अरब डॉलर से ज्यादा का है और लगातार बढ़ रहा है। लेकिन किसानों को इसके विषय में जानकारी नहीं है जिसके कारण उनको उचित मूल्य नहीं मिल पाता है। विश्वविद्यालय इन समस्याओं को ध्यान में रखकर ही क्रेता और विक्रेता बैठक आयोजित कर रहा है। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद का महत्व अब दुनिया भर के लोग समझ रहे हैं। कोरोना काल में इसको लेकर और जागरूकता बढ़ी है। ऐसे में औषधीय प्रोडक्ट की मांग भी बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक बिहार में किसानों को प्रशिक्षित कर रहे हैं और साथ में उनके प्रोडक्ट को भी उचित दाम मिले इसको लेकर लगातार प्रयास कर रहे हैं।

बैठक को संबोधित करते कुलपति।

बैठक में शामिल अतिथि, कंपनी के प्रतिनिधि, वैज्ञानिक व किसान।

## बिहार में औषधीय पौधों के उत्पादन में मील का पत्थर साबित होगा

उन्होंने कहा कि बिहार में औषधीय पौधों के उत्पादन में यह बैठक एक मील का पत्थर साबित होगा। कार्यक्रम के दौरान सह महानिदेशक डॉ. अनिल राय ने विश्वविद्यालय के कुलपति के प्रयासों की सराहना की और कहा कि उनके कार्यकाल में विश्वविद्यालय तेजी से प्रगति कर रहा है। उन्होंने आईसीटी के क्षेत्र में चल रहे प्रयासों के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। औषधीय पादप निदेशालय के निदेशक डॉ.मनीष दास ने कहा कि विश्वविद्यालय में इस क्रेता विक्रेता बैठक में विभिन्न राज्यों के सोलह से अधिक बड़ी कंपनी के प्रतिनिधि सम्मिलित हो रहे हैं जबकि बिहार के लगभग सभी जिलों के औषधीय पौधों से जुड़े किसान भी भाग ले रहे हैं। यह एक अनूठा मिलन है। इस बैठक के परिणामस्वरूप आने वाले दिनों में राज्य के उत्पादों को एक बड़ा बाजार मिलेगा।

## पूसा विश्वविद्यालय 18वीं रैंक से आठवीं रैंक पर आई

डॉ. दास ने विश्वविद्यालय मे विकास कार्यों की भी सराहना की और कहा कि अठावनवे रैंक से विश्वविद्यालय आठवें रैंक पर आ गया है। यह कुलपति डॉ.पांडेय के नेतृत्व की एक बड़ी उपलब्धि है। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ.ए के सिंह ने कार्यक्रम के दौरान अनुसंधान में हो रही प्रगति की जानकारी अतिथियों को दी। उन्होंने औषधीय पौधों के उत्पादन को बढ़ावा देने पर भी जोर दिया। स्नातकोत्तर महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ.मयंक राय ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और बैठक के उद्देश्य के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में विश्वविद्यालय इस तरह के और भी बैठक को आयोजित करेगा जिससे कि किसानों को सहायता मिल सके। कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के द्वारा विकसित हर्बल चाय यानी राजेन्द्र हर्बल टी को भी लांच किया गया। इस हर्बल टी का उत्पादन डॉ.दिनेश राय के द्वारा किया गया है। मंच संचालन डॉ.इश प्रकाश ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन डा.दिनेश राय ने किया। मौके पर डॉ.शिवपूजन सिंह, डॉ.मिनातुल्ला, डॉ.महेश कुमार, डॉ.कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न शिक्षक, वैज्ञानिक, पदाधिकारी, कर्मी, किसान आदि मौजूद थे।

हर्बल टी को लान्च करते मुख्य अतिथि, वैज्ञानिक व किसान • जागरण

# औषधीय पौधों की पूरे विश्व में मांग, बड़े बाजार की संभावना

संस, जागरण, पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में अनुसूचित जाति के लिए औषधि एवं सगंधीय पौधों पर क्रेता एवं विक्रेता की बैठक आयोजित हुई। औषधीय एवं पादप अनुसंधान निदेशालय गुजरात के निदेशक डा. मनीष दास ने कहा कि विश्वविद्यालय की बैठक में विभिन्न राज्यों के 16 से अधिक कंपनी के प्रतिनिधि शामिल रहे। लगभग सभी जिलों से औषधीय पौधों से जुड़े किसान भाग ले रहे हैं। आने वाले दिनों में राज्य के उत्पादों को एक बड़ा बाजार मिलेगा। कुलपति डा. पीएस पांडे ने कहा कि औषधीय एवं संगधीय पौधों की विश्व भर में मांग है। आंकड़ों के मुताबिक इसका बाजार लगभग 300 अरब डालर से ज्यादा है। किसानों को इसके विषय में जानकारी नहीं है। इसके कारण उनका उचित मूल्य नहीं मिल पाता है। वि इन समस्याओं को ध्यान में रखकर क्रेता और विक्रेता की बैठक कर रहा है। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद का महत्व अब दुनिया भर के लोग समझ रहे हैं। कोरोना काल में इसको लेकर और जागरूकता बढ़ी है। ऐसे में औषधि प्रोडक्ट की मांग भी बढ़ रही है। विश्वविद्यालय के विज्ञानी बिहार में किसानों को प्रशिक्षित कर रहे हैं। उचित दाम मिले इसको लेकर लगातार प्रयास कर रहा है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के सह महानिदेशक डा. अनिल राय ने कुलपति के प्रयासों की सराहना की। अनुसंधान निदेशक डा. एके सिंह ने अनुसंधान में हो रही प्रगति की जानकारी दी। स्नातकोत्तर महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. मयंक राय ने स्वागत किया।

**Dainik Jagran 27-08-2025**

# ‘लोकल फॉर वोकल को करें साकार’

**पूसा, निज संवाददाता।** डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के विद्यापति सभागार में मंगलवार को अनुसूचित जाति के लिए औषधीय एवं सुगंधित पौधों पर क्रेता विक्रेता बैठक का आयोजन किया गया। इसमें विवि व देश के कई राज्यों के वैज्ञानिक व किसानों ने हिस्सा लिया।

इस दौरान मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद औषधीय पादप निदेशालय आनंद, गुजरात के निदेशक डॉ. मनीष दास ने कहा कि यह हाई वैल्यू क्रॉप है। जरूरत है छोटे व मध्यम किसानों को ध्यान में रखकर नीति निर्धारण व वैज्ञानिक तकनीकों को बढ़ावा देने की। ताकि इससे जुड़े लोगों को बेहतर लाभ व प्रोत्साहन मिल सकेगा। उन्होंने पीएम के मेक ईन इंडिया व लोकल फॉर वोकल के स्लोगन को साकार करने पर बल दिया।

पूसा कृषि विवि के विद्यापति सभागार में राजेन्द्र हर्बल टी को लॉंच करते कुलपति व अन्य।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय ने कहा कि आने वाला समय औषधीय से जुड़े कारोबार का होगा। उन्होंने बदलते समय में औषधीय पौधों के गुणों को प्रसारित कर लोगों को जागरूक करने एवं मेडिसिनल प्लान्ट की प्रोसेसिंग यूनिट पूसा में लगवाने पर बल दिया। जिससे किसान यहां आकर इसका लाभ ले सकें। मौके पर आईसीआर के एडीजी डॉ अनिल राय, डॉ सौम्यजीत विश्वास, डॉ राम सुरेश शर्मा आदि ने भी संबोधित किया।

**Hindustan 27-08-2025**

# गरीबों का एटीएम है बकरी पालन व्यवसायः डॉ. तिवारी

**पूसा, निज संवाददाता।** डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि से जुड़े कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली के प्रमुख डॉ. आरके तिवारी ने कहा कि कृषि के बदलते परिवेश में खेती के साथ बकरी पालन जैसे विकल्पों को बढ़ावा देना समय की मांग है। यह स्वरोजगार को बढ़ावा देने के साथ आर्थिक रूप से सबल बनाने में अहम भूमिका निभाता है। जरूरत है वैज्ञानिक तरीके से कार्यो को बढ़ावा देने की।

इसमें इस तरह का प्रशिक्षण भविष्य की चुनौतियों को दूर करने के साथ व्यवसाय बढ़ोतरी में अहम भूमिका निभायेगा। वे जिले के 10 प्रखंडों से आये चयनित किसान प्रशिक्षुओं को संबोधित कर रहे थे। मौका था ग्रामीण युवक-युवतियों का बकरी पालन विषय पर 5 दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र का। उन्होंने कहा कि बकरी पालन गरीबों का एटीएम के रूप में कार्य करता है। उन्होंने बकरी के आवासीय व्यवस्था, नस्ल, बिमारियां व उसके निदान, सरकार की योजनाओं आदि पर विस्तार से चर्चा की। भ्रमणशील पशु चिकित्सक डॉ. मनीष कुमार ने बकरी पालन में सरकार से मिलने वाली सुविधाओं से अवगत कराते हुए कहा कि राज्य में बकरी पालन की असीम संभावनाएं हैं।

**Hindustan 27-08-2025**

# दुनिया भर के लोग अब समझ रहे आयुर्वेद का महत्व : कुलपति

**पूसा (एसएनबी)।** डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के विद्यापति सभागार में अनुसूचित जाति के लिए औषधीय एवं सगेंधिय पौधों से जुड़े विषय पर क्रेता विक्रेता बैठक का आयोजन किया गया। जिसका शुभारंभ मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि सहित कुलपति ने दीप प्रज्वलित कर किया। तदुपरांत स्नातकोत्तर महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ मयंक राय ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए बैठक के उद्देश्य से अवगत कराया। बैठक के बारे में जानकारी देते हुए औषधीय एवं सगंधीय पादप अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ मनीष दास ने कहा कि आज की इस क्रेता विक्रेता बैठक में विभिन्न राज्यों के सोलह से अधिक बडी कंपनियों के प्रतिनिधि और बिहार के लगभग सभी जिलों के औषधीय पौधों से जुड़े किसानों का एक अनूठा मिलन है। उन्होंने ने कहा कि निश्चित ही इस मिलन कार्यक्रम के परिणामस्वरूप आने वाले दिनों में राज्य के उत्पादो को एक बड़ा बाजार मिलेगा।

उद्घाटन करते अतिथि व अन्य।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डीआरपीसीएयू के कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने कहा कि औषधीय एवं सगंधीय पौधों एवं इनके उत्पादों की विश्व भर में मांग है। आंकड़ों के मुताबिक इसका बाजार लगभग तीन सौ अरब डॉलर से ज्यादा का है जो लगातार बढ़ रहा है। लेकिन किसानों को इसके विषय में समुचित जानकारी नहीं है, जिसके कारण उनको अपने उत्पाद का उचित मूल्य नहीं मिल पा रहा है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर क्रेता और विक्रेता मिलन कार्यक्रम आयोजित किया है। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद का महत्व अब दुनिया भर के लोग न सिर्फ समझ रहे है बल्कि महसूस भी कर रहे है। खासकर कोरोना काल में इसको लेकर लोगों में जागरूकता बढ़ी है। जिस कारण औषधीय उत्पादों की मांग भी बढ़ी है। डॉ पाण्डेय ने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक बिहार में किसानों को प्रशिक्षित कर रहे है और साथ में उनके उत्पादों को भी उचित दाम मिले इसको लेकर लगातार प्रयास कर रहे है। उन्होने कहा कि इस बैठक के दौरान किसान और खरीददार एक साथ बैठकर एक दूसरे की समस्याओं को समझेंगे और आने वाले समय में अपने उत्पाद के व्यापार को लेकर समझौता करेंगे। उन्होंने कहा कि बिहार में औषधीय पौधों के उत्पादन में यह बैठक एक मील का पत्थर साबित होगा। इस अवसर पर उपस्थित सह महानिदेशक डॉ अनिल राय ने विश्वविद्यालय के कुलपति के प्रयासों की सराहना की और आईसीटी के क्षेत्र में चल रहे प्रयासों के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। इस दौरान उपस्थित आरसीएफसी कोलकाता के क्षेत्रीय निदेशक डॉ सौम्यजीत विश्वास, एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में प्रधान वैज्ञानिक डॉ राम सुरेश शर्मा ने विषय से जुड़ी कई महत्वपूर्ण जानकारियां दी।

Rashtriya Sahara 28-08-2025

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 31 अगस्त तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में बादल छाए रह सकते हैं। अगले 48 घंटे तक अनेक स्थानों पर वर्षा होने की संभावना कम है। कुछ स्थानों पर हल्की वर्षा हो सकती है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस दौरान पूरवा हवा चलेगी लेकिन तापमान में गिरावट की संभावना नहीं है।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| समस्तीपुर | | |
| 27 अगस्त | 33.8 | 25.2 |
| 28 अगस्त | 33.8 | 26.0 |
| दरभंगा | | |
| 27 अगस्त | 33.8 | 26.0 |
| 28 अगस्त | 34.0 | 26.0 |
| पटना | | |
| 27 अगस्त | 35.0 | 27.5 |
| 28 अगस्त | 35.0 | 27.5 |

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 27-08-2025

# कृषि तकनीकों को उतारने की जरूरत : डॉ राय

प्रमाण-पत्र के साथ प्रतिभागी .

**पूसा.** डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के सभागार में समेकित पोषक तत्व प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण संपन्न हुआ. अध्यक्षता करते हुए डीन पीजी सह प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ मयंक राय ने कहा कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम उनके लिए काफी लाभकारी रहेगा. उन्होंने इस सत्र में बताये हुए कृषि तकनीकों के विभिन्न बिंदुओं को अपने कृषि जीवन में भी उतारने की जरूरत है. मृदा जांच एवं मृदा स्वास्थ्य की महत्ता के बारे में भी प्रशिक्षणार्थियों को विस्तृत जानकारी दी गई है. समेकित शब्द का अर्थ समझाते हुए समेकित पोषक तत्व प्रबंधन की महत्ता के बारे में बताया. इस कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ आरके तिवारी ने सभी आगत अतिथियों एवं प्रशिक्षणार्थियों को स्वागत करते हुए समेकित पोषक तत्व प्रबंधन के बारे में बताया. इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 30 लोगों ने भाग लिया. प्रशिक्षण कार्यक्रम में 32 सैद्धांतिक एवं 12 प्रायोगिक सत्र का विभिन्न विषयों पर आयोजन किया गया. इस प्रशिक्षण का पाठ्यक्रम समन्वय का कार्य इं. विनीता कश्यप एवं निशा रानी के माध्यम से किया गया.

प्रभात खबर
Thursday, August 28, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68af5c379744364ffcf382af

भास्कर 28/8/24 पेज 15

# समेकित पोषक तत्व के प्रबंधन की महत्ता को लेकर प्रशिक्षणार्थियों को दी गई ट्रेनिंग

## कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली में समेकित पोषक तत्व प्रबंधन विषय पर चल रहा प्रशिक्षण

भास्कर न्यूज | पूसा

कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली में समेकित पोषक तत्व प्रबंधन विषय पर चल रहा 15 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम बुधवार को संपन्न हो गया। समापन कार्यक्रम में पहुंचे डॉ. मयंक राय ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि समेकित पोषक तत्व प्रबंधन फसल उत्पादकता बढ़ाने और मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखने के लिए जैविक खाद, रासायनिक उर्वरकों और जैव-उर्वरकों जैसे पोषक तत्वों के सभी संभावित स्रोतों का एकीकृत रूप से उपयोग करने का एक समग्र दृष्टिकोण है। उन्होंने कहा कि समेकित पोषक तत्व प्रबंधन का उद्देश्य फसल को संतुलित पोषण प्रदान करना, मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखना और रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम करते हुए टिकाऊ और लागत प्रभावी कृषि उत्पादन प्राप्त करना है। उन्होंने कहा कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम किसानों के लिए काफी लाभकारी साबित होगा। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से प्रशिक्षण के विभिन्न बिंदुओं को अपने कृषि जीवन में उतारने को कहा। उन्होंने मृदा जांच एवं मृदा स्वास्थ्य की महत्ता के बारे में भी प्रशिक्षणार्थियों को विस्तार से बताया। उन्होंने समेकित शब्द का अर्थ समझाते हुए समेकित पोषक तत्व प्रबंधन की महत्ता पर भी चर्चा की। कृषि विज्ञान केंद्र के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ. आर के तिवारी ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को बधाई देते हुए किसानों को समेकित पोषक तत्व प्रबंधन के बारे में बताया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 30 लोगों ने भाग लिया। प्रशिक्षण में कुल 32 थ्योरी एवं 12 प्रैक्टिकल क्लास विभिन्न विषयों पर आयोजित किये गए। प्रशिक्षण का पाठ्यक्रम समन्वय का कार्य इं विनीता कश्यप एवं निशा रानी ने किया।

सर्टिफिकेट के साथ प्रशिक्षणार्थी।

# कृषि विवि में छात्रों ने गणेश उत्सव का आयोजन

**पूसा, निज संवाददाता।** डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि मुख्यालय परिसर में बुधवार को गणेश उत्सव का आयोजन किया गया। इसमें कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय, कुलसचिव डॉ. मृत्युंजय कुमार, निदेशक छात्र कल्याण डॉ. रमण त्रिवेदी, वैज्ञानिक डॉ. मुकेश कुमार, डॉ. शंकर झा समेत विवि के डीन- डायरेक्टर व छात्रों ने हिस्सा लिया। पुजारी पं. गगेश झा ने पूर्ण विधि विधान से छात्रों को पूजा अर्चना कराई। इस दौरान आरती व प्रसाद वितरण के बाद पूजा का समापन किया गया।

**कल्याणपुर में पांच जगहों पर हो रहा**

पूसा कृषि विवि परिसर में आयोजित गणेश उत्सव में शामिल कुलपति, कुलसचिव व छात्र।

**गणेश पूजा :** क्षेत्र अंतर्गत विभिन्न पांच जगहों पर गणेश पूजा का आयोजन किया गया है। क्षेत्र के बासुदेवपुर, मूसेपुर, भागीरथपुर, मुक्तापुर एवं रमोली गांव में गणेश पूजा का आयोजन धूमधाम से किया जा रहा है।

## गणेश चतुर्थी पर निकली कलश शोभायात्रा

**वारिसनगर।** प्रखंड क्षेत्र में गणेश चतुर्थी पूजा को लेकर बुधवार को जगह जगह कलश शोभायात्रा निकाली गई। बाजार समिति के समीप मंदिर प्रागंण में बुधवार को काफी संख्या में महिलाओं ने बूढ़ी गंडक नदी से कलश में जल भरकर मंदिर प्रागंण में स्थापित किया। आचार्य ने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ पूजा का शुभारंभ किया। गणेश जी की मूर्ति आकर्षण का केंद्र बना था।

Hindustan 28-08-2025

# कृषि विवि ने औषधीय गुण युक्त 'राजेन्द्र हर्बल टी' विकसित की

हि खास

**पूसा, निसं।** चाय के शौकीन लोग अब औषधीय गुण युक्त चाय का सेवन कर सकेंगे। यह स्वाद व सुगंध के साथ कई रोगों पर लगाम लगाने में अहम भूमिका निभायेगा। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के औषधिय एवं सुगंधीय परियोजना के प्रमुख डॉ. दिनेश राय व उनकी टीम ने इसे विकसित किया है। नाम है राजेन्द्र हर्बल टी।

यह चाय सर्दी खांसी में लाभदायक होने के साथ रोग प्रतिरोधक झमता विकसित करता है। इसे पीने युक्त बनाना भी बहुत आसान है। वैज्ञानिक ने बताया कि कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय के मार्गदर्शन में इसकी ब्रांडिंग की दिशा में कार्य किया जा रहा है। मंगलवार को बैठक में कुलपति व अन्य अतिथियों ने इस चाय की लॉचिंग की है।

> यह चाय तुलसी, मीठी तुलसी, अदरक, लेमन ग्रास, मेन्था, तेजपत्ता, स्टीविया, अर्जुन छाल, दालचीनी, इलाईची से बनाया गया है। अब इसे बाजार तक पहुंचाने के लिए जरूरी व विभागीय कार्यो का निष्पादन कर मार्केट तक पहुंचाने की दिशा में कार्य जारी है।
>
> **डॉ. दिनेश राय**, वैज्ञानिक

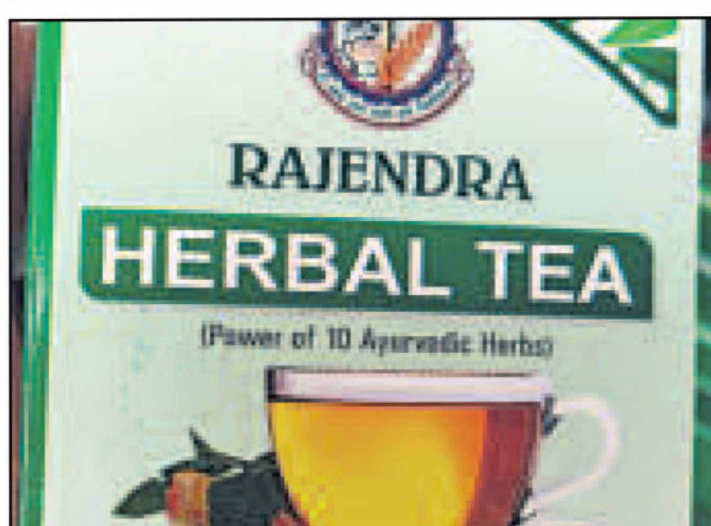


पूसा कृषि विवि से विकसित राजेन्द्र हर्बल टी।

**Hindustan 28-08-2025**

# केवि के बिरौली में समेकित पोषक तत्व प्रबंधन विषयक 15 दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न

**समस्तीपुर/पूसा (एसएनबी)।** कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के द्वारा 15 दिवसीय समेकित पोषक तत्व प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जो कि दिनांक 13 अगस्त से 27 अगस्त तक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हुआ। समेकित पोषक तत्व प्रबंधन प्रशिक्षण का समापन 27 अगस्त को निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के द्वारा किया गया। इस समापन कार्यक्रम में डॉक्टर मयंक राय ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम उनके लिए काफी लाभकारी रहेगा एवं उन्होंने इस सत्र में बताए हुए विभिन्न बिंदुओं को अपने कृषि जीवन में भी उतारने को कहा एवं उन्होंने मृदा जांच एवं मृदा स्वास्थ्य की महत्ता के बारे में भी प्रशिक्षणार्थियों को विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने समेकित शब्द का अर्थ समझाते हुए समेकित पोषक तत्व प्रबंधन की महत्ता के बारे में बताया। इस कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉक्टर आर के तिवारी ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को बधाई देते हुए समेकित पोषक तत्व प्रबंधन के बारे में बताया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 30 लोगों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 32 थ्योरी एवं 12 प्रैक्टिकल क्लास का विभिन्न विषयों पर आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण का पाठ्यक्रम समन्वय का कार्य इं विनीता कश्यप एवं श्रीमती निशा रानी के द्वारा किया गया।

कार्यक्रम को संबोधित करते अतिथि व मंचासीन अन्य।

Rashtriya Sahara 28-08-2025

# किसानों को समेकित कृषि प्रणाली समझने की जरूरत : डॉ झा

**पूसा .** बिहार के किसानों को समेकित कृषि प्रणाली को सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक रूप से समझने की जरूरत है. तभी इसे अपना कर आर्थिक स्थिति को सबल बनाने में कामयाबी हासिल कर सकते हैं. यह बात डॉ रत्नेश कुमार झा ने कही. वे प्रशिक्षु किसानों को संबोधित कर रहे थे. उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन से निबटने के लिए वैज्ञानिक सतत प्रयासरत हैं. आज की दौर में किसान मछलीपालन करना नहीं जान रहे हैं. वह सिर्फ मछली को पकड़ना और खाना ही जानते हैं. प्रत्येक मछली की प्रजातियों की अलग-अलग प्रकृति होती है. उसे भी मत्स्यपालकों को अध्ययन करने की आवश्यकता है. तालाब में मौजूद सम्पूर्ण जल को सदुपयोग करने पर ही समेकित मत्स्यपालन संभव हो पायेगा. किसानों को मोतीपालन के क्षेत्र में भी आगे बढ़ने की जरूरत है. राज्य में रंगीन मछलियों के व्यवसाय की अपार संभावनाएं हैं. वैज्ञानिक डॉ फूलचंद ने कहा कि किसानों को बेहतर आमदनी के लिए धान के साथ मत्स्यपालन करने की आवश्यकता है. आगत अतिथियों का स्वागत सह संचालन करते हुए प्रसार शिक्षा निदेशालय के उपनिदेशक प्रशिक्षण डॉ बिनीता सतपथी ने कहा कि प्रशिक्षण के इस सत्र में प्रतिभागियों वैज्ञानिक विधि से मत्स्यपालन के तकनीक से अवगत होंगे. प्रशिक्षण में बहुत ही बारीकी के साथ सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक सत्रों को समाहित किया गया है. किसानों को सही समय से समुचित इनपुट देने का प्रबंध किया गया है. निश्चित रूप से किसानों को मत्स्यपालन के क्षेत्र में कम लागत में बेहतर आमदनी की दिशा में ज्ञानवर्धन किया जा रहा है. धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डॉ संजीव कुमार ने किया. मौके पर डीएफओ सहित पूर्णिया जिले के 40 प्रतिभागियों के अलावा टेक्निकल सेल से सुरेश कुमार, सूरज कुमार, विक्की कुमार आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Friday, August 29, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68b0bc852ffcdcd3d8ad3bf8

भास्कर 29/8/25 पेज 16

**आयोजन • बेहतर उत्पादन के लिए समेकित मत्स्य पालन विषय पर 6 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम**

# किसानों को वैज्ञानिक तकनीक से मछली पालन कर अधिक आय प्राप्त करने के लिए दी गई जानकारियां : डॉ. आरके झा

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पुसा के संचार केंद्र भवन में पूर्णिया से पहुंचे किसानों के लिए बेहतर उत्पादन के लिए समेकित मत्स्य पालन विषय पर 6 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण का उद्घाटन सस्य विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक डॉ. आरके झा ने किया। इस अवसर पर किसानों को संबोधित करते हुए डॉ. आरके झा ने कहा कि बिहार के किसानों को अक्सर कभी सुखाड़ तो कभी बाढ़ की विभीषिका झेलना पड़ता है। हालांकि जलवायु परिवर्तन के इस दौर में किसान सहित आम जन मानस भी इससे अछूता नहीं है। इससे निबटने के लिए हमारे वैज्ञानिक सतत प्रयासरत है। उन्होंने कहा कि आज के दौर में किसान मछली पालन करना नहीं बल्कि सिर्फ मछली पकड़ना और उसे खाना जानते है। किसानों को वैज्ञानिक तकनीक से मछलीपालन कर अधिक आय प्राप्त करने की जरूरत हैं। उन्होंने कहा कि प्रत्येक मछली

प्रशिक्षणार्थियों के साथ वैज्ञानिक।

के प्रजातियों का अलग अलग प्रकृति होता है। ऐसे में इस पर भी मत्स्य पालकों को अध्ययन करने की आवश्यकता है। तालाब में मौजूद सम्पूर्ण जल को सदुपयोग करने पर ही समेकित मत्स्य पालन संभव हो पाएगा। किसानों को मोती पालन के क्षेत्र में भी आगे बढ़ाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि राज्य में रंगीन मछलियों के व्यवसाय में अपार संभावनाएं मौजूद है। प्रसार शिक्षा निदेशालय के सह प्राध्यापक डॉ. फूलचंद ने कहा कि किसानों को बेहतर आमदनी के लिए धान के साथ-साथ मत्स्य पालन करने की भी आवश्यकता है।

## प्रतिभागी वैज्ञानिक विधि से मत्स्य पालन करने के तकनीक जानेंगे

आगत अतिथियों का स्वागत सह संचालन करते हुए प्रसार शिक्षा निदेशालय के उपनिदेशक प्रशिक्षण डॉ. विनीता सतपथी ने कहा कि प्रशिक्षण के इस सत्र में प्रतिभागी वैज्ञानिक विधि से मत्स्य पालन करने के तकनीक से अवगत होंगे। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण में बहुत ही बारीकी के साथ सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक सत्रों को समाहित किया गया है। किसानों को सही समय से समुचित इनपुट देने का प्रबंध किया गया है। इस प्रशिक्षण से निश्चित रूप से किसानों को मत्स्य पालन के क्षेत्र में कम लागत में बेहतर आमदनी देने की दिशा में उनका ज्ञानवर्धन किया जाएगा। धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डॉ. संजीव कुमार ने किया। मौके पर डीएफओ सहित पूर्णिया जिले के 40 प्रतिभागियों के अलावे टेक्निकल सेल से सुरेश कुमार, सूरज कुमार, विक्की कुमार आदि मौजूद थे।

# पूसा में मछली पालन पर पूर्णिया के किसानों को मिला प्रशिक्षण

संस, जागरण, पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के संचार केंद्र स्थित पंचतंत्र भवन में मत्स्यकी पालन पर छह दिनी प्रशिक्षण आयोजित की गई। विज्ञानी डा. रत्नेश झा ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि बिहार के किसानों को अक्सर कभी सुखार से तो कभी बाढ़ की विभीषिका झेलनी पड़ती है। जलवायु परिवर्तन की दौर में किसान सहित आम जन मानस भी अछूता नहीं है। इससे निबटने के लिए हमारे देश विदेश के विज्ञानी सतत प्रयासरत हैं। आज के दौर में किसान मछली पालन करना नहीं जान रहे हैं। वह सिर्फ मछली को पकड़ना और खाना ही जानते हैं। किसानों को मोती पालन के क्षेत्र में भी आगे बढ़ने की जरूरत है। स्वागत सह संचालन करते हुए प्रसार शिक्षा निदेशालय के उपनिदेशक प्रशिक्षण डा. विनीता सतपथी ने कहा कि प्रशिक्षण के इस सत्र में प्रतिभागियों वैज्ञानिक विधि से मत्स्य पालन के तकनीक से अवगत होंगे। धन्यवाद ज्ञापन विज्ञानी डा. संजीव कुमार ने किया। मौके पर डीएफओ सहित पूर्णिया जिले के 40 प्रतिभागियों के अलावे टेक्निकल सेल से सुरेश कुमार, सूरज कुमार, विक्की कुमार आदि मौजूद रहे।

**Dainik Jagran 29-08-25**

# आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 19 अगस्त तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी कर बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में आसमान में बादल छाए रहेंगे। अगले 48 घंटे तक अनेक स्थानों व तराई के कुछ क्षेत्रों में वर्षा हो सकती है। हालांकि पूर्वानुमान के दौरान वर्षा की संभावना में कमी आएगी। मौसम विज्ञानी डा . ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 32 से 34 व न्यूनतम 27 से 29 डिग्री तक रहेगा।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| **समस्तीपुर** | | |
| 29 अगस्त | 32.0 | 27.0 |
| 30 अगस्त | 33.0 | 27.0 |
| **दरभंगा** | | |
| 29 अगस्त | 33.0 | 27.0 |
| 30 अगस्त | 33.0 | 27.5 |
| **पटना** | | |
| 29 अगस्त | 34.5 | 28.5 |
| 30 अगस्त | 34.5 | 28.5 |

डिग्री सेल्सियस में

**Dainik Jagran 29-08-2025**

**कार्यक्रम** | डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के पंचचंत्र सभागार में बेहतर उत्पादन के समेकित मत्स्य पालन विषय पर प्रशिक्षण आयोजित

# मछली का ग्रोथ रेट होता है काफी अच्छा:डॉ. रत्नेश

कृषि विवि में प्रशिक्षुओं को संबोधित करते प्राध्यापक डॉ. रत्नेश कुमार झा।

गुरुवार को आयोजित कार्यक्रम में कृषि विश्वविद्यालय में मौजूद प्रशिक्षु।

**पूसा, निज संवाददाता।** डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के प्राध्यापक डॉ. रत्नेश कुमार झा ने कहा कि राज्य में बाढ़ व सुखाड़ की स्थिति निरंतर बनी रहती है। ऐसे में पानी के जमाव वाले क्षेत्रों का समुचित उपयोग करने की जरूरत है। इसके तहत समेकित मत्स्य पालन एक बेहतर विकल्प है। इसमें मछली पालन के साथ बतख पालन, सब्जी उत्पादन जैसे विकल्पों को बढ़ावा देने की जरूरत है। वे गुरूवार को विवि के पंचतंत्र सभागार में बेहतर उत्पादन के समेकित मत्स्य पालन विषय पर छह दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि खेती के बदलते दौर में सघन खेती, पर्ल कल्चर, ऑरनामेंटल फिश के उत्पादन जैसे कार्यों को व्यवसायिक रूप देकर आर्थिक समृद्धि हासिल की जा सकती है। उन्होंने कहा कि मछली का ग्रोथ रेट काफी अच्छी होती है। जरूरत है वैज्ञानिक तकनीकों को उपयोग में लाकर कार्य करने की। वैज्ञानिक डॉ. फूल चन्द ने कहा कि मछली स्वास्थ्य बर्द्धक होने के साथ आर्थिक रूप से सबल बनाने में अहम भूमिका निभाता है। खेती के साथ इसको व्यवसायिक रूप देना समय की मांग है। संचालन करते हुए प्रशिक्षण आयोजक सह प्रसार शिक्षा की विभागाध्यक्ष डॉ. विनिता क्षतपति ने कहा कि मछली उत्पादन के साथ उसे आहार में शामिल करने की जरूरत है। यह आत्मनिर्भर बनाने के साथ आर्थिक समृद्धि का राह बनाता है। धन्यवाद डॉ. संजीव कुमार ने दिया।


Hindustan 29-08-2025

# 30-31 अगस्त को तराई क्षेत्रों में हल्की वर्षा की संभावना

**समस्तीपुर** .डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा केन्द्र व भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से 30 अगस्त से 03 सितम्बर 2025 तक के लिये मौसम पूर्वानुमान जारी किया गया है. इस अवधि में सामान्य से कम वर्षा होगी, 30-31 अगस्त को अनेक स्थानों पर विशेष रूप से तराई ाक्षेत्र में हल्की से मध्यम वर्षा हो सकती है. मैदानी भागों में कहीं-कही हल्की वर्षा होगी. इस अवधि में अधिकतम तापमान 32-34 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है. न्यूनतम तापमान 26-28 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है. सापेक्ष आद्रर्ता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत के आसपास तथा दोपहर में 40 से 45 प्रतिशत रहने की संभावना है. पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 12 से 15 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पूरवा हवा चलने की संभावना है. आज का अधिकतम तापमान 32.2 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 0.9 डिग्री सेल्सियस कम रहा.वहीं न्यूनतम तापमान 25.5 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 1.2 डिग्री सेल्सियस कम रहा

प्रभात खबर
Friday, August 29,
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com

# किसानों को एक ही खेत से धान व मछली से आय : डॉ विनिता सतपथी

**प्रतिनिधि, पूसा**

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के संचार केंद्र स्थित पंचतंत्र सभागार में बेहतर उत्पादन के लिए समेकित मत्स्यपालन विषय पर जारी प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र वितरण के साथ सम्पन्न हुआ. अध्यक्षता करते हुए प्रसार शिक्षा निदेशालय के उपनिदेशक प्रशिक्षण डॉ विनिता सतपथी ने कहा कि समेकित कृषि प्रणाली में मत्स्यपालन से आय बढ़ती है. भूमि की उर्वरता बनी रहती है. रासायनिक खाद का कम उपयोग होता है. परिवार के लिए पौष्टिक आहार मिलता है. मछलीपालन से प्राप्त अपशिष्ट उर्वरक का काम करते हैं. मछलियां धान के खरपतवार और कीड़े खाकर फसल को सुरक्षित रखती हैं. इससे साल भर रोजगार मिलता है. आर्थिक स्थिरता आती है. उन्होंने कहा कि किसान एक ही खेती से धान और मछली दोनों से आय अर्जित करते हैं. जिससे कुल आय बढ़ती है. मवेशियों के मल-मूत्र और धान के अवशेषों का उपयोग मछलियों के आहार और खाद के रूप में किया जाता है. जिससे लागत कम होती है. यह प्रणाली एक ही स्थान पर कई कृषि गतिविधियों को एक साथ लाती है. जिससे किसानों और उनके परिवारों के लिए साल भर रोजगार के अवसर पैदा होते हैं. वैज्ञानिक डॉ फूलचंद, सुरेश कुमार, सूरज कुमार, विक्की कुमार मौजूद थे.

समापन सत्र में प्रमाण-पत्र के साथ प्रतिभागी.

प्रभात खबर
Friday, August 29, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68b0bc852ffcdcd3d8ad3c19

कृषि • कोरोनाकाल के बाद से बाजारों में बढ़ गई है अश्वगंधा की मांग, कीमत भी अच्छी मिल रही

# अश्वगंधा की खेती कर किसान लागत से तीन गुना मुनाफा प्राप्त कर सकते हैं

भास्कर न्यूज | पूसा

भारत में अश्वगंधा की पहचान एक महत्वपूर्ण औषधीय फसल के अलावे नकदी फसल के रूप में भी की जाती है। अश्वगंधा आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में प्रयोग किया जाने वाला एक महत्वपूर्ण और गुणकारी पौधा हैं। इसकी खेती से किसानों को लागत से 3 गुना अधिक मुनाफा प्राप्त हो सकता है। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के औषधीय विभाग के वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक डॉ. दिनेश राय ने दी है। उन्होंने बताया कि किसान अश्वगंधा की खेती कर उसकी फसल से लगभग प्रति हेक्टेयर 3 से 4 क्विंटल जड़ एवं 50 किलोग्राम बीज प्राप्त कर सकते हैं। पत्तियों का सूखना और फलों का लाल होना ही इस फसल के परिपक्वता का मुख्य प्रमाण होता है। किसान अश्वगंधा के परिपक्व पौधों को उखाड़कर जड़ों को गुच्छे से दो सेमी ऊपर से काटकर इसे सुखाते हुए तैयार करते हैं। उन्होंने बताया कि अश्वगंधा सर्दी-जुकाम जैसी बीमारियों से लड़ने की शक्ति प्रदान करता है। इससे शरीर में इम्युनिटी पॉवर काफी अधिक बढ़ती हैं। अश्वगंधा मानसिक तनाव जैसी गंभीर समस्याओं को भी ठीक करने में लाभकारी हैं। उन्होंने बताया कि वैश्विक महामारी कोरोना के दौर में अश्वगंधा का डिमांड मार्केट में काफी अधिक बढ़ गया है जिस वजह से इसका भाव किसानों को बेहतर मिल रहा हैं। अश्वगंधा खरीफ की एक पछेती फसल है। इसे उष्णकटिबंधीय और समशीतोष्ण जलवायु में उगाया जाता है। अश्वगंधा को खासकर शुष्क मौसम की आवश्यकता होती है। इसे बारिश के महीनों के अंतिम दिनों में बोया जाता है। उन्होंने बताया कि इसकी खेती के लिए बलुई, दोमट मिट्टी या हल्की लाल मिट्टी जिसका पीएच मान 7 से 8 हो काफी उपयुक्त माना जाता है। उन्होंने बताया कि किसान कम उपजाऊ भूमि में भी अश्वगंधा की खेती कर संतोषजनक उपज प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि अश्वगंधा के बुआई के लिए खासकर अगस्त का महीना काफी उत्तम माना जाता है।

अश्वगंधा के पौधे।

## किसान ऐसे करें अश्वगंधा की बुआई

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि किसान अश्वगंधा की बुआई से पूर्व अपने खेतों की अच्छी तरह से जुताई करवाकर उसमें से जंगल व झार को निकाल दें तथा खेत को बेहतर तरीके से साफ कर दें। नर्सरी के माध्यम से अश्वगंधा लगाने के लिए किसानों को प्रति हेक्टेयर 5 किलोग्राम बीज व छिड़काव पद्धति से अश्वगंधा बोने के लिए किसानों को प्रति हेक्टेयर 10 से 15 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि किसान बुआई से पूर्व अश्वगंधा के बीजों को नीम के पत्ते के बनाएं गए काढ़े अथवा डायथेन एम 45 दवा से उपचारित जरूर कर लें। किसान अश्वगंधा को कतार से कतार 20 से 25 सेंटीमीटर तथा पौधे से पौधों को 4 से 6 सेंटीमीटर की दूरी पर जरूर लगाएं। इसकी बुआई एक सेमी से अधिक गहरी नही होनी चाहिए।

## अश्वगंधा लगाए जाने वाले खेतों में किसान नहीं डालें रासायनिक खाद

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि किसान अश्वगंधा की बुआई से एक माह पूर्व प्रति हेक्टेयर की दर से खेतों में 5 ट्रॉली सड़ी हुई गोबर की अच्छी खाद या वर्मी कंपोस्ट मिला दें। इसके अलावे बुआई के समय किसान 15 किलोग्राम नत्रजन एवं 15 किग्रा फास्फोरस को घोलकर इसका छिड़काव खेतों में कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि अश्वगंधा की खेती के दौरान खेतों में किसी तरह का रासायनिक खाद नही डालना चाहिए। उन्होंने बताया कि किसान अश्वगंधा की प्रजाति डब्लू एस 20 जवाहर, डब्लूएसआर, पोषिता आदि की खेती कर बेहतर उत्पादन और लाभ दोनों प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि नियमित समय से वर्षा होने पर अश्वगंधा के फसल में सिंचाई की खास आवश्यकता नहीं पड़ती है। उन्होंने बताया कि अश्वगंधा के फसलों पर रोग व कीटों का भी कोई खास प्रभाव नहीं पड़ता हैं। यदा कदा फसल पर माहू कीट लग जाने से फसल झुलसा रोग के शिकार हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में किसान डायथेन एम 45 दवा की 3 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर बुआई के 30 दिन के अंदर छिड़काव कर बीमारी से निजात पा सकते हैं।

**Dainik Bhaskar 30-8-2025**

भास्कर 30/8/25 पेज 17

**पूर्वानुमान** • अधिकतम तापमान 32-34 डिग्री सेल्सियस, व न्यूनतम 26-28 डिग्री के बीच रह सकता है

# आज व कल कुछ जिलों में हल्की से मध्यम बारिश की संभावना

## इस अवधि में 12 से 15 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवा चलेगी

सिटी रिपोर्टर | समस्तीपुर

आसमान में हल्के से मध्यम बादल देखे जा सकते हैं। इस अवधी में समान्य से काम वर्षा होगी। 30-31 अगस्त को अनेक स्थानों पर विशेष रूप से तराई से क्षेत्र में हल्की से मध्यम वर्षा हो सकती है। मैदानी भागों में कहीं-कहीं हल्की वर्षा होगी। डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, मौसम विभाग के वैज्ञानिक के अनुसार इस अवधि में अधिकतम तापमान 32-34 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। न्यूनतम तापमान 26-28 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है। वहीं सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85-95 प्रतिशत के आसपास तथा दोपहर में 40-45 प्रतिशत रहने की संभावना है। वहीं पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 12 से 15 कि.मी. प्रति घंटा की रफ्तार से पूर्वा हवा चलने की संभावना है। सितम्बर अरहर की बुआई

आसमान में छायाए हल्के बादल।

के लिए खेत की तैयारी करे। अरहर की राजेन्द्र 1, पूसा 9 तथा शरद प्रभेद उत्तर बिहार के लिए अनुसंशित है। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलोग्राम नेत्रजन, 45 किलोग्राम स्फुर, 20 किलोग्राम पोटाष तथा 20 किलोग्राम सल्फर का व्यवहार करें। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्बर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए।

### धान की फसल में कीट का प्रकोप बढ़ा

धान की फसल में ब्राउन प्लांट होपर कीट की निगराणी करे। यह मच्छरनुमा कीट पौधा की पत्तियों एवं तने से रस चुसता है जिससे पत्तिया सुखी हुई तथा भुरे रंग की हो जाती है। प्रारंभ में यह एक स्थान में रहते है जो बाद में सारे खेत में फैल जाते हैं एवं कभी-कभी यह सारी फसल को नष्ट कर देती है। यदि प्रकोप दिखाई दें तो इमिडाक्लोरोप्रिड / 0.3 मी.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर आसमान साफ रहने पर छिडकाव करें। वर्षा के दिनों में तेज हवा चलने के कारण गन्ना गिरने की आशंका बनी रहती है। इससे बचाव के लिए गन्ना की बंधाई करनी चाहिए। इसके लिए एक पंक्ति की गन्ना को दूसरे पक्ति के तरफ झुकाते हुए पत्ती रस्सी विधि से गन्ने की बधाई करनी चाहिएण गन्ना बंधाई के लिए नीचली सूखी पत्तियों और कुछ हरी पत्तियों का इस्तेमाल करना चाहिए। इस विधि से गन्ना की बंधाई करने पर हथिया नक्षत्र की तेज हवा और बारिश के समय गन्ना गिरने से बच जाता है। साथ ही जल जमाव की समस्या होने पर अतिरिक्त जल निकासी की व्यवस्था करें।

# आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 3 सितंबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया है कि पूर्वानुमानित अवधि में आसमान में हल्के से मध्यम बादल छाए रह सकते हैं। इस अवधि में सामान्य से कम वर्षा होगी। तराई क्षेत्रों तथा कुछ मैदानी भागों में वर्षा हो सकती है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा . ए सत्तार का कहना है कि इस दौरान 12 से 15 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से पूरवा हवा चलेगी।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| **समस्तीपुर** | | |
| 30 अगस्त | 32.2 | 25.5 |
| 31 अगस्त | 32.2 | 26.0 |
| **दरभंगा** | | |
| 30 अगस्त | 32.2 | 26.0 |
| 31 अगस्त | 33.0 | 26.0 |
| **पटना** | | |
| 30 अगस्त | 34.5 | 27.0 |
| 31 अगस्त | 34.5 | 27.0 |

डिग्री सेल्सियस में

**Dainik Jagran 30-08-2025**

# पूसा में हो अवध असम और पवन एक्सप्रेस का ठहराव

■ **मंत्री ने केन्द्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव को पत्र प्रेषित किया है**

पूसा, निज संवाददाता। राज्य के सूचना एवं जनसंपर्क मंत्री महेश्वर हजारी ने समस्तीपुर मुजफ्फरपुर रेलखंड के खुदीराम बोस, पूसा स्टेशन पर अवध असम व पवन एक्सप्रेस के ठहराव एवं बरौनी हाजीपुर भाया समस्तीपुर के बीच तीन जोड़ी मेमु ट्रेनों का नियमित परिचालन की मांग की है। इस संदर्भ में मंत्री ने केन्द्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव को पत्र प्रेषित किया है।

इस रेलखंड को अति महत्वपूर्ण व व्यस्ततम बताते हुए जनहित में मांग को पूरा करने की अपील की है। खुदीराम बोस पूसा रेलवे स्टेशन से समस्तीपुर रेलवे स्टेशन की दूरी करीब 20 किमी एवं ढोली स्टेशन की दूरी लगभग 15 किमी है। पूसा स्टेशन से आसपास के 50 से अधिक गांव के लोगों को दैनिक कार्यों के लिए रेल मार्ग से ही यात्रा करनी पड़ती है। लेकिन इस पूसा स्टेशन पर ट्रेनों का ठहराव नहीं होने से कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। बता दें कि पूसा स्टेशन से 11 किमी. की दूरी पर डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि, व भारतीय कृषि अनुसंधान केन्द्र, पूसा, करीब 8 किमी पर बोरोलॉग इन्स्टीच्यूट फॉर साउथ एशिया ( बीसा ) के अलावा पीएमश्री जवाहर नवोदय विद्यालय, बिरौली, समस्तीपुर, केन्द्रीय विद्यालय, राज्य का एकलौता सहकारिता प्रशिक्षण केन्द्र, समेत करीब दर्जन भर संस्थान अवस्थित है।

Hindustan 30-8-2025

# आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 3 सितंबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया है कि पूर्वानुमानित अवधि में आसमान में हल्के से मध्यम बादल छाए रह सकते हैं। इस अवधि में सामान्य से कम वर्षा होगी। तराई क्षेत्रों तथा कुछ मैदानी भागों में वर्षा हो सकती है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस दौरान 12 से 15 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से पूरवा हवा चलेगी।

| पूर्वानुमान | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| **समस्तीपुर** | | |
| 31 अगस्त | 32.2 | 25.5 |
| 01 सितंबर | 32.2 | 26.0 |
| **दरभंगा** | | |
| 31 अगस्त | 32.2 | 26.0 |
| 01 सितंबर | 33.0 | 26.0 |
| **पटना** | | |
| 31 अगस्त | 34.5 | 27.0 |
| 01 सितंबर | 33.0 | 26.0 |

डिग्री सेल्सियस में

DAinik Jagran 31-08-25